# KOṄKAṆĪ VYĀKARAṆ

# कोंकणी व्याकरण

Prof. R.K. RAO



Publishers
Konkani Language Institute
Kochi - 682025, Kerala

# कोंकणी व्याकरण

लेखकः

पोफ़ॅसर आर. के. राव, एम. ए.



कोंकणी भाषा संस्थान

कोचीन- 682025

*Konkani Language Institute Book Series, No.3*

**KONKANI VYAKARAN**
[Kokani Grammar]

Author: **Professor R.K. RAO**, M.A.

First Edition, December, 1977
Reprint-2000

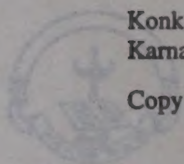
Printed at:

Hindi Prachar Press,
Ernakulam, Cochin- 682 016.

Price: Rs.40/-

Publishers:

Konkani Language Institute,
Karnakodam, Cochin-682 025.



"निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल ।
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को शूल ।।"

—भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

## आभार

हिन्दी भाषा भाषियों के सामने 'कोंकणी व्याकरण' प्रस्तुत करते हुए मुझे बडी खुशी हो रही है। कोंकणी भाषा का व्याकरण हिन्दी में समझाने का, मैं ने इस पुस्तक में हार्दिक प्रयत्न किया है। आशा है कि भाष-ाप्रेमी इसे पढकर कोंकणी का शुद्ध रूप जान पाएँगे।

इसकी पाण्डुलिपि पढकर अपने बहुमूल्य 'स्वागत' से प्रस्तुत व्याकरण को शोभान्वित करनेवाले महाकवि बाकीबाब बोरकार को मैं हृदय से आभार प्रकट करता हूँ। उनकी इच्छानुसार इस प्राचीनतम आर्यभाषा का साहित्य दिन दूनी रात चौगुनी बढे और 'कोंकणी व्याकरण' इसमें उचित योगदान भी दे—यही मेरी इच्छा है।

यदि पुस्तक में किसी तरह की त्रुटियाँ आ गयी हों, तो भाषा विद्वानों से तत्संबन्धी सुझाव का स्वागत होगा।

—लेखक

## काशकों की ओर से

कोंकणी प्रेमियों के सामने 'कोंकणी व्याकरण' प्रस्तुत करते हुए हमें बड़ी प्रसन्नता हो रही है। यह पुस्तक कोंकणी भाषा संस्थान का तीसरा पुष्प है।

इस पुस्तक के अध्ययन से, जिसका माध्यम राष्ट्रभाषा हिन्दी है, कोंकणी भाषा का व्याकरण पूर्ण रूप से समझने में सहायता मिलती है।

कोंकणी भाषा प्रेमी को, जो कोंकणी पढना-लिखना सीखना चाहे, व्याकरण की यह पुस्तक अवश्य पढनी चाहिये।

# स्वागत

हांवें एक भुरग्यांचें व्याकर्ण बरैलां खरें, पुण हांव काय व्याकर्णकार न्हय. आज मेरेन आमचे कोंकणी भाशेचीं देशी विदेशी विद्वांसांनी बरैल्लीं वीसां वैर व्याकर्णां आसात. आमचे कोंकणीचे वायट दीस सोंपून तिजें उदरगतीचें नवें पर्व सुरू जालां. आमची ही भास संसारांतली एक अति मोवाळ, म्होवाळ आनी छांदस भास. अशी संसारांतल्या आनी देशांतल्या व्हडां व्हडां साहित्यकरांनी तिजी तोखणाय केल्या आनी भायल्या देशांतलीं विद्यापीठां पासून तिजो खोलायेन अभ्यास करूंक लागल्यांत. देशांतले अन्य भाषिक लोकय ती उर्बेन शिकूंक सोदतात. अशे बेळार म्हाजे इष्ट श्री रघुनाथ राव हांच्या हिंदीनल्यान कोंकणी भास शिकौपाच्या व्याकर्णाचीं मुद्रितां म्हज्या हातांत आयलीं. हें असलें व्याकर्ण म्हाका दिसता आज वेरच्या कोंकणी व्याकर्णनलें भोव अपूर्व व्याकर्ण, आनी आजचे घडये चड गरजेचें. तांच्या व्याकर्णाक लागून केरळांतल्या आमच्या भाशेचें रूपय म्हाका शिकूंक मेळ्ळें, हें रूप कोंकणीचें ख्रूब पूर्वेलें रूप. ताजो अभ्यास हो कोंकणीच्या विकासाक ख्रूब उपेगाचो – ह्या दोनीय दृष्टीनीं ह्या व्याकरणाचें स्वागत करचें तितलें थोडें. आमची भास शिकूंक सोदपी आमचे देशभर पातळिल्ये अन्य भासांचे भाव ह्या व्याकर्णाचो हावेसान लाव घेतले अशी हांव उमेद बाळगतां.

बेतीं अल्त – गोंय,
27–11–1977.

बाकीबाव बोरकार

# स्वागत

(हिन्दी अनुवाद)

मैं ने बच्चों का एक व्याकरण लिखा तो है, परन्तु मैं कोई व्याकरणकार नहीं। अब तक हमारी कोंकणी भाषा पर देशी-विदेशी विद्वानों के लिखे बीस से अधिक व्याकरण ग्रन्थ प्राप्त हैं। हमारी कोंकणी के दुर्दिन समाप्त होके उसके पुनरुत्थान का नया पर्व शुरू हुआ है। संसार के और भारत के बड़े बड़े साहित्यकारों ने उसकी प्रशंसा की है कि हमारी यह भाषा विश्व की भाषाओं में एक अतिकोमल, मधुर एवं छन्दोमयी भाषा है और इधर विदेश के विद्यापीठ उसके गहरे अनुसन्धान और अध्ययन में लगे हुए हैं। देश के अन्य भाषा-भाषी उसे मन लगाकर सीखने का प्रयास कर रहे हैं। ऐसे समय मेरे मित्र श्री रघुनाथ राव के हिन्दी के माध्यम से कोंकणी भाषा समझाने के व्याकरण ग्रन्थ की 'प्रूफ़ कोपी' मेरे हाथ आयीं है, जो आज की एक बहुत बड़ी मांग की पूर्ति करती है। उनके व्याकरण के हेतु केरल की हमारी भाषा का रूप भी मुझे सीखने को मिला, जो कोंकणी का अतिप्राचीन रूप है और जिसका अभ्यास कोंकणी के विकास के लिये अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगा। इन दोनों दृष्टिकोणों से इस व्याकरण का जितना भी स्वागत किया जाय, कम होगा। मैं उम्मीद रखता हूँ कि हमारी भाषा सीखने के उत्सुक देश भर फैले हुए अन्य भाषा-भाषी भाई इस व्याकरण का पूरा लाभ उठायेंगे।

बेतीं अल्त – गोंय,
27–11–1977.

बाकीबाव बोरकार

# विषय-सूची

पाठ 1

# वाक्य रचना

| | | |
|---|---|---|
| 1. | गणेश कोंकणी बरयता. | गणेश कोंकणी लिखता है। |
| 2. | मोहन पुस्तक वाचता. | मोहन पुस्तक पढता है। |
| 3. | तूं काम कर. | तुम काम करो। |
| 4. | तो भात लुयता. | वह धान काटता है। |
| 5. | आमी चाय पितात. | हम चाय पीते हैं। |
| 6. | मोहनान रामाक मारलो. | मोहन ने राम को मारा। |
| 7. | राम रोण्टी खाता. | राम चपाती खाता है। |
| 8. | ती हिन्दी शिकता. | वह हिन्दी सीखती है। |
| 9. | तुमी हें काम करात (करा). | आप यह काम कीजिये। |
| 10. | आमी कोंकणी उलैतात (उलयतात). | हम कोंकणी बोलते हैं। |

पूर्णार्थ बोधक शब्द या शब्द समूह को वाक्य कहते हैं। कोंकणी की वाक्य रचना अन्य आधुनिक भारतीय भाषाओं की वाक्य रचना के समान है। वाक्य में कर्ता, कर्म, क्रिया—ये तीन भाग होते हैं।

| कर्ता | कर्म | क्रिया |
|---|---|---|
| गणेश | कोंकणी | बरयता |
| मोहन | पुस्तक | वाचता |
| तूं | काम | कर |
| तो | भात | लुयता |

| | | |
|---|---|---|
| आमी | चाय | पितात |
| मोहनान | रामाक | मारलो |
| राम | रोण्टी | खाता |
| ती | हिन्दी | शिकता |
| तुमी | हें काम | करात |
| आमी | कोंकणी | उलयतात |

कोंकणी में साधारण निषेधार्थ सूचक शब्द 'ना' होता है। मगर वस्तु या व्यक्ति के निषेधार्थ में 'न्हंय' का प्रयोग होता है।

उदा :— तें पुस्तक न्हंय. — वह किताब नहीं।
तें पुस्तक हांगा ना. — वह पुस्तक यहाँ नहीं।

प्रश्नवाचक शब्द के अभाव में वाक्य के अन्त में *'वे' या 'व्हय' जोडकर या वाक्य के उच्चारण पर जोर देकर प्रश्नार्थ सूचित किया जाता है।

उदा :— राम थांगा आसावे (आसा व्हय) ? — क्या, राम वहाँ है ?
राम थांगा आसा ? — क्या, राम वहाँ है ?

कोंकणी में अपूर्ण अकर्मक क्रिया 'त' (है) का प्रयोग नहीं होता। लेकिन अस्तित्व बोधक 'है' के स्थान पर 'आसा' (there is) का प्रयोग होता है।

उदा :— तें पुस्तक (त). — वह पुस्तक है।
तें पुस्तक मेज़ार आसा. — वह पुस्तक मेज़ पर है।

अ) <u>उपयुक्त शब्दों से रिक्त स्थानों को भरिये :–</u>

1. सीता — वाचता.
2. तूं हें काम — .

---

*होय –> व्हय –> व्हे –> वे

3. — रोण्टी खातात.
4. — थांगा — करता ?
5. राम आमकां दूद — .
6. तुमी हें काम — .
7. — तें काम करनाका.
8. हांव चीटि — .
9. गोपाळ — पिता.
10. शारद — शिकता.

आ) कोंकणी में अनुवाद कीजिये :–

1. तुम वहाँ क्या करते हो ?
2. मैं कोंकणी सीखता हूँ ।
3. क्या, किताब मेज़ पर है ?
5. क्या, वह कलम है ?
6. हाँ, वह कलम है ।
7. नहीं, वह कलम नहीं है; वह पेनसिल है ।
8. कलम में क्या है ?
9. कलम में स्याही है ।
10. शारदा कलम से चिट्ठी लिखती है ।

---

## पाठ 2

# आज्ञार्थ

| | तूं – तू, तुम | तुमी – आप |
|---|---|---|
| 1. | यो – आ, आओ | येया, येयात – आइये |
| 2. | वच – जा, जाओ | वचा, वचात – जाइये |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 3. | बैस | – बैठ, बैठो | बैसा, बैसात | – बैठिये |
| 4. | खा | – खा, खाओ | खाया, खायात | – खाइये |
| 5. | धूय | – धो, धोओ | धूया, धूयात | – धोइये |
| 6. | उलय | – बोल, बोलो | उलया, उलयात | – बोलिये |
| 7. | करनाका | – मत कर, मत करो | करनाकात | – न कीजि |
| 8. | पीवनाका | – मत पी, मत पीओ | पीवनाकात | – न पीजि |
| 9. | घेवनाका | – मत ले, मत लो | घेवनाकात | – न लीजि |
| 10. | हाडनाका, हाणाका | – मत ला, मत लाओ | हाडनाकात, हाणाकात | – न लाइये |

कोंकणी में मध्यम पुरुप पुरुषवाचक सर्वनाम के दो ही रूप हैं– तूं (तू, तुम) और तुमी (आप)। इसलिये आज्ञार्थ के दो ही रूप हैं क्रिया का धातु रूप आज्ञार्थ का एकवचन रूप है। वहुवचन या आदर सूचक रूप बनाने के लिये धातु के साथ 'आत' (आ), यात (या) जो दिया जाता है।

आज्ञार्थ रूप में निषेध लाने के लिये धातु के साथ एकवचन मे 'नाका' और बहुवचन में 'नाकात' का प्रयोग किया जाता है।

अ) उपयुक्त क्रिया के आज्ञार्थ रूप का प्रयोग करके रिक्त स्थानों को भरिये :–

1. तूं उदक — .
2. तुमी हांगा — .
3. तुमी चाय — .
4. तूं हें काम — .
5. तुमी कोंकणी — .

6. तूं आज थांगा — .
7. तुमी हें पुस्तक — .
8. तूं ल्हव — .
9. थांगा — आनी तें कदेल हांगा — .
10. — आनी ताका हांगा — .

अ) कोंकणी में अनुवाद कीजिये :–

1. इधर आ ।
2. उधर जाओ ।
3. यह पानी न पीजिये ।
4. वह कलम राम को दीजिये ।
5. यह पुस्तक लीजिये ।
6. कुरसी पर वैठो; मेज़ पर मत बैठो ।
7. कलम से लिखिये; पेनसिल से न लिखिये ।
8. हमेशा धीरे धीरे काम करो ।
9. आज वहाँ न जाइये ।
10. यह कुरसी वहाँ ले जाओ और वह मेज़ यहाँ ले आओ ।

---

## पाठ 3

# वर्तमान काल

| | |
|---|---|
| 1. हांव कोंकणी उलयतां. | मैं कोंकणी बोलता हूँ । |
| 2. आमी कोंकणी भास उलयतात. | हम कोंकणी भाषा बोलते हैं । |
| 3. तूं हें काम करता. | तुम यह काम करते हो । |
| 4. तुमी हें काम करतात. | आप यह काम करते हैं । |

| | | |
|---|---|---|
| 5. | तो पुस्तक वाचता. | वह पुस्तक पढ़ता है। |
| 6. | ते पुस्तक वाचतात. | वे पुस्तक पढते हैं। |
| 7. | ती पुस्तक वाचता. | वह पुस्तक पढती है। |
| 8. | त्यो पुस्तक वाचतात. | वे पुस्तक पढती हैं। |
| 9. | तें चेरडूं रडता. | वह बच्चा रोता है। |
| 10. | ती चेरडूवां रडतात. | वे बच्चे रोते हैं। |

क्रिया के धातु के साथ एकवचन में 'ता' और बहुवचन में 'तात' जोडकर वर्तमानकाल रूप बनाया जाता है। उत्तम पुरुष एकवचन में धातु के साथ 'तां' जोड दिया जाता है। लिंग के कारण क्रिया का रूपान्तर नहीं होता।

वर्तमानकाल में निषेधार्थ सूचित करने केलिये 'ता' और 'तां' के स्थान पर 'ना' का प्रयोग होता है।

उदा :– हांव उलयना. – मैं नहीं बोलता।
राम चपाती खायना – राम चपाती नहीं खाता।
ते हांगा येनात. – वे यहाँ नहीं आते।

*अपूर्ण वर्तमानकाल सूचित करने के लिये कोंकणी में वर्तमानकाल का ही प्रयोग होता है।

उदा :– तो काम करता. – वह काम कर रहा है।
राम उदक पिता. – राम पानी पी रहा है।

अ) उपयुक्त क्रियाओं के वर्तमानकाल रूप से रिक्त स्थानों को भरिये :–

1) हांव हिन्दी — .
2) तुमी थांगा कितें — ?

---

*वर्तमानकाल रूप के साथ अपूर्ण अकर्मक क्रिया 'तं' (तां) का प्रयोग करके यह कालरूप बनाने की प्रवृत्ति चलती है।

करता तं – कर रहा है।

3) तो हें पुस्तक — .
4) ती पेनान चीटि — .
5) ते कोंकणी — .
6) आवय चेरडाक — .
7) चेरडूवां रोण्टी — .
8) आमी कोंकणी कित्याक — ?
9) आमी हें काम — .
10) चेले स्कूळांत — .

आ) कोंकणी में अनुवाद कीजिये :–

1) तुम वहाँ क्या करते हो ?
2) हम वहाँ कोंकणी सीखते हैं ।
3) क्या, आज तुम वहाँ जाते हो ?
4) कमला चिट्ठी लिखती है ।
5) वे गरम चाय पीती हैं ।
6) तुम आज सिनेमा क्यों नहीं जाती ?
7) आप कोंकणी क्यों नहीं बोलते ?
8) हम खाना खाते हैं ।
9) लड़की अब मैदान में खेल रही है ।
10) वे दूकान से केले ला रहे हैं ।

---

पाठ 4

# निश्चित् भविष्यत् काल

| | | |
|---|---|---|
| 1. | हांव फाय मद्रासाक वतलों. | मैं कल मद्रास जाऊँगा । |
| 2. | आमी सांजे खेळतले. | हम शाम को खेलेंगे । |
| 3. | तूं कोंकणी केन्ना (केदना) शिकतलो ? | तुम कोंकणी कब सीखोगे ? |

| | | |
|---|---|---|
| 4. | तुमी हांगा केन्ना (केदना) येतले ? | आप यहां कब आयेंगे ? |
| 5. | ताणें हें काम करचीना. | वह यह काम नहीं करेगा । |
| 6. | ती हिन्दी वाचतली. | वह हिन्दी पढेगी । |
| 7. | तें चेरडूं दूद पितलें. | वह बच्चा दूध पीयेगा । |
| 8. | ते थांगा खंय रावतले ? | वे वहाँ कहाँ रहेंगे ? |
| 9. | त्यो गींत म्हणतल्यो. | वे गीत गायेंगी । |
| 10. | तीं उदक पितलीं. | वे पानी पीयेंगे । |

कोंकणी में भविष्यत्काल के दो रूप हैं—निश्चित् भविष्यत्काल और अनिश्चित् भविष्यत्काल । यहाँ अब निश्चित् भविष्यत्काल पर विचार होगा ।

धातु के साथ 'त' प्रत्यय जोडकर कोंकणी में वर्तमानकालिक कृदन्त बनाया जाता हैं। इस कृदन्त के साथ पुल्लिग एकवचन में 'लो' और बहुवचन में 'ले' जोडकर निश्चित् भविष्यत्काल रूप बनाया जाता है । उत्तम पुरुष पुल्लिग एकवचन में 'लों'; स्त्रीलिंग एकवचन में 'ली' और बहुवचन में 'ल्यो'; उत्तम पुरुष स्त्रीलिंग में 'ली' जोड दिया जाता है । नपुंसकलिंग एकवचन में 'लें' और बहुवचन में 'लीं' जोडकर निश्चित् भविष्यत्काल रूप बनाया जाता है ।

अ) उपयुक्त क्रिया के निश्चित् भविष्यत्काल रूप से रिक्त स्थानों को भरिये :–

1) हांव फाय स्कूळांत — .

2) तुमी गोयां थाकून केन्ना — .

---

सूचना : लों, लीं, लें—इन प्रत्ययों का उच्चारण क्रमशः नों, नीं, नें हो जाता है । जैसे—करतनों, करतनीं, करतनें ।

3. तुमी हें पुस्तक केन्ना — ?
4. तो आज सांजे चाय — .
5. पार्वति गीत — .
6. आमी हून चाय — .
7. ते फाय थाकून कोंकणी — .
8. तो पुस्तक — .
9. राम आतां भायर —.
10. ती आज ताका एक चीटि — .

आ) कोंकणी में अनुवाद कीजिये :–

1. तुम कब गोआ जाओगे ?
2. वे वहाँ क्या काम करेंगे ?
3. हम कल शामको सिनमा जायँगे ।
4. वह बाज़ार से सामान लायेगा ।
5. क्या, वह आदमी शराब पियेगा ?
6. गोविन्द जीं आज से कोंकणी में बोलेंगे ।
7. क्या, तुम कल सबेरे वहाँ जाओगे ?
8. मैं तुमको जल्दी कोंकणी सिखावूँगा ।
9. शारदा की बहन अच्छी तरह गायेगी ।
10. कमला आज शामको एक चिट्ठी लिखेगी ।

---

## पाठ 5

# अनिश्चित् भविष्यत् काल

| | | |
|---|---|---|
| 1. | हांव फाय मद्रासाक वचन. | मैं कल मद्रास जाऊँगा । |
| 2. | आमी तुका पांच रुपया दोवूं | हम तुमको पाँच रुपया देंगे । |
| 3. | तूं हें आयदन धूशीवे ? | क्या, तुम यह बरतन धोओगे ? |

| | | |
|---|---|---|
| 4. | तुमी तें काम करशातवे? | क्या, आप वह काम करेंगे? |
| 5. | तो हें पुस्तक तुका दीत. | वह यह पुस्तक तुमको देगा। |
| 6. | ते आतां घर कडे आसतीत. | वे अब घर पर होंगे। |
| 7. | ताणें भायर वचीना. | वह बाहर नहीं जायगा। |
| 8. | रामान हें दूद पिवंचीना. | राम यह दूध नहीं पीयेगा। |
| 9. | त णें आज रुपया दिवना. | वह आज रुपया नहीं देगा। |
| 10. | हांवें राय जावना. | मैं राजा नहीं बनूंगा। |

धातु के साथ उत्तम पुरुष एकवचन में 'ईन', बहुवचन में 'ऊं', मध्यम पुरुष एकवचन में 'शी', बहुवचन में 'शात' और अन्य गुरुष एकवचन में 'ईत' और बहुवचन में 'तीत' प्रत्यय लगाकर अनिश्चित भविष्यत्काल बनाया जाता है। इसके समान हिन्दी में क्रिया रूप नहीं है। क्रिया रूप में लिंग भेद नहीं होता।

इन दोनों प्रकार के भविष्यत्काल का निपेधार्थ रूप एक ही है।

| उदा :- | | |
|---|---|---|
| करचीना | (करना) | नही करेगा |
| जावंचीना | (जावना) | नहीं होंगा |
| येवंचीना | (येवना) | नहीं आयेगा |
| हाडचीना | (हाडना, हाण्णा) | नही लायेगा |

इस निषेधार्थ क्रिया के कर्ता के साथ एक वचन में 'न' और बहुवचन में 'नी' प्रत्यय जोड दिया जाता है। यहाँ ये प्रत्यय निरर्थक हैं।

अ) उपयुक्त क्रिया के अनिश्चित भविष्यत्काल रूप से रिक्त स्थानों को भरिये :-

1) हांव तें काम फाय — .
2) आमी आज थांगा — .
3) तूं हें पुस्तक — .
4) हांव आज सांजे स्कूळांत — .

5. तो हिन्दी — .
6. तूं कोंकणी भासेन — ?
7. तूं हें दूद — ?
8. तूं हें गिळास — ?
9. तो आज रात हांगा — ?
10. राम ताका पांच रुपया — .

आ) कोंकणी में अनुवाद कीजिये :–

1. मै यह काम न करूँगा ।
2. वह यह किताब न पढेगा ।
3. राम यह पाठ कब सीखेगा ?
4. धोबी यह कपडा अच्छी तरह धोयेगा ।
5. हम बरतन खरीदेंगे ।
6. मैं राम से वह कलम लूँगा ।
7. वे घर पर होंगे ।
8. मैं तुम को दूध पिलाऊँगा ।
9. क्या, तुम मुझे भात खिलाओगी ?
10. हम तुम को रुपया न देंगे ।

---

## पाठ 6

# सामान्य भूतकाल

| | | |
|---|---|---|
| 1. | काल हांगा एक मनीश आयलो. | कल यहाँ एक आदमी आया । |
| 2. | तो कदलार बैसलो. | वह कुरसी पर बैठा । |
| 3. | पयरि तीं घरकडे गेलीं. | परसों वे घर गये । |

| | | |
|---|---|---|
| 4. | हांव त्या वेळार थंय नासलों. | मैं उस समय वहाँ नहीं था। |
| 5. | तो सम्मेळनांत कोंकणी भासेन उलयलो. | वह सभा में कोंकणी भाषा में बोला। |
| 6. | आमी हिन्दीन उलयले. | हम हिन्दी में बोले। |
| 7. | ते एक चीट घेवनु गेले. | वे एक चिट्ठी ले गये। |
| 8. | रामाली भयणि काल मद्रासाक गेली. | राम की बहन कल मद्रास गयी। |
| 9. | सीता आज खंय गेली ? | सीता आज कहाँ गयी ? |
| 10. | हांव राति धारार निदेलों. | मैं रातको जल्दी सोया। |

धातु से 'ल' जोडकर भूतकालिक कृदन्त रूप बनाया जाता है। भूतकालिक कृदन्त से कर्ता के पुरुष, लिंग और वचन के प्रत्यय जोडकर सामान्य भूतकाल बनाया जाता है। निम्न-लिखित धातुओं के भूतकालिक कृदन्त रूपों को याद रखना चाहिये।

| धातु | भूतकालिक कृदन्त |
|---|---|
| कर | केल |
| मर | मेल |
| वच | गेल |
| यो | आयल |
| घे | घेतल |
| म्हण | म्हळ |

सामान्य भूतकाल में निषेधार्थ सूचित करने के लिये क्रिया के साथ एकवचन में 'ना' और बहुवचन में 'नात' जोड दिया जाता है। लेकिन 'आस' धातु का निषेधार्थ रूप बनाने के लिये क्रिया के आदि में ही प्रत्यय प्रयुक्त किये जाते हैं।

दा :- हांव उलयलोंना. – मैं नहीं बोला ।
आमी उलयलेनात. - हम नहीं बोले ।
तो थंय नासलो. – वह वहाँ नहीं था ।
ते थांगा नासले. – वे वहाँ नहीं थे ।
ती हांगा नासली. – वह यहाँ नहीं थी ।
त्यो थांगा नासल्यो. – वे वहाँ नहीं थीं ।

अ) उपयुक्त क्रिया के सामान्य भूतकाल रूपों से रिक्त स्थानों को भरिये :-

1. तूं काल हांगा कित्याक — ?
2. तागेली चेली पयरि हांगा — .
3. तागेलो चेलो आज खंय — .
4. ते क्लासांत हिन्दीन — .
5. आमी मद्रासाक एक होटलांत — .
6. तुमी थांगा केन्ना — ?
7. ते काल सकाळि केन्ना स्कूळांत — ?
8. तो राति आट वरार — .
9. सीता कदलार — .
10. राम सकाळि सं वरार — .

अ) कोंकणी में अनुवाद कीजिये :-

1. वे कल यहाँ कब आये ?
2. तुम यहाँ कब पहुँचे ?
3. वे बहुत बोले ।
4. हम कलकत्ते में एक होटल में ठहरे ।
5. हम कल शाम को सिनेमा देखने गये ।
6. वे यहाँ से बंबई को रवाना हुए ।

7. सीता कहाँ गयी ?
8. मैं आज सबेरे पाँच बजे उठी ।
9. हम वह बात भूल गये ।
10. राम यहाँ से कुरसी ले गया ।

---

## पाठ 7

# सामान्य भूतकाल (सकर्मक)

| | | |
|---|---|---|
| 1. | रामान रावणाक मारलो. | रामने रावण को मारा । |
| 2. | सीतेन एक बरप बरयलें. | सीता ने एक पत्र लिखा । |
| 3. | गणेशानि कितें सांगलें ? | गणेश ने क्या कहा ? |
| 4. | कमळान एक आंबो खालो (खेल्लो). | कमला ने एक आम खाया । |
| 5. | तिणें दोन आंबे खाले (खेल्ले). | उसने दो आम खाये । |
| 6. | गोविन्दान एक रोण्टी खाली (खेल्लो). | गोविन्द ने एक चपात्ती खायी |
| 7. | जोसफ़ान पुस्तक वाचलें. | जोसफ़ ने पुस्तक पढ़ी । |
| 8. | रामान तांकां उळदीले. | रामने उनको बुलाया । |
| 9. | हांवें गायक देकलो. | मैं ने गाय को देखा । |
| 10. | तुवें चीटि बरयलीवे ? | क्या, तुमने चिट्ठी लिखी ? |

<u>भूतकाल में सकर्मक्रिया का प्रयोग</u>

जब सकर्मक क्रिया भूतकाल में प्रयुक्त होती है तब कर्ता के सा
एकवचन में 'न' और बहुवचन में 'नी' प्रत्यय का प्रयोग होता है।
करण-कारक के चिह्न हैं, लेकिन यहाँ निरर्थक है ।

दा :– रामान सांगलें. – राम ने कहा ।
जनानी सांगलें. – लोगों ने कहा ।

लिंग, वचन, पुरुष में क्रिया कर्म से अन्वित होती है ।

दा :– रामान चीट बरयली. – रामने चिट्ठी लिखी ।
सीतेन दोन आंबे खाले (खेल्ले). – सीता ने दो आम खाये ।

लेकिन कर्म लुप्त हो तो क्रिया अन्य पुरुष, नपुंसकलिंग, एकवचन में रहती है ।

दा :- सीतेन खालें (खेल्लें). – सीता ने खाया ।
रामान वाचलें. – राम ने पढा ।

सकर्मक क्रिया का भूतकाल में प्रयोग हिन्दी की सकर्मक क्रिया (भूतकाल) के प्रयोग के समान है ।

निम्नलिखित क्रियाएँ अपवाद हैं । इनका प्रयोग किसी दूसरी अकर्मक क्रिया के समान होता है ।

जेवलो, खेळ्ळो, पिल्लो, ओंकलो, विसरलो, झुजलो, न्हेसलो, शिकलो आनी चोयलो.

अ) उपयुक्त सकर्मक क्रिया के सामान्य भूतकाल रूप से खाली स्थानों को भरिये :-

1. कृष्णान केळीं — .
2. राम शीत — .
3. हांवें काल ताका — .
4. मास्टरान तागेलें पुस्तक माका — .
5. तुवें पयरि काम — ?
6. तांणी चार फळां — .
7. आवयन रोण्टी — .
8. तांणी रोण्टीयो — .

9. आवसून चेरडाक दूद — .
10. आमी चेरडाक — .

आ) कोंकणी में अनुवाद कीजिये :–

1. मैं ने दो आम खाये ।
2. राधा बाज़ार से दो अण्डे लायी ।
3. राम ने सीता को कल एक पत्र लिखा ।
4. उन्होंने भाई को बुलाया ।
5. उसने रमणी का गीत नहीं सुना ।
6. तुम ने उनको कब देखा ?
7. जार्ज ने एक प्याला गरम दूध पिया ।
8. जोसफ़ने राम से कुछ नहीं कहा ।
9. तुम ने कल क्या काम किया ?
10. उसने मेरी कलम चुरायी ।

---

## पाठ 8

# आसन्न भूतकाल

| | | |
|---|---|---|
| 1. | राम आयला. | राम आया है । |
| 2. | ते आयल्यात. | वे आये हैं । |
| 3. | हांव आयलां. | मैं आया हूँ । |
| 4. | आमी आयल्यात. | हम आये हैं । |
| 5. | तूं आयला. | तुम आये हो । |
| 6. | तुमी खंय थाकून आयल्यात. | आप कहाँ से आये हैं ? |
| 7. | ती मद्रासा थाकून आयल्या. | वह मद्रास से आयी है । |

| | |
|---|---|
| 8. त्यो आयल्यात. | वे आयी हैं। |
| 9. तें चेडूं आयलां. | वह लड़की आयी है। |
| 10. तीं चेडूवां आयल्यांत. | वे लड़कियाँ आयी है। |

भूनकालिक कृदन्त के साथ पुल्लिग एकवचन में 'आ' और बहुवचन में 'आत'; स्त्रीलिंग एकवचन में 'या' और बहुवचन में 'यात'; नपुंसकलिंग एकवचन में 'आं' और बहुवचन में 'यांत' जोडकर आसन्न भूतकाल रूप बनाया जाता है। पुल्लिग प्रथम पुरुष एकवचन में 'आ' के बदले 'आं'; बहुवचन में 'आत' के बदले 'आंत' और स्त्रीलिंग प्रथम पुरुष एकवचन में 'या' के बदले 'यां' और बहुवचन में 'यात' के बदले 'यांत' जोडकर यह क्रिया रूप बनाया जाता है।

जैसे सामान्य भूतकाल क्रिया का निषेधार्थ रूप बनाया जाता है वैसे इस काल का भी निषेधार्थ रूप बनाया जाता है।

अ) उपयुक्त क्रिया के आसन्न भूतकाल रूप से रिक्त स्थानों को भरिये :–

1. हांवें रोण्टी — .
2. ताणें माका एक काणी — .
3. रामान एक बरप — .
4. तो मद्रासा थाकून — .
5. ते सान्तांत — .
6. ताणें (आंगडीं) दूकानां थाकून दोन आम्बे — .
7. सीतेन माका एक चीट — .
8. तांणी एक गींत — .
9. तो कदेलार — .
10. हांव आतांच स्कूळां थाकून — .

आ) कोंकणी में अनुवाद कीजिये :–

1. हमने कोंकणी सीखी है।
2. उन्होंने यह बात सुनी है।

3. मैं वहाँ गयी हूँ ।
4. वे कल यहाँ नहीं पहुँचे हैं ।
5. गोपाल ने राम को एक पत्र लिखा है ।
6. क्या, तुमने गोआ देखा है?
7. वे मेरे यहाँ रहे हैं ।
8. वे मेरी किताब अब तक नहीं लाये हैं ।
9. उसने आज मुझे अपने घर बुलाया है ।
10. माँ ने बच्चे को सुलाया है ।

---

## पाठ 9

# पूर्ण भूतकाल

| | |
|---|---|
| 1. हांव काल थांगा गेल्ललों (गेल्लोलों). | मैं कल वहाँ गया था । |
| 2. तो हांगा आयल्ललोवे (आयल्लोलोवें) ? | क्या, वह यहाँ आया था ? |
| 3. सीता केन्ना उलयल्ललो (उलयल्लेली) ? | सीता कब बोली थी ? |
| 4. तो कालहांगा आयल्ललोना (आयल्लोलना). | वह कल यहाँ आया नहीं था |
| 5. रामान पयरि इतें केल्लेलें ? | राम ने परसों क्या किया था । |
| 6. गोविन्दान हांगा एक बरप हाळ्ळेले (हाडलेलें). | गोविन्द यहाँ एक पत्र लाया था |

| | | |
|---|---|---|
| 7. | ती बायल काल सकाळिं हांगा इत्याक आयल्लेली ? | वह स्त्री कल सबेरे यहाँ किसलिये आयी थी ? |
| 8. | हांवें तांन्ने लागि एक कायरीं सांगल्लन्ना (सांगल्लेलीं). | मैं ने उनसे एक बात कही थी । |
| 9. | जोसफ़ान माका एक बरप बरयल्लेलें. | जोसफ़ ने मुझे एक चिट्ठी लिखी थी । |
| 10. | शारदान मेजार एक बूक दवरल्ललो (दवरल्लोलो). | शारदाने मेज़ पर एक किताब रखी थी । |

क्रिया के भूतकालिक कृदन्त से और एक 'ल' जोडकर उससे परे कर्ता के पुरुष, लिंग और वचन के प्रत्यय लगाकर क्रिया का पूर्ण भूतकाल रूप बनाया जाता है। ये दोनों 'ल' संयुक्ताक्षर के रूप में भी लिखे जाते हैं।

उदा :– उलयललो — उलयलोलो — उलयल्लो. – बोला था ।
सागललें — सागलेलें — सांगल्लें — सांगिल्लें.– कहा था ।

जैसे सामान्य भूतकाल क्रिया के निषेधार्थ रूप बनाये जाते हैं, वैसे इस काल के भी निषेधार्थ रूप बनाये जाते हैं।

उदा :– राम उलयल्लोना. – राम नहीं बोला था ।
सीता उलयल्लेलीना. – सीता नही बोली थी ।
ते उलयल्लेनात. – वे नहीं बोले थे ।

अ) <u>उपयुक्त क्रिया के पूर्ण भूतकाल रूप से रिक्त स्थानों को भरिये :–</u>

1. काल तुवें ताका — ?
2. ताणें तुका पयरि एक चीट — .
3. तुवें ही काणी खंथंय — ?
4. रामान हिन्दी — .
5. काल हांगा दोग दादले — .

6. तूं मद्रासाक कित्याक — ?
7. तो त्या कदेलार — .
8. ताणें काल दोन पुस्तकां — .
9. आमी तांकां कोंकणी — .
10. तांणी चार फळां — .

आ) कोंकणी में अनुवाद कीजिये :–

1. क्या, तुम कल वहाँ गये थे ?
2. वे बाज़ार से एक किताब लाये थे ।
3. राम ने रावण को मार डाला था ।
4. मेरी घडी किसने चुरायी थी ?
5. उसने मुझसे यह बात नहीं कही थी ।
6. गोपाल ने घडी बेची थी ।
7. यह किताब किसने पहले पढी थी ?
8. राम ने अपने दोस्त को एक चिट्ठी लिखी थी ।
9. उसने दरवाज़ा खोला था ।
10. कल आप का भाई दफ़्तर से एक पत्र लाया था ।

---

## पाठ 10

# अपूर्ण भूतकाल और तात्कालिक भूतकाल

| | | |
|---|---|---|
| 1. | जोण थांगा कितें करतालो? | जोण वहाँ क्या करता था ? |
| 2. | तो पुस्तक वाचतालो. | वह किताब पढता था । |
| 3. | तूं काल सांजे बरप बरयतालोवे ? | क्या, तुम कल शाम चिट्ठ[illegible] लिखते थे ? (लिख रहे थे) |
| 4. | हांव दूद पितालों. | मैं दूध पीता था । (पी रहा था |

| | |
|---|---|
| .. अमी मैदानांत खेळताले. | हम मैदान पर खेलते थे। (खेल रहे थे) |
| . ते मद्रासाक राबताले. | वे मद्रास में रहते थे। |
| . राम कोंकणी शिकतालो. | राम कोंकणी सीखता था। |
| . प्रथम मनीश रुकासाली न्हेसताले. | पहले मनुष्य वल्कल पहनते थे। |
| . तुमी खंय वताले? | आप कहाँ जाते थे (जा रहे थे)? |
| . आमी कोचो वताले. | हम कोचीन जा रहे थे। |

धातु के वर्तमानकालिक कृदन्त के साथ 'आ' लगाकर उससे परे नकालिक कृदन्त का प्रत्यय 'ल' जोड कर क्रिया का अपूर्ण भूतकाल रूप नाया जाता है; जो पुरुष, लिंग और वचन में कर्ता से अन्वित होता है।

*तात्कालिक भूतकाल सूचित करने केलिये कोंकणी में इसी रूप ा प्रयोग होता है।

इस क्रिया रूप के 'ता' के स्थान पर 'नास' लगाकर इसका निषेधार्थ रूप बनाया जाता है।

उदा :– हांव पीनासलों. – मैं नहीं पीता था।
आमी पीनासले. – हम नहीं पीते थे।
अपवाद :- वचनासलो. – नहीं जाता था।

अ) उपयुक्त क्रिया के अपूर्ण भूतकाल रूप से रिक्त स्थानों को भरिये :–

1. ते कोंकणी बूक — .
2. तीं हिन्दी — .

---

*अपूर्ण भूतकाल रूप के साथ अपूर्ण अकर्मक क्रिया 'तं' (तां) का प्रयोग करके यह काल रूप बनाने की प्रवृत्ति चलती है।

करतालो तं – कर रहा था।

3. तूं काल थांगा कितें — ?
4. ते हांगा खंय — ?
5. हांव हांगा — ; थांगा — .
6. ती चेली कोंकणी — .
7. चेले खंय — ?
8. चेले बरप — .
9. त्यो मद्रासाक — .
10. तो हांगा केन्नाय कित्याक — ?

अ) कोंकणी में अनुवाद कीजिये :-

1. राम वह काम करता था ।
2. सीता कल शाम को एक चिट्ठी लिख रही थी ।
3. तुम मैदान पर क्या कर रहे थे ?
4. मैं वहाँ खेल रहा था ।
5. राम बाज़ार से क्या लाते थे ?
7. सीता कल रात को एक गीत गा रही थी ।
8. धोबी कपडे धो रहे थे ।
9. कल रात पानी बरसता था ।
10. अंग्रेज़ भारत पर शासन करते थे ।

---

## पाठ 11

# लिंग

| | | |
|---|---|---|
| 1. | तो घोडो धारार धावंता. | वह घोडा तेज दौडता है । |
| 2. | ती पेसकाति खंय आसा ? | वह चाकू कहाँ है ? |
| 3. | तें मेज हांगा हाडि (हाड). | वह मेज यहाँ लाओ । |

| | |
|---|---|
| . तो चोगो तूं घालि(घाल). | वह कुर्ता तुम पहनो । |
| . ती बायल चाय पिता. | वह स्त्री चाय पीती है । |
| . तें पेन हांगा ना. | वह कलम यहाँ नहीं हैं । |
| . तींत खंय आसा ? | स्याही कहाँ है ? |
| . शारद फुल्लो चोयता. | शारदा नथनी देखती है । |
| . मोरु (मोर) नाचता. | मोर नाचता है । |
| ). ता कथा तुवें वाचलीवे ? | क्या, तुम ने वह कथा पढ़ी ? |

ऊपर के वाक्यों में घोडो, पेसकाति, मेज़, चोगो, बायल, पेन, त, फुल्ली, मोरु और कथा—ये संज्ञायें हैं । इन में घोडो, चोगो, रु—ये पुल्लिग शब्द हैं; पेसकाति, बायल, तींत, फुल्ली, कथा—ये स्त्रीलिंग ब्द हैं और मेज, पेन—ये नपुंसकलिंग शब्द हैं ।

कोंकणी में तीन लिंग हैं—पुल्लिग, स्त्रीलिंग और नपुंसकलिंग ।

प्राणिवाचक शब्दों का लिंग निर्णय शब्द के अर्थ के अनुसार होता । पुरुषबोधक संज्ञाएं पुल्लिग और स्त्रीलिंग बोधक संज्ञाएँ स्त्रीलिंग हैं ।

पवाद :- चेडूं (लडकी) — नपुंसकलिंग है ।

अप्राणिवाचक शब्दों का लिंग निर्णय अकसर शब्द के रूप के नुसार होता है ।

1. *'उ' और 'ओ' कारान्त संज्ञाएँ पुल्लिग होती हैं ।

दा :– हातु, पायु, कानु, मोरु, कीरु, दोळो, चोगो, कायळो, उण्डो, खोल्लो आदि ।

2. 'आ', *'इ' और 'ई' कारान्त संज्ञाएँ स्त्रीलिंग होती है ।

दा :– आज्ञा, कथा, माळा, पेसकाति, सारणि, चीटि, कीडि, मूयि, म्हशि, फुल्ली, तोपी, मुद्दी, बी आदी ।

---

*गोवा की कोंकणी में ये संज्ञाएँ व्यजनान्त हो गयी हैं ।
जैसे :– हात, पाय, कान, कीड, मूय.

अपवाद :– तींत, कोयलूव, खूळ, ताळूव, जोळूव, व्होणूव, व्हाण,
सूव, लीक—ये व्यंजनान्त संज्ञाएँ स्त्रीलिंग होती है ।
(louse – जूँ) शब्द स्त्रीलिंग है ।

अन्य शब्दों का लिंग निर्णय अधिकतर व्यवहार के अधीन है

अ) हिन्दी में अर्थ लिखकर शब्दों का लिंग बताइये :–

व्हरेतु, विन्दूरु, पिशाचो, कोंवो, रांदपी, कोयलूव, बायल, व
सून, जीव, ऊ, खूळ मूयि, मांकड, कदेल, नांक, तोण्ड, चेरडू, मत्तीं, पु

आ) कोंकणी में अर्थ लिखकर शब्दों का लिंग बताइये :–

कमरा, चाकू, खाट, नेवला, बरतन, पैर, जोंक, चावी, म
जहाज़, मुँह, भैंस ।

---

## पाठ 12

# वचन

| | | |
|---|---|---|
| 1. | चेलीयो पुस्तकां वाचतात. | लड़कियाँ पुस्तकें पढती हैं । |
| 2. | चेले कोंकणी भासेन उलयतात. | लड़के कोंकणी में बोलते हैं |
| 3. | तुमी हीं फळां खायात. | आप ये फल खाइये । |
| 4. | तीं कूडीं साफ़ कर. | वे कमरे साफ़ करो । |
| 5. | बायलां हिन्दी शिकतात. | स्त्रियाँ हिन्दी सीखती हैं । |
| 6. | घाडे धारार धावंतात. | घोडे जल्दी दौडते हैं । |
| 7. | ते चोर पोलीसाक देकून धावले. | वे चार पुलिस को देखकर ग |

| | |
|---|---|
| . दोन सूणीं भोंकतात. | दो कुत्ते भूंकते हैं। |
| . ताणें बीं वोयलें. | उसने बीज बोया। |
| . आज चेरडूवां खंय गेलीं? | आज बच्चे कहाँ गये? |

ऊपर के वाक्यों में चेलीयो, चेले, फळां, कूडां, बायलो, घोडे, र, सूणीं, बीं, चेरडूवां—ये संज्ञाएँ चेली, चेलो, फळ, कूड, बायल, घोडो, रु, सूणें, बीं, चेरडू—इन संज्ञा शब्दों के बहुवचन रूप हैं।

कोंकणी में वचन के दो भेद हैं—एकवचन और बहुवचन। लिंग आधार पर संज्ञाशब्दों का बहुवचन बनता है। इसलिये बहुवचन रूप नाने केलिये शब्दों का लिंग जानना आवश्यक है।

## I पुंल्लिग शब्दों के बहुवचन बनाने के नियम

1. 'उ' कारान्त पुंल्लिग शब्दों के एकवचन के रूप के अन्त्य 'उ' का लोप कर देने से उनके बहुवचन रूप बनते हैं। अर्थात् शब्द बहुवचन में व्यंजनान्त हो जाता है।

| एकवचन | बहुवचन |
|---|---|
| चोरु | चोर |
| मोरु | मोर |
| पायु | पाय |
| फातरु | फातर |
| देवु | देव |

2. 'ओ' कारान्त पुंल्लिग शब्दों के एकवचन के रूप के अन्त्य 'ओ' को 'ए' कर देने से उनके बहुवचन रूप बनते हैं।

| एकवचन | बहुवचन |
|---|---|
| घोडो | घोडे |
| कोंबो | कोंबे |
| आंबो | आंबे |

3. अन्य पुलिंग शब्दों के रूप दोनों वचनों में एक से रहते

| एकवचन | बहुवचन |
|---|---|
| बरपी | बरपी |
| दुद्दी | दुद्दी |

II स्त्रीलिंग शब्दों के बहुवचन बनाने के नियम

1. व्यंजनान्त स्त्रीलिंग शब्दों के बहुवचन बनाने के लिये एक के रूप के अन्त में 'ओ' जोड देते हैं ।

| एकवचन | बहुवचन |
|---|---|
| बायल | बायलो |
| कोयलूव | कोयलूवो |
| मूय | मूयो |

2. 'आ' कारान्त स्त्रीलिंग शब्द बहुवचन में 'ओ' कारान् जाते हैं ।

| एकवचन | बहुवचन |
|---|---|
| कथा | कथो |
| कन्या | कन्यो |
| माळा | माळो |

3. 'इ' कारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के एकवचन रूप के अन्त्य 'इ' 'इयो', 'अयो' या 'यो' कर देने से उनके बहुवचन रूप हैं । ('इ' के स्थान पर 'यो' कर देते हैं ।)

| एकवचन | बहुवचन |
|---|---|
| सारणि | सारणियो, सारणयो, सारण्य |
| म्हशि | म्हशियो, म्हशयो, म्हश्यो |
| पेसकाति | पेसकातियो, पेसकातयो पेसक |

2. 'ई' कारांत स्त्रीलिंग शब्दों के एकवचन रूप के अन्त में (यो) जोड देने से उनके बहुवचन रूप बनते हैं ।

| एकवचन | बहुवचन |
|---|---|
| तोपी | तोपीयो |
| फुल्ली | फुल्लीयो |
| चेली | चेलीयो |

### III नपुंसकलिग शब्दों के बहुवचन बनाने के नियम

1. व्यंजनान्त नपुंसकलिग शब्दों के अन्त में 'अं' या 'आं' जोडकर बहुवचन रूप बनाया जाता है ।

| एकवचन | बहुवचन |
|---|---|
| कदेल | कदेलं, कदेलां |
| घर | घरं, घरां |
| नांव | नांवं, नांवां |
| वर्स | वर्सं, वर्सां |

2. 'ई' कारान्त नपुंसकलिग शब्दों के अन्त के 'ई' के स्थान पर 'इयां' लगाकर बहुचन रूप बनाया जाता है ।

| एकवचन | बहुवचन |
|---|---|
| मतीं | मतियां |
| बीं | बियां |

लेकिन इनका एकवचन रूप ही बहुवचन में प्रयुक्त होता है ।

3. 'ऊं' कारान्त नपुंसकलिग शब्द के अन्त्य 'ऊं' के स्थान पर 'अवं' या 'अवां' लगाकर बहुवचन रूप बनाया जाता है ।

| एकवचन | बहुवचन |
|---|---|
| तारूं | तारवं, तारवां |
| चेडूं | चेडवं, चेडवां |

पवाद :– चेरडूं — चेरडूवं, चेरडूवां

4. 'एं' कारान्त नपुंसकलिंग शब्द के अन्त्य 'एं' को 'ईं' कर
बहुवचन रूप बनता है।

| एकवचन | बहुवचन |
|---|---|
| सूणें | सूणीं |
| करटें | करटीं |
| मातें | मातीं |

अ) निम्नलिखित शब्दों में से उपयुक्त शब्दों के बहुवचन
से वाक्य के रिक्त स्थानों को भरिये :–

घोडो, बायल, पूतु, भयणि, कवड, कदेल, सूणें, कानु, पु
कोयलूव, माजर.

1. — म्याव, म्याव करतात.
2. हे — धारार धावंतात.
3. ते — कालेजांत शिकतात.
4. हांगा चार — आसात.
5. — काडि (काड).
6. केन्नाय तुमी कोंकणी — वाचतात.
7. फाय हांगा त्यो — गीत म्हणतल्यो.
8. त्यो — कोणे भेतल्यो?
9. तीं — हांगा हाडि (हाड).
10. तीं — व्हडान भोंकतात.

आ) कोंकणी में अनुवाद कीजिये :–

1. लडके कोंकणी सीखते हैं।
2. लडकियाँ गीत गा रही हैं।
3. किताबें वहाँ रखो।
4. वे आदमी यहाँ नहीं रहते।
5. वे औरतें कल यहाँ आयी थीं।

6. बच्चे वहाँ क्या कर रहे हैं ?
7. दरवाज़े खोलो और खिडकियाँ बन्द करो ।
8. किसान खेत में बीज बोते हैं ।
9. वे कुरसियाँ यहाँ लाइये ।
10. वे लडकियाँ टोपियाँ पहनती हैं ।

---

पाठ 13

# कारक और प्रत्यय

| | | |
|---|---|---|
| 1. | राम उदक हाडता. | राम पानी लाता है । |
| 2. | हांव गायक धार काडतां. | मैं गाय को दुहता हूँ । |
| 3. | ताका हांगा उळदी. | उसको यहाँ बुलाओ । |
| 4. | आमकां दूद जाय. | हम को दूध चाहिये । |
| 5. | तो पेनान बरयता. | वह कलम से लिखता है । |
| 6. | रामान बाणान रावणाक मारलो. | राम ने बाण से रावण को मारा । |
| 7. | जनानी गान्धीजीलें भाषण आयकलें. | जनता ने गान्धीजी का भाषण सुना । |
| 8. | ते चेडे बोडयानी खेळतांत. | वे लडके लाठियों से खेलते हैं । |
| 9. | राघव रामालासाकून पुस्तक घेता. | राघव राम के पास से पुस्तक लेता है । |
| 10. | लक्ष्मण भरताचेकूय व्हड. | लक्ष्मण भरत की अपेक्षा (से) बडा है । |

| | | |
|---|---|---|
| 11. | लक्ष्मण रामाचो भावु. | लक्ष्मण राम का भाई है। |
| 12. | पुस्तक मेजांत आसा. | पुस्तक मेज़ में है। |
| 13. | तो कदेलार बैसता. | वह कुरसी पर बैठता है। |
| 14. | तो रुकाचेर चढता. | वह पेड पर चढता है। |
| 15. | तो रामाली भयणि. | वह राम की बहन है। |

कोंकणी के कारक प्रत्यय और उनके अर्थ नीचे दिये जाते हैं

| कारक | प्रत्यय | अर्थ |
|---|---|---|
| प्रथमा (कर्ता) | ०, न, नी (बहुवचन) | ०, ने |
| द्वितीया (कर्म) | क, का, कां | को |
| तृतीया (करण) | न, नी (बहुवचन) | से |
| चतुर्थी (संप्रदान) | क, का, कां | को |
| पंचमी (अपादान) | थाकून, साकून, सून चेकय, (चे)कृय, पासि पास्ट, च्यान, थावन, थान | से |
| षष्ठी (संबन्ध) | चो, जो*, गेलो, लो | का |
| सप्तमी (अधिकरण) | चेर, आर, गेर | पर |
| | आन्त, (आन्तु) | में |
| संबोधन (संबोधना) | नु, न्दो (बहुवचन) | ए, ओं (बहुवच |

भिन्न-भिन्न कारक प्रत्ययों के प्रयोग की विशेषतायें :

1. जब वाक्य की क्रिया सकर्मक भूतकाल में रहती है, तब कर्ता के स एकवचन में 'न' और बहुवचन में 'नी' का प्रयोग होता है। य ये प्रत्यय निरर्थक हैं।

*यह प्रत्यय अधिकतर सर्वनामों के साथ प्रयुक्त होता है :-
जैसे : - ताजो — उसका; हाजो — इसका; मजो (म्हजो) — मेर

कोंकणी में अपादान कारक (पंचमी) प्रत्यय नहीं है । क्रिया विशेषणों के द्वारा इस प्रत्यय का काम चलाया जाता है ।

. संबन्ध कारक प्रत्यय (षष्ठी) — चो, जो, गेलो, लो—ये विशेषण के समान प्रयुक्त होते हैं । विशेष्य के (संबन्धी शब्द के) लिंग, वचन के अनुसार बदलते हैं ।

| | | | |
|---|---|---|---|
| ा :- | रामाचो दोळो. | – | राम का नेत्र |
| | रामाचे दोळे. | – | राम के नेत्र |
| | रामाची जीव | – | राम की जीभ |
| | रामाचें नांक | – | राम की नाक |
| | रामाचीं बोटां | – | राम की उँगलियाँ |
| | रामाच्यो जांगो | – | राम की जांघें |

इसी तरह 'गेलो' और 'लो' प्रत्ययों के उदाहरण भी दिये जा ते हैं ।

संबन्धी शब्द सप्रत्यय रहे, तो संबन्ध कारक चिह्न (प्रत्यय) लिंग र वचन के भेद के बिना क्रम से 'च्या', 'गेल्या', 'ल्या'—हो जायगा ।

| | | | |
|---|---|---|---|
| ा :- | मोराचो+पायु+क | —> | मोराच्या पायाक |
| | रामाली+बायल+क | —> | रामाल्या बायलेक |
| | रामालें+पुस्तक+आन्त | —> | रामाल्या पुस्तकान्त |

ज्ञाओं का विकृत रूप :-

प्रत्यय जोडने पर संज्ञाओं का जो रूपान्तर होता है, वह नीचे दिया ाता है ।

| | शब्द | विकृत रूप एकवचन | | बहुवचन | |
|---|---|---|---|---|---|
| ० | घोडो | घोड्या | (या) | घोड्यां | (यां) |
| | हातु | हाता | (आ) | हातां | (आं) |
| त्री० | बायल | बायले | (ए) | बायलां | (आं) |
| | कथा | कथे | (ए) | कथां | (आं) |
| | सारणि | सारणी | (ई) | सारण्यां | (यां) |
| | चेली | चेले | (ए) | चेलियां | (यां) |

| शब्द | | विकृत रूप | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| | | एकवचन | | बहुवचन | |
| नपुं० | कदेल | कदेला | (आ) | कदेलां | ( |
| | तारूं | तारवा | (आ) | तारवां | ( |
| | करटें | करट्या | (या) | करट्यां | ( |

आ) संज्ञाओं के उपयुक्त कारक रूपों से रिक्त स्थानों को भरि

1. आमी — काम करतात.
2. तो — कागतार बरयता.
3. अध्यापक — कोंकणी शिकयता.
4. — तींत ना.
5. राम — बामुण.
6. लक्ष्मण — भाऊ.
7. — — नांव भरत.
8. — बायलेचें नांव सीता.
9. — — चेलो काल हांगा आयललो.
10. हांव आतां — घराक वतां.

अ) कोंकणी में अनुवाद कीजिये :–

1. लड़कियों को क्या चाहिये ?
2. बच्चों को दूध चाहिये ।
3. राम की दूकान में अच्छा घी मिलता है ।
4. रहीम अहमद का भाई है ।
5. अहमद के भाई का नाम क्या है ?
6. जोसफ़ के दर्जे में जॉण की बहन का बेटा सीखता
7. शारदा के घर में सीता की बहन रहती है ।
8. गोपाल के भाई की दूकान से तुम एक किताब खरी
9. गोपाल कलम से कागज़ पर लिखता है ।
10. उसकी बहन मद्रास से कल आयी ।

11. राम लक्ष्मण से बडा है ।
12. राम ने बाण से बाली को मारा ।
13. लोगों ने पंडित जी का भाषण सुना ।
14. रशीदा के गाँव में लोग कौन-सी भाषा बोलते हैं ?
15. महात्मा गान्धीजी ने हमको अहिंसा का पाठ पढाया ।

---

## पाठ 14

# सर्वनामों के रूपान्तर - I

| | |
|---|---|
| हांवें तें काम केलें. | मैं ने वह काम किया । |
| तो माका उळदिता. | वह मुझे बुलाता है । |
| ताणें आमकां कितें दिलां ? | उसने हम को क्या दिया है ? |
| तागेलो भाऊ आतां खंय रावता ? | उसका भाई अब कहाँ रहता है ? |
| त्या घरांत तुमगेली भयणि आसावे ? | क्या, उस घर में आपकी बहन है ? |
| तांगेलीं चेरडुवां खंय शिकतात ? | उनके बच्चे कहाँ पढते हैं ? |
| तिगेलो पूत मागेल्या घराक केन्नाय येता. | उसका पुत्र मेरे घर को रोज आता है । |
| हांव तुजाकय व्हड. | मैं तुम से बड़ा (हूँ) । |
| तिका इतें जालें ? | उसको क्या हुआ ? |
| मागेली बायल गावांत गेल्या. | मेरी पत्नी गांव गयी है । |

ऊपर के वक्यों के रेखांकित शब्द सर्वनामों के रूपान्तर हैं ।

# सर्वनाम - कारक रचना

| कारक : | हांव = मैं | आमी = हम |
|---|---|---|
| कर्ता | हांव - मैं; हांवें – मैं ने | आमी – हम, ह |
| कर्म | म्हाका, माका – मुझको | आमकां – हम को |
| करण | म्हाजान, माजान – मुझ से | आमचान – हम से |
| संप्रदान | म्हाका, माका – मुझ को | आमकां – हम को |
| अपादान | म्हाजेमून, माजेसून– मुझ से | आमचेसून - हम से |
| संवन्ध | म्हागेल्लो, मागेलो - मेरा | आमगेलो – हमारा |
| अधिकरण | म्हाजेर, माजेर – मुझ पर | आमचेर – हम पर |
| | म्हाजान्त, माजांतु – मुझ में | आमचांत – हम में |

| | तूं = तू या तुम | तुमी = आप |
|---|---|---|
| कर्ता | तूं – तू; तुवें - तू ने; तुम तुम ने | तुमी – आप, आप |
| कर्म | तुका – तुझको, तुम को | तुमकां – आप को |
| करण | तुजान – तुझ से, तुम से | तुमचान – आप से |
| संप्रदान | तुका – तुझ को, तुम को | तुमकां – आप को |
| अपादान | तुजेमून - तुझ से, तुम से | तुमचेसून - आप से |
| संबन्ध | तुगेलो – तेरा, तुम्हारा | तुमगेलो – आप का |
| अधिकरण | तुजेर – तुझ पर, तुम पर | तुमचेर – आप पर |
| | तुजान्त – तुझ में, तुम में | तुमचांत - आप में |

| | तो = वह (पुं) | ते = वे (पुं.) |
|---|---|---|
| कर्ता | तो – वह; ताणें - उसने | ते - वे; तांणी -उ |
| कर्म | ताका - उसको | तांका - उनक |
| करण | ताजान - उससे | तांचान – उनसे |
| संप्रदान | ताका – उसको | तांका – उनक |
| अपादान | ताजेमून - उससे | तांचेसून – उन |
| संवन्ध | तागेलो - उसका | तांचेगेलो - उनक |
| अधिकरण | ताचेर - उसपर; ताचान्त – उसमें | तांचांत – उनमे |

अ) उपयुक्त रूपान्तरित सर्वनामों से रिक्त स्थानों को भरिये :–

1. — नांव इतें ?
2. — घरांत कोण कोण आसात ?
3. हें — पेन न्हंय.
4. — भयणीलें घर खंयंय ?
5. ती — एक बावलें हाडता.
6. तो — दोन रुपया दिता.
7. राम — व्हड.
8. गोविन्द — घराक केन्ना येतलो ?
9. कोंकणी — आवय भास.
10. — भास — जाय.

आ) कोंकणी में अनुवाद कीजिये :–

1. आपका नाम क्या है ?
2. तुम्हारे भाई का नाम क्या है ?
3. मेरे भाई का नाम गोपाल है ।
4. तुम्हारी बहन क्या करती है ?
5. मेरी बहन पढती है ।
6. वह मेरी किताब पर लिखता है ।
7. राम ने हमारे लिये यह काम किया ।
8. मेरा बेटा कल तुम्हारे घर आयगा ।
9. तुम उसके पिताजी का घर जानते हो ?
10. मेरी माता ने आप को क्या दिया ?

पाठ 15

# सर्वनामों के रूपान्तर - II

| | | |
|---|---|---|
| 1. | तुवें कोणालें काम केलां ? | तुम ने किसका काम किय |
| 2. | हांवें हांगेलें काम केलां. | मैं ने इनका काम किया है |
| 3. | हिगेलें घर खंयंय ? | इसका घर कहाँ है ? |
| 4. | तो हागेलें पुस्तक कोणाक दितलो ? | वह इसकी पुस्तक कि देगा ? |
| 5. | हाणें कोणालासाकून हें पेन घेतलें ? | इसने किस से यह कलम ल |
| 6. | तिणें हें पुस्तक वाचलें. | उसने यह पुस्तक पढी । |
| 7. | काल हांगा कोणाली धूव आयलला ? | कल यहाँ किसकी बेटी आय |
| 8. | तें बरप हाका दी. | वह पत्र इसको दो । |
| 9. | हांणी तुमकां सांगलेंवे ? | क्या, इन्होंने आप से कहा |
| 10. | हिणें आपणाल्या चेरडाक राण्टी खावयली. | इसने अपने बच्चे को खिलायी. |

ऊपर के वाक्यों के रेखांकित शब्द सर्वनामों के रूपान्तर हैं

## सर्वनाम - कारक रचना

ती – वह (स्त्री०)    त्यो – वे (स्त्री०

कारक :

कर्ता ती – वह; तिणें – उसने    त्यो – वे; तांणी –

कर्म तिका - उसको    तांकां - उनको

| | ती – वह (स्त्री०) | | त्यो – वे (स्त्री०) | |
|---|---|---|---|---|
| रण | तिजान | – उस से | तांचान | – उन से |
| प्रदान | तिका | – उसको | तांकां | – उन को |
| पादान | तिजेसून | – उस से | तांचेसून | – उन से |
| बन्ध | तिगेलो | – उसका | तांगेलो | – उन का |
| धिकरण | तिजेर | – उसपर | तांचेर | – उन पर |
| | तिजांत | – उसमें | तांचांत | – उन में |

तें — वह (नपुं. ए.); तीं — वे (नपुं. ब.)—इनके कारक रूप मश: 'तो' और 'ते' के रूपों के समान हैं।

हो, ही, हें; जो, जी, जें—इन सर्वनामों के साथ कर्ता कारक कवचन में 'णें' प्रत्यय लगकर हाणें, हिणें, जाणें, जिणें—ये रूप बनते हैं; हुवचन में हांणी, जांणी—ये रूप बनते हैं। इनके बाकी कारक रूप तो, 'ते', 'ती' के रूपों के समान हैं।

| कारक : | कोण – कौन | | कितें (इतें) – क्या | |
|---|---|---|---|---|
| कर्ता | कोण | — कौन | कितें | — क्या |
| | कोणें | — किसने | | |
| कर्म | कोणाक | — किस को | कित्याक | — किस को |
| करण | कोणान, कोणाचान | — किससे | कित्यान, कित्याचान | — किस से |
| संप्रदान | कोणाक | — किसको | कित्याक | — किसको |
| अपादान | कोणालासून | — किस से | कित्यालासून | — किस से |
| संबन्ध | कोणालो | — किसका | कित्यालो | — किसका |
| अधिकरण | कोणार | — किस पर | कित्यार | — किसपर |
| | कोणांत | — किस में | कित्यांत | — किस में |

अ) हो, ही, हें; हे, ह्यो, हीं और कोण—इनके उपयुक्त कारक रूपों से रिक्त स्थानों को भरिये :–

1. तूं — घराक केन्ना वतलो ?
2. — घर भो धूरा.
3. — नांव कितें ?
4. तुवें हें पुस्तक — घेतलें ?
5. सीता — स्कूळांत वतली.
6. — आज कितें हाळ्ळें ?
7. तांणी दूकानांथाकून — भाजी घेतली.
8. हो बूक — ?
9. राम — सान.
10. तो — व्हड.

आ) कोंकणी में अनुवाद कीजिये :–

1. तुम किसका काम करते हो ?
2. मैं इसका काम करता हूँ ।
3. इनका घर कहाँ है ?
4. वह यह किताब किस को देगी ?
5. तुम यह खिलौना किसके लिये खरीदते हो ?
6. वे किसके घर जाते हैं ?
7. वे इनके लिये यह काम करते हैं ।
8. हम इनके विद्यालय से आ रहे हैं ।
9. तुम किन किन लोगों के लिये यह सामान खरीदते हो ?
10. तुम इनसे किनकी भाषा में बोलते हो ?

पाठ 16

# विशेषण

| | | |
|---|---|---|
| 1. | तो गोरो चेलो काल हांगा आयला. | वह गोरा लडका कल यहाँ आया । |
| 2. | ते गोरे चेले पुस्तक वाचतात. | वे गोरे लडके पुस्तक पढते हैं। |
| 3. | तो गोरी चेली गींत म्हणता. | वह गोरी लडकी गीत गाती है। |
| 4. | त्यो गोऱ्यो चेलीयो कोंकणी शिकतात. | वे गोरी लड़कियाँ कोंकणी सीखती हैं। |
| 5. | तें काळें सूणें भोंकता. | वह काला कुत्ता भूँकता है। |
| 6. | तीं काळीं सूणीं भोंकतात. | वे काले कुत्ते भूँकते हैं। |
| 7. | तो आम्बूसु आंबो ताका दी. | वह खट्टा आम उसको दो। |
| 8. | ते आम्बूस आंबे तांकां दी. | वे खट्टे आम उनको दो। |
| 9. | ती आम्बूस चींच माका नाका. | वह खट्टी इमली मुझे नहीं चाहिये। |
| 10. | त्यो आम्बूस चींचो तांकां जाय. | वे खट्टी इमलियाँ उनको चाहिये। |

ऊपर के वाक्यों के रेखांकित शब्द विशेषण हैं।

1. 'ओ' कारान्त विशेषण शब्द पुल्लिग बहुवचन में 'ए' कारान्त हो जाता है और स्त्रीलिंग एकवचन में 'ई' कारान्त और बहुवचन में 'ई' के बदले 'यो' कारान्त हो जाता है। नपुंसकलिंग एकवचन में 'एं' कारान्त और बहुवचन में 'ई' कारान्त हो जाता है।

2. पुल्लिग 'उ' कारान्त विशेषण शब्द बहुवचन में व्यंजनान्त
जाता है। अन्य विशेषणों का लिंग वचन में रूपभेद नहीं होता।

अ) उपयुक्त विशेषणों से रिक्त स्थानों को भरिये :-

1. तें — कदेल थांगा व्हर.
2. तुमी ही — चाय पियात.
3. राम — उदक पिता.
4. तो — तींतान बरयता.
5. तीं — बायल कोण ?
6. आज — वारें मारता.
7. तो — चेडो तागेलो — भाउ.
8. कोंकणी — भास.
9. दूकानां थाकून एक — पुस्तक हाडि.
10. हांव — दूद पितां.

आ) कोंकणी में अनुवाद कीजिये :-

1. तुम गरम पानी पीओ।
2. आप ठंडी चाय न पीजिये।
3. राम लाल स्याही से सफ़ेद कागज़ पर लिखता है।
4. वह हमेशा ठंडा पानी पीता है।
5. काली कलम में हरी स्याही भरो।
6. वह मोटी लडकी राम की छोटी बहन है।
7. वह लंबा आदमी तेज़ दौड रहा है।
8. वह मेज़ चौकोर नहीं, गोल है।
9. तुम वे कडुवे फल कहाँ से लाये ?
10. हम खट्टे आम नहीं खायेंगे; मीठे आम खायेंगे।

पाठ 17

# संबन्ध सूचक और क्रिया विशेषण

| | |
|---|---|
| मेजाचे पोन्शाक माजर बैसलां. | मेज़ के नीचे बिल्ली बैठी है। |
| ताजे मागलान कोण राबला ? | उसके पीछे कौन खडा है ? |
| तांचे मुकार चमक. | उनके आगे चल। |
| तो ह्या घराचे लागि रावता. | वह इस घर के पास रहता है। |
| तुमचे गूणि इतें हाडका ? | आप केलिये क्या लाना है ? |
| कूडाचे भायर बैस. | कमरे के बाहर बैठो। |
| रूकाचे खाल एक चेली खेळता. | पेड के नीचे एक लडकी खेलती है। |
| मद्रासा थाकून तो काल आयलो. | मद्रास से वह कल आया। |
| घरां भितर कोण आसा ? | घर के अन्दर कौन है ? |
| ताजे पसावत (पासून) माका कांय कळना. | उसके बारे में मैं कुछ नहीं जानता। |

ऊपर के वाक्यो के रेखांकित शब्द संबन्ध सूचक अव्यय हैं। ये ब्द संज्ञा या सर्वनाम के संबन्धकारक बहुवचन रूप के साथ प्रयुक्त होते हैं। वतंत्र रूप से प्रयुक्त होने पर इनको क्रिया विशेषण मानना ही उचित है।

दा :– मेजाचे उंचार कितें आसा ? (सं० सू०)

उंचार चोय (क्रि० वि०)

कूडां भितर कोण आसा ? (सं० सू०)

भितर यो. (क्रि० वि०)

अ) उपयुक्त संबन्ध सूचक अव्ययों से रिक्त स्थानों को भरिये

1. घरां — थाकून भायर यो.
2. माजे — आज पैसा ना.
3. ती कूडाचे — बैसतली.
4. तो ताजे — चमकता.
5. — चमकनाका; — चमक.
6. माजे — तूं इतें हाडतलो ?
7. हांव पांच वरां — तागेल्या घरा — वचन.
8. तूं गान्धीजी — इतें जार्ण ?
9. तो घरा — धावंता.
10. वाटेचे — एक रूक पळ्ळा.

आ) कोंकणी में अनुवाद कीजिये :–

1. उस घर के पास मेरा भाई रहना है ।
2. इन घरों में कोई नहीं रहता ।
3. कमरे के वाहर सीता की बहन खडी है ।
4. तुम मेरे साथ चलो ।
5. उसके आगे चलो ।
6. हम चार बजे से पहले तुम्हारे घर आयेंगे ।
7. नदी के बीच में नाव है ।
8. वह बाहर गया है ।
9. अन्दर मत आओ; बाहर बैठो ।
10. ऊपर देखो ।

## पाठ 18

# क्रिया का साधारण रूप (धातु अव्यय)

| | |
|---|---|
| तुमी आज सिनेमा चोवंचाक वतले व्हय ? | क्या, आज तुम सिनेमा देखने जाओगे ? |
| तुमकां अंग्रेजी उलौंचाक कळता व्हय ? | क्या, आप को अंग्रेज़ी बोलना आता है ? |
| हें उदक पिवंचाक चांग न्हंय. | यह पानी पीने के लिये लायक नहीं है। |
| आमी कोंकणी बरौंचाक आनी वाचुंक शिकतात. | हम कोंकणी लिखना-पढना सीखते हैं। |
| राम मैदानांत खेळचाक वता. | राम मैदान में खेलने जाता है। |
| तूं आज ताका देकुंक वतलोवे ? | क्या, तुम आज उससे मिलने जाओगे ? |
| तें पुस्तक घेवपाक चार रुपया दी. | वह पुस्तक खरीदने केलिये चार रुपया दो। |
| हांव निदेवंचाक वतां. | मैं सोने जाता हूँ। |
| माका थांगा वचाक (वसपाक) आसा. | मुझे वहाँ जाना है। |
| पुस्तक हाडपाक तो काळेजांत गेला. | पुस्तक लाने वह कालेज गया है। |

उपर्युक्त वाक्यों के रेखांकित शब्द क्रिया के साधारण रूप
क्रिया में उद्देश्य को सूचित करने केलिये वाक्य में इसका प्रयोग होता

अ) उपयुक्त क्रियाओं के धातु अव्यय के रूपों से रिक्त स्थ
को भरिये :–

1. हांव तें पुस्तक — विसरलों.
2. तो हांगा कोंकणी — येता.
3. ताजे लागि हें काम — सांग.
4. तो होटलांत उदक — वता.
5. आमी हिन्दी — आनी — शिकनात.
6. तो मैदानांत फ़ुटबाळ — गेला.
7. दोळे — आनी कान — देवान आमकां दिलात.
8. तुका कोंकणी — कळता व्हय ?
9. हांव ताका — काळेजांत वता.
10. तूं माजे लागि चाय — येतलो व्हय ?

आ) कोंकणी में अनुवाद कीजिये :-

1. वह कोंकणी सीखने केलिये रोज़ यहां आता है ।
2. उसको कोंकणी लिखना-पढना नही आना है । लें
बोलना जानता है; क्योंकि यह उसकी मातृभाषा है ।
3. वह समाचार पत्र पढने केलिये पुस्तकालय में जाता
4. वह हस्पताल जाने केलिये घर से निकला ।
5. उनको तैरना आता है ।
6. तुम इतवार को स्कूल न जाना ।
7. सूरज के निकलने में अभी देर है ।
8. पीने केलिये ठंडा पानी लाओ ।
9. खाने के लिये वह मीठे फल लाया ।
10. बैठने के लिये भी यहां जगह नहीं है ।

---

पाठ 19

# पूर्वकालिक कृदन्त

| | |
|---|---|
| 1. तो खाण खावनु (खावन) हात धूता. | वह खाना खाकर हाथ धोता है। |
| 2. तो पुस्तक हातां धरनु वाचता. | वह पुस्तक हाथ में लेकर पढती है। |
| 3. दांत घासून तोंड धूवनु चाय पी. | दांत साफ़ करके मुँह धोकर चाय पिओ। |
| 4. थांगा वचून तूं आज कितें करतलो? | वहाँ जाकर आज तुम क्या करोगे? |
| 5. ताणें पेन काणू (काडून) चीट बरयला. | उसने कलम लेकर चिट्ठी लिखी। |
| 6. तो येवनु (येवून) बांकार बैसलो. | वह आकर बेंच पर बैठा। |
| 7. पुलासांनी चोरांक धरनु व्हेले. | पुलिस चोरों को पकडकर ले गये। |
| 8. कोंकणी शिकून तुमी कितें करतले? | कोंकणी सीखकर आप क्या करेंगे? |
| 9. चेल्याली बांब आयकून ते धावनु आयले. | लडके का रोना सुनकर वे दौड आये। |
| 10. एक वर वाजून पांच मिनटां जालीं. | एक बज कर पांच मिनट हुए। |

ऊपर के वाक्यों के रेखांकित शब्द क्रिया के पूर्वकालिक कृदन्त है
धातु के साथ 'ऊन', 'उनु' या 'नु' लगने से क्रिया का पूर्वकालिक कृदन्त
बनता है। 'ऊन' कभी कभी 'अन' बन जाता है। जब दो क्रियाओं
एक ही सामान्य कर्ता रहता है और दूसरी क्रिया पहली क्रिया के बाद हो
है और उसपर निर्भर रहती है, तब पहली क्रिया के पूर्वकालिक कृद
रूप का प्रयोग होता है।

धातु के साथ 'नातिल्लें' जोडकर इस क्रिया का निषेधार्थ
बनाया जाता है।

उदा :- कर+नातिल्लें — करनातिल्लें = किये बिना (न करके
शिक+नातिल्लें — शिकनातिल्लें = सीखे बिना (न सीखक

अ) उपयुक्त क्रियाओं के पूर्वकालिक कृदन्त रूपों से रिक्त स्थ
को भरिये :-

1. तो दोळयांनी — चमकता.
2. ते मनीश कदेलार — बांकार बैसले.
3. तूं हें पत्र — वाच.
4. आज थांगा — तुमी इतें करतले?
5. तो हांगा — चाय — गेलो.
6. तुमी रोण्टी — वचात.
7. तो बूक — हाडि.
8. हांव ताका — तुमगेल्या घरकडे येन.
9. काम — तो हांगा आयलो.
10. मागेलें उतर — तुमी वचात.

आ) कोंकणी में अनुवाद कीजिये :-

1. लडकी की बात सुनकर माँ खुश हुई।
2. वह किताब लेकर पढता है।
3. चिट्ठी लिखकर तुम कहाँ जाओगे?

4. आवाज़ सुनकर चोर भाग गये ।
5. दिल्ली जाकर तुम ने क्या क्या देखा ?
6. मेरा दोस्त मुझे घर छोडकर चला गया ।
7. साँप को देखकर कुत्ता भूँक ने लगा ।
8. नदियाँ पहाडों से निकल कर समुद्र से मिलती हैं ।
9. गान्धीजी का भाषण सुनकर लोग बहुत प्रसन्न हुए ।
10. कोंकणी सीखकर तुम क्या करोगे ?

---

## पाठ 20

# आवश्यकता बोधक क्रिया 'चाहिये'

| | | |
|---|---|---|
| . | तुमकां इतें जाय ? | आप को क्या चाहिये ? |
| 2. | माका दूद जाय. | मुझको दूध चाहिये । |
| 3 | माका पुस्तक जाय. | मुझको पुस्तक चाहिये । |
| 4. | माका तें पुस्तक नाका. | मुझे वह पुस्तक नहीं चाहिये । |
| 5. | माका तें पेन जाय. | मुझे वह कलम चाहिये । |
| 6 | आमची भास आमकां जाय. | हमारी भाषा हमको चाहिये । |
| 7. | ताणें हिन्दी शिकका. | उसको हिन्दी सीखनी चाहिये । |
| 8 | आमी कोंकणी उलौंका. | हम को कोंकणी बोलनी चाहिये । |
| 9. | रामान हें काम करका (करुंक जाय). | राम को यह काम करना चाहिये । |
| 0. | ताणें फल्या हांगा येवंका (येवुंक जाय). | उसको कल यहाँ आना चाहिये । |

ज़रूरत या आग्रह प्रकट करने केलिये कोंकणी में 'जाय' का प्रयोग होता है। 'नाका' इसका निषेधार्थ रूप है। वाक्य का कर्ता संप्रदान कारक में रहता है।

सहायक क्रिया के रूप में मुख्य क्रिया के साधारण रूप के साथ इसका प्रयोग होता है। धातु के साथ 'का' जोडकर भी 'जाय' का अर्थ निकाला जा सकता है। प्रधान क्रिया के साधारण रूप के साथ 'नज' जोड कर इसका निषेधार्थ रूप बनाया जाता है। क्रिया का कर्ता संप्रदान कारक में रहता है। क्रिया हमेशा अन्यपुरुष एकवचन में रहती है।

उदा :- ताणें थांगा वचाक नज — उसको वहाँ जाना नहीं चाहिये

लेकिन धातु के साथ 'का' लगाकर उसके परे 'नाका' जोडकर निषेधार्थ रूप बनापा जाता है, उसका अर्थ कुछ और ही निकलता है।

उदा :- तुवें खावंका नाका. — तुमको खाने की ज़रूरत नहीं
ताणें कोंकणी वरौंका नाका. — उसको कोंकणी लिखने की ज़रूरत नहीं।

अ) उपयुक्त आवश्यकता बोधक संयुक्त क्रिया का प्रयोग कर रिक्त स्थानों को भरिये :-

1. मांका पिवचाक दूद — .
2. तुका खथंय — ?
3. तांणी हें काम — .
4. आमी रामायण — .
5. चेरडूवांनी पांच वरां फूडे हांगा — .
6. आमी देशाची सेवा — — .
7. तुमी केन्नाय कोंकणी — — .
8. आमकां चार रुपया — .
9. रामान धारार घरकडे — — .
10. आमची भास आमी — — .

आ) कोंकणी में अनुवाद कीजिये :-

1. हमको भारत की भलाई केलिये काम करना चाहिये ।
2. तुम को क्या चाहिये ?
3. उनको कुछ नहीं चाहिये ।
4. उनको परीक्षा में पास होना चाहिये ।
5. विद्यार्थियों को सबेरे हाथ मुँह धोकर पाठ पढना चाहिये ।
6. हम को अपनी मातृभाषा में बोलना चाहिये ।
7. हर एक को देश केलिये त्याग करना चाहिये ।
8. हमेशा सच बोलना चाहिये ।
9. हमको आपस में झगडना नहीं चाहिये ।
10. हमको समाज की सेवा करनी चाहिये ।

---

## पाठ 21

# आवश्यकता बोधक क्रिया—'होना', 'पडना'

| | |
|---|---|
| 1. माका हें काम करका जाता. | मुझे यह काम करना पडता है । |
| 2. माका हें काम करचाक आसा. | मुझे यह काम करना है । |
| 3. माका थांगा वचका (वसका) जाता. | मुझे वहाँ जाना पडता है । |
| 4. माका थांगा वचाक (वसपाक) आसा. | मुझे वहाँ जाना है । |
| 5. आमकां हें पुस्तक घेवंका जातलें. | हम को यह पुस्तक लेनी पडेगी । |

| | | |
|---|---|---|
| 6. | आमकां हें पुस्तक घेवंचाक आसतलें. | हम को यह पुस्तक लेनी होगी |
| 7. | आमकां कोंकणी शिकका जाली. | हम को कोंकणी सीखनी पडी |
| 8. | आमकां कोंकणी शिकचाक आशिल्ली (आसलो). | हम को कोंकणी सीखनी थी। |
| 9. | माका हिन्दी भास उलौंका जाली. | मुझको हिन्दी भाषा बोल पडी। |
| 10. | माका ही भास उलौंचाक आशिल्ली (आसली). | मुझको यह भाषा बोलनी थ |

एक काम को करने की आवश्यकता सूचित करने केलिये सहा क्रिया के रूप में 'होना' का प्रयोग होता है। इसी संदर्भ में जब सहायक क्रि के रूप में 'पडना' का प्रयोग होता है, तब काम करने की, कर्ता की लाच सूचित की जाती है। मुख्य क्रिया के साधारण रूप के अन्तिम 'क' का करके 'जावुंक' क्रिया के विभिन्न कालों के रूप जोडकर लाचारी या क सूचित करने की क्रिया का रूप बनाया जाता है। मुख्य क्रिया के साधारण के साथ 'आसुंक' क्रिया के विभिन्न काल के रूप जोड कर आवश्यकता सू करनेवाली क्रिया का रूप बनाया जाता है। सहायक क्रिया के लिंग और व कर्म के अनुसार बदलते रहते हैं। कर्ता हमेशा संप्रदान कारक में रहता

'जावुंक' और 'आसुंक' क्रिया के निषेधार्थ रूप जोडकर इ निषेधार्थ रूप बनाये जाते हैं।

अ) उपयुक्त आवश्यकता बोधक सहायक क्रिया के रूपों का प्र करके रिक्त स्थानों को भरिये :-

1. तुमकां हें काम धारार करका — .
2. तांकां दफ्तरांत समयार येवंका — .
3. माका थांगा वसपाक — .

4. तुका फाय ताका देकुका — .
5. आमकां कोंकणी शिकचाक — .
6. तिका काल हांगा येवंका — .
8. तांकां हीं कायरीं करका — .
9. रामाक हें पुस्तक वाचचाक — .
10. मडवळाक लुगट उंबळुंक — .

आ) कोंकणी में अनुवाद कीजिये :–

1. क्या, आज तुम को दफ्तर जाना है?
2. नहीं, मुझे कल जाना पडेगा ।
3. हम को घर में कोंकणी बोलनी पडेगी ।
4. हमें स्कूलों में अंग्रेज़ी सीखनी पडती है ।
5. उन लडकों को कल रात तक काम करना पडा ।
6. उनको कपडे स्वयं धोने पडे ।
7. उसको ठंडा पानी पीना पडेगा ।
8. कल अध्यापक को क्लास में हिन्दी में बोलना पडा ।
9. उनसे मिलने केलिये हमें मद्रास जाना था ।
10. आज तुम को दूकान जाकर वह किताब खरीदनी पडेगी ।

---

पाठ 22

# शक्तिबोधक क्रिया 'सक'

| | |
|---|---|
| माका हिन्दी बरौंचाक जाता. | मैं हिन्दी लिख सकता हूँ । |
| तुमकां हें काम करुंक जातलें. | आप यह काम कर सकेंगे । |

| | | |
|---|---|---|
| 3. | रामाक (रामाचान) थांगा वचाक जायना. | राम वहाँ जा नहीं सकता । |
| 4. | ताका (ताजान) अंग्रेज़ी शिकुंक जालीना. | वह अंग्रेज़ी सीख नहीं सका |
| 5. | शारदाक (शारदाचान) हांगा येवचांक जावना. | शारदा यहाँ आ नहीं सकेगी |
| 6. | तांकां कोंकणी वाचचाक जातली. | वे कोंकणी पढ सकेंगे । |
| 7. | आमचान उबुंक जायना. | हम उड नहीं सकते । |
| 8. | पक्ष्यांक उबुंक जाता. | चिडियाँ उड सकती हैं । |
| 9. | थोण्ट्याचान धावंचाक जायना. | लंगडा दौड नहीं सकता । |
| 10. | आमचान तीं कायरीं करुंक जालींना. | हम वह काम कर नहीं सके |

सहायक क्रिया के रूप में 'जावुंक' क्रिया के विभिन्न कालों रूप मुख्य क्रिया के साधारण रूप के साथ जोडकर शक्ति या योग्यताबो संयुक्त क्रिया बनायी जाती है । कर्ता हमेशा संप्रदान या अपादान का में रहता है । सहायक क्रिया लिंग, वचन, पुरुष में कर्म से अन्वित रह है । लेकिन जब कर्म लुप्त रहता है, तब क्रिया नपुंसकलिंग एकव में रहती है ।

अ) सहायक क्रिया *'जावुंक' के उपयुक्त रूप का प्रयोग क वाक्यों को लिखिये :–

1. हांव वतां (वेतां).
2. तूं खंय थाकून येता ?

*जावुंक क्रिया का निषेधार्थ रूप जोडकर इस क्रिया का निषेधार्थ बनाया जाता है ।

3. तुमी कोंकणी शिकतलेवे ?
4. तो काल हांगा आयलोना.
5. हांव हिन्दी वाचतलो.
6. ते हिन्दी उलैतले.
7. हांव कदेलार बैसना, बांकार बैसन.
8. ताणें तुजेलागि कितें सांगलें ?
9. तुमी हें पेन कोणालागि घेतलें ?
10. ताणी आज एक काणि आयकली.

आ) कोंकणी में अनुवाद कीजिये :–

1. वे अंग्रेज़ी बोल सकते हैं ।
2. अब हम कुछ नहीं कर सकेंगे ।
3. हवा के बिना हम जी नहीं सकते ।
4. क्या, वह यह चिट्ठी पढ सका ?
5. सीता और उसकी बहन कोंकणी बोल सकती है; लेकिन पढ या लिख नहीं सकती ।
6. यह छोटा लड़का इतना बड़ा कार्य कैसे कर सकेगा ?
7. तुम्हारी सहायता के बिना वह कोंकणी नहीं सीख सकेगा ।
8. मैं तुम्हारे लिये क्या कर सकूँगा ?
9. क्या, तुम कोंकणी में बातचीत कर सकते हो ?
10. वे कोंकणी में कहाँ तक गिन सकते हैं ?

---

पाठ 23

# समाप्तिबोधक क्रिया 'चुकना'*

| | |
|---|---|
| . तागेलें खाण खावनु (खावन) जालें. | वह खाना खा चुका । |
| . आमगेलें पाठ शिकून जालें. | हम पाठ सीख चुके । |

---

*चुकना का सीधा संबन्ध प्राय: भूतकाल से है ।

| | | |
|---|---|---|
| 3. | रामालो बूक वाचून जालो. | राम किताब पढ चुका. |
| 4. | तागेली चाय पीवनु जाली. | वह चाय पी चुका। |
| 5. | आतां तांगेली हिन्दी शिकून जातली. | अब वे हिन्दी सीख चुकेंगे। |
| 6 | तुमगेलो तो बूक चोवनु जालोवे ? | क्या, आप वह पुस्तक देख चु |
| 7. | तुमगेलें हें काम केन्ना करनु जातलें ?\| | तुम यह काम कब तक चूकोगे ? |
| 8. | तांगेलें उलौन जालें. | वे बोल चुके। |
| 9. | मागेलो काणि सांगून जाली. | मैं कहानी कह चुका। |
| 10. | रामालें हें बरप केन्ना बरवनु जातलें ? | राम यह चिट्ठी कब तक ि चुकोगे ? |

क्रिया की समाप्ति सूचित करने केलिये मुख्य क्रिया के पूर्वका कृदन्त के साथ 'जावुंक' क्रिया के भिन्न भिन्न कालों के रूप जोड दिये हैं। कर्म के लिंग, वचन के अनुसार क्रिया बदलती है। लेकिन अ कर्म लुप्त हो, तो क्रिया नपुंसकलिंग एकवचन में रहती है। कर्ता नपुं लिंग, संबन्ध कारक, एकवचन में रहता है। अगर वाक्य में कर्म रहे संबन्ध कारक में, विशेषण के समान कर्ता प्रयुक्त होता है।

'जावुंक' क्रिया के विभिन्न कालों के निषेधार्थ रूप ही इस ि के निषेधार्थ रूप हैं।

अ) निम्नलिखित वाक्यों की क्रियाओं के उपयुक्त समाप्तिबो क्रियारूपों का प्रयोग कीजिये :–

1. हांवें पुस्तक वाचलें.
2. ताणें खाण खालें (खेल्लें).

3. तो उदक पिलो (पिल्लो).
4. तो हांगा आयलो.
5. तांणी हे काम केलें.
6. तो बरप बरयतलो.
7. ते कदलार बैंसतले.
8. आमी दूकानां थाकून पुस्तक घेतले.
9. ती गीन्त म्हणता.
10. तुवें हें घर केन्ना काणु (काडून) घेतलें.?

आ) कोंकणी में अनुवाद कीजिये :–

1. हम हर रोज़ छे बजे खाना खा चुकते हैं ।
2. तुम्हारे आने से पहले हम काफ़ी पी चुके ।
3. वे यह काम कब कर चुकेंगे ?
4. वे हमारे घर से सामान ले जा चुके ।
5. क्या, तुम कोंकणी पढ चुके हो ?
6. वे पूरियाँ बना चुके ।
7. राम पाठ सीख चुका ।
8. सीता कब तक गीत गा चुकेगी ?
9. तुम यह चिट्ठी कब तक लिख चुकोगे ?
10. अध्यापक पाठ सिखा चुके ।

---

## पाठ 24

# आरंभबोधक सहायक क्रिया—'लगना'

| | |
|---|---|
| 1. तो काम करुंक लागता. | वह काम करने लगता है । |
| 2. ते बूक वाचुंक लागतात. | वे किताब पढने लगते हैं । |

| | | |
|---|---|---|
| 3. | सीता काणि सांगुंक लागतली. | सीता कहानी कहने लगेगी। |
| 4. | त्यो गींत म्हणुंक लागतल्यो. | वे गीत गाने लगेंगी। |
| 5. | तो फुटबाळ खेलुंक लागलो | वह फुट बल खेलने लगा। |
| 6. | तें चेरडूं रडुंक लागलें. | वह बच्चा रोने लगा। |
| 7. | राम हिन्दा भास शिकुंक लागला. | राम हिन्दी भाषा सी लगा है। |
| 8. | शारद कोंकणी उलौंचाक लागतली. | शारदा कोंकणी बोलने लगे |
| 9. | तो सूर पिवंचाक लागलो. | वह शराब पीने लगा। |
| 10. | चेरडूवां धारार धारार चमकुंक लागलीं. | बच्चे जल्दी जल्दी चलने ल |

काम के प्रारंभ को सूचित करने केलिये मुख्य क्रिया के साध रूप के साथ 'लागुंक' क्रिया के विभिन्न काल के रूप जोड दिये जाते सहायक क्रिया 'लागुंक' के रूप ही- कर्ता के लिंग, वचन, पुरुष के अन् बदलते हैं।

'लागुंक' क्रिया के विभिन्न काल के निषेधार्थ रूप ही इस क्रिय निषेधार्थ रूप हैं।

अ) 'लागुंक' क्रिया के उपयुक्त रूपों का प्रयोग करके व पूरा कीजिये :-

1. काल सकाळिं थाकून तो काम करुंक — ।
2. ते एकमेकाक सोवंचाक — .
3. तूं हें पुस्तक केन्ना वाचुंक — ?
4. सीता फाय थाकून कोंकणी शिकुंक — .
5. ते सम्मेळनांत मलवारी भासेन उलौंचाक — .

6. तें चेरडूं रडुंक — .
7. आमी देशाचे खातिर काम करुंक — .
8. आतां सामानांक मोल चडुंक — .
9. तो काल थाकून दूद पिवचांक — .
10. पुलिसांक देकून चोर धावंचाक — .

आ) कोंकणी में अनुवाद कीजिये :-

1. वह कल से यह काम करने लगेगा ।
2. अध्यापक विद्यार्थियों को पाठ पढाने लगा ।
3. लडकी भूख और प्यास के मारे रोने लगी ।
4. क्या, तुम आजकल समाचार पत्र पढने लगे हो?
5. कल शाम से ज़ोर से पानी बरसने लगा ।
6. हम कल से कोंकणी में बोलने लगेंगे ।
7. चोर को देखकर कुत्ता भूंकने लगा ।
8. क्या, वह हिन्दी सीखने लगा है?
9. अब उसकी बहन गीत गाने लगी है ।
10. बचपन से ही शिवाजी मातृभूमि को प्यार करने लगे थे ।

---

## पाठ 25

# उक्ति भेद

| | |
|---|---|
| तो फाय गोआक वतलो म्हण रामान माका सांगलें. | राम ने मुझसे कहा कि वह कल गोवा जायगा । |
| तूं मद्रासाक वतलो म्हण ता सांगत लो. | वह कहता था कि तुम मद्रास जाओगे । |
| तूं कोंकणी शिकतलोवे म्हण सातेक (सीतेलागी) निमंग. | सीता से पूछो कि क्या, तुम कोंकणी सीखोगी? |

| | |
|---|---|
| 4. माका भूक लागली खंय चेरडू सांगता. | बच्चा कहता है कि मुझे भू लगी है । |
| 5. ताका भूक लागली खंय चेरडू सागंता. | बच्चा कहता है कि उसको भू लगी है । |

उक्ति प्रकाश के दो भेद हैं--प्रत्यक्ष उक्ति और परोक्ष उक्ति कोंकणी में परोक्ष उक्ति का प्रयोग होता है। इसमें 'उक्ति' वाक्य पह आता है और मुख्य उपवाक्य बाद में आता है। योजक 'म्हण' या 'खं (कि) का प्रयोग दोनों वाक्यों के बीच में आता है। या तो उक्ति वाव ज्यों का त्यों रहता है या अन्य पुरुष में रहता है।

अ) निम्न-लिखित 'प्रत्यक्ष उक्ति' वाक्यों को 'परोक्ष उक्ति' वाक्य में बदलकर लिखिये :–

1. रामान जॉणाक सांगलें—"तूं फाय मागेल्या घराक यो."
2. गोविन्दान माका सांगलें—"आज मागेलो पूत मद्रामाक बतलो"
3. सीतेन विचारलें—"तुगेलो भाउ आतां खंथंय आसा ?"
4. बापान म्हळ्ळें—"तूं वचून दूकानां थाकून पुस्तक हाडि."
5. शारदान रेणुकाक सांगलें—"आज थाकून हांव कोंकणी शिकु वतलीं."

आ) कोंकणी में अनुवाद कीजिये :–

1. उसने मुझसे पूछा कि मैं कौन हूँ और मेरा घर कहाँ है ?
2. उससे पूछो कि उसके भाई को क्या चाहिये ?
3. अध्यापक कहता है कि विद्यार्थी क्लास में कोंकणी पढ रहा है
4. राम ने मुझसे कहा कि उसने अपनी गाडी बेच डाली है।
5. पिता ने पुत्रों से कहा कि अपने मददगारों को कभी न भूल चाहिये।
6. मालिक ने नौकरों को यह आदेश दिया कि तुम यह काम करो।

7. माता ने पुत्री से पूछा कि तुम अपना पाठ क्यों नहीं पढती हो ?
8. जॉण कहता है कि आज शाम को खेल नहीं होगा ।
9. भाई ने बहन से पूछा कि क्या तुम मद्रास जाना चाहती हो ?
10. मेरे दोस्त ने मुझसे कहा कि आज छुट्टी है, इसलिये स्कूल जाने की आवश्यकता नहीं ।

---

## पाठ 26

# जाणं' (जानता), 'नेणं' (नहीं जानता) - का प्रयोग

| | |
|---|---|
| 1. हांव तें कायरें जाणं. | मैं वह बात जानता हूँ । |
| 2. तो हांगा आयला म्हण तूं जाणंवे ? | तुम जानते हो कि वह यहाँ आया है । |
| 3. तो कोण म्हण हांव नेणं. | मैं नहीं जानता कि वह कौन है। |
| 4. तागेलें घर खंय म्हण तूं जाणंवे ? | तुम जानते हो कि उसका घर कहाँ है ? |
| 5. माका अंग्रेजी कळता. | मुझे अंग्रेज़ी मालूम है । |
| 6. तिका ही भास कळना. | उसको यह भाषा नहीं मालूम । |
| 7. तूं हांगाचो न्हय म्हण ताका कळतावे ? | क्या उसको मालूम है कि तुम यहाँ के नहीं हो ? |
| 8. रामाक ती भास कळताली. | राम को वह भाषा मालूम थी । |
| 9. तूं आज ताका देखतलो म्हण तो नेणं. | वह यह नहीं जानता कि आज तुम उससे मिलोगे । |
| 10. हांव तुगेल्या घराक आयलां म्हण तो जाणं जालो. | उसने जाना कि मैं तुम्हारे घर आया हूँ । |

उपर्युक्त वाक्यों में 'जानना' के अर्थ में 'जाणुंक' क्रिया का प्रयो हुआ है। 'नेणुंक' इसका निषेधार्थ रूप है। 'मालूम होना' के अर्थ कोंकणी में 'कळुंक' क्रिया का प्रयोग होता है। हिन्दी में 'जानना' औ 'मालूम होना'—इनके प्रयोग में जो अंतर है, वही कोंकणी में इनके प्रयो में है।

अ) 'जाणुंक', 'नेणुंक' और 'कळुंक'—इन क्रियाओं के उपयुक्त का के रूपों से रिक्त स्थानों को भरिये :–

1. तुमकां कोंकणी —?
2. ते हांगा येतले म्हण तुमी कशी —?
3. तीं कायरीं माका काल — .
4. तो तुगेलो भाउ म्हण हांव — —?
5. तें कोणालें घर म्हण हांव — .
6. तूं तागेलें घर —?
7. तुका कोंकणी —?
8. गान्धीजीलें भाषण केन्ना आसतलें म्हण तूं —?
9. तांकां तांगेली भास — .
10. रामाक अंग्रेज़ी — .

आ) कोंकणी में अनुवाद कीजिये :–

1. हम को मालूम नहीं है कि वह यहाँ कब आयेगा।
2. हम नहीं जानते कि वह कौन है और कहाँ से आ रहा है
3. वे जानते हैं कि राम का भाई आज मद्रास जायेगा।
4. क्या, तुमको कोंकणी मालूम है?
5. नहीं, मुझे कोंकणी मालूम नहीं है।
6. आप को कितनी भाषायें मालूम हैं?
7. कल वहाँ जाकर हम वह बात मालूम करेंगे।

8. तुम जानते हो कि वह परीक्षा में पास हो गयी है?
9. मैं नहीं जानता ।
10. हमने कुछ नही जाना ।

---

पाठ 27

# जब....तब का प्रयोग

| | |
|---|---|
| 1. जेन्ना तूं सिनेमाक वता तेन्ना माका इत्याक उळदोना (उळदना). | जब तुम सिनेमा जाते हो तब मुझे क्यों नहीं बुलाते ? |
| 2. जेन्ना ते ह्रांगा आयले तेन्ना तूं खंय गेलली (गेलांलो). | जब वे यहाँ आये तब तुम कहाँ गये थे ? |
| 3. जेन्ना हांव घराक पावलों तेन्ना पावस पडुंक लागलो. | जब मैं घर पहुँचा तब पानी बरसने लगा । |
| 4. जेन्ना चोरानी पुलीसांक देकले तेन्ना ते धावन गेले. | जब चोरों ने पुलीसों को देखा तब वे दौड गये । |
| 5. जेन्ना हांव तुगेल्या घरकडे आयलों, तेन्ना तूं खंय आसलो. | जब मैं तुम्हारे घर आया, तब तुम कहाँ थे ? |

समय को सूचित करनेवाले क्रियाविशेषण वाक्य 'जेन्ना' से शुरू होता है और 'तेन्ना' से खतम होता है ।

अ) निम्न-लिखत वाक्यों को "जेन्ना....तेन्ना" का प्रयोग कर जोडकर लिखिये :–

1. हांव घराक वतालों; तो खेळ चोवन येतालो.
2. हांव स्कूळांत वतां; वाटेर सूणें भोकंता.
3. ते हांगा आयले; आमी हांगा नासले.
4. तुवें माका देकलो; हांव खेळुंक वतालों.
5. हांव घराक पावलों; पावस पडुंक लागलो.

आ) कोंकणी में अनुवाद कीजिये :–

1. जब लडकों ने मुझे देखा तब वे हंस पडे ।
2. जब तुम खाना खाने जाते हो, तब मुझे भी साथ लो ।
3. जब सीता यहाँ आयी, तब तुम कहाँ गये थे ?
4. जब हम घर पहुँचे तब बच्चे रोने लगे ।
5. जब लडका चिल्लाया तव किसान दौड आये ।
6. जब शाम हुई तब बच्चे घर वापस आये ।
7. जब तुम दफ़्तर जा रहे थे तब रास्ते में किसको देखा ?
8. जब घर में चोर आये, तब कुत्ते भूँकने लगे ।
9. जब उसको समझाया, तब वह समझ गया ।
10. जब हम उनसे मिलने गये, तब वे घर पर नहीं थे ।

---

## पाठ 28

# जो....वह का प्रयोग

| | | |
|---|---|---|
| 1. | जो चेलो कोंकणी शिकता तो आमचेगेलो न्हय. | जो लडका कोंकणी सीखता वह हमारी जाति का नहीं है |
| 2. | जे मनोश हांगा रावतात ते भो गरीब आसात. | जो मनुष्य यहाँ रहते हैं वे बहु गरोब होते हैं । |

| | |
|---|---|
| जो बायल काल हांगा आयलो ती मागेली भयणि. | जो स्त्री कल यहाँ आयी, वह मेरी बहन है। |
| जें पेनान तूं बरयता, तें कोणालें ? | जिस कलम से तुम लिखते हो, वह किसकी है ? |
| जाणें हें पुस्तक वाचलें, तो खंय गेलो ? | जिस ने यह पुस्तक पढी वह कहाँ गया ? |
| जांणी कोंकणी शिकली, ते आज हांगा आयलेनात. | जिन्होंने कोंकणी सीखी है, वे आज यहाँ नहीं आये हैं। |

कोंकणी में विशेषण वाक्य 'जो' से शुरू होता है और 'तो' से तम होता है।

अ) 'जो' का प्रयोग कीजिये :–

1. तागेलें नांव भीम; तो भो सुकल्लो.
2. एक मनीश काल हांगा आयलो; तो आज मेलो.
3. ह्या घरांत ती रावतात; तांगेलें काम कितें ?
4. तांचे लागि रुपया आसले; ते तांणी वेच केले.
5. तुवें काल एक पुस्तक हाळ्ळें; तें कोणें बरयल्लें.

आ) कोंकणी में अनुवाद कीजिये :–

1. जो बूढा कल मेरे घर आया, वह आज मर गया।
2. जिस औरत को तुम ने कल देखा, वह मेरी बहन है।
3. जो पुस्तक तुम ने खरीदी, उसका मूल्य (दाम) क्या है ?
4. जो लड़कियाँ गाती हैं, वे यहाँ की नहीं हैं।
5. जो कुरसियाँ तुम लाये, उनको कल ले जाओ।
6. जो लड़का कल यहाँ आया, उसको तुम जानते हो।
7. जो काम तुम ने किया, वह और कोई नहीं कर सकता।

8. जो तुम्हारी मदद करता है, उसको कभी न भूलो ।
9. जो कल तुम्हारे साथ आया, वह मेरे भाई का दोस्त है ।
10. जिस आदमी को तुमने परसों देखा था, उसने तुम से क्या कहा

---

### पाठ 29

# प्रेरणार्थक क्रियाएँ

| | | |
|---|---|---|
| 1. | हें बावलें रायान करैवैलें. | यह पुतली राजा ने बनवा (करवायी) । |
| 2. | हें दूद चेरकाक पीवै. | यह दूध बच्चे को पिलाओ । |
| 3. | तें पाठ तांचेकरान वाचैवै. | वह पाठ उनसे पढवाओ । |
| 4. | तो मास्टर आमकां कोंकणी शिकैता. | वह मास्टर हम को कोंक सिखाता है । |
| 5. | मास्टर शिष्याकरान चेरडुं-वांक शिकैवैता. | मास्टर शिष्य से बालकों क सिखवाता है । |
| 6. | ताणें आज माका खूब खाण खावैलें. | उसने आज मुझे खूब (खाना खिलाया । |
| 7. | रामाक पेटौन ताका हांगा आपैवै. | राम को भेजकर उसको य बुलवावो । |
| 8. | तांचेकरान हें बरप बरैवै. | उनसे यह चिट्ठी लिखवावो । |
| 9. | ताका तो बूक दीवै. | उसको वह किताब दिलाओ । |
| 10. | दूकानां थांकून चार आंबे हाडैवै. | दूकान से चार आम मंगवावो |

उपर्युक्त वाक्यों में रेखांतिक शब्द प्रेरणार्थक क्रियाएँ हैं।

मूल धातु के साथ 'ए' या 'वैं' लगाकर प्रेरणार्थक धातु बनायी जाती । जहाँ कर्ता स्वयं न करके किसी दूसरे को करने की प्रेरणा देता है वहाँ णार्थक क्रिया का प्रयोग होता है। प्रेरित कर्ता के साथ 'करान' (से) यय जोड दिया जाता है।

इन क्रियाओं का प्रयोग सभी कालों और अर्थों में नियमानुसार ता है।

**वना :** कोंकणी में अकर्मक धातु के साथ 'ऐं' (अय) जोडने पर सकर्मक धातु बनती है, सकर्मक धातु के साथ 'ऐं' (अय) जोडने पर द्विकर्मक धातु (पहली प्रेरणा) बनती है और 'वैं' जोडने पर पूर्ण प्रेरणार्थक धातु बनती है।

दा :

| अकर्मक धातु | सकर्मक धातु |
|---|---|
| बैंस – बैठ | बैंसैं (बैंसय) – बैंठा |
| राव – खडा रह | रावैं (रावय) – खडा कर |
| चमक – चल | चमकैं (चमकय) – चला |
| रड – रो | रडैं (रडय) – रुला |
| हास – हंस | हासैं (हासय) – हंसा |
| खेळ – खेल | खेळैं (खेळय) – खेला |

| सकर्मक धातु | द्विकर्मक धातु (पहली प्रेरणा) |
|---|---|
| कर | करैं |
| शिक | शिकैं |
| सोड | सोडैं |

'आ', 'ई', 'ऊ', और 'ऐ' कारान्त सकर्मक धातुओं के द्विकर्मक प नहीं होते।

दा :– खा, पी, धू, घे, बरैं, उलैं, आपैं, कालैं, दाकैं आदि।

कुछ क्रियाओं के प्रेरणार्थक रूप नीचे दिये जाते हैं :–

| मूलधातु | प्रेरणार्थक धातु | वर्तमानकाल |
|---|---|---|
| कर | करै (करय) | करैता (करयता) |
| दंवं | दंवैं (दंवय) | दंवैंता (दंवंयता) |
| चड | चडै (चडय) | चडैता (चडयता) |
| बेंस | बेंसै (बेसय) | वैसैता (बेसयता) |
| सोड | सोडै (सोडय) | सोडैता (सोडयता) |
| जेव | जेवै (जेवय) | जेवैता (जेवयता) |
| मार | मारै (मारय) | मारैता (मारयता) |
| जिक | जिकै (जिकय) | जिकैता (जिकयता) |
| चाब | चाबै (चाबय) | चाबैता (चाबयता) |
| लेवं | लेवैं (लेवंय) | लेवैंता (लेवंयता) |
| उब | उबै (उबय) | उबैता (उबयता) |
| जळ | जळै (जळय) | जळैता (जळयता) |
| वांट | वांटै (वांटय) | वांटैता (वांटयता) |
| वाट | वाटै (वाटय) | वाटैता (वाटयता) |
| दळ | दळै (दळय) | दळैता (दळयता) |
| व्हर | व्हरै (व्हरय) | व्हरैता (व्हरयता) |
| शिक | शिकै (शिकय) | शिकैता (शिकयता) |
| खा | खावै (खावय) | खावैता (खवयता) |
| पी | पीवै (पिवय) | पीवैता (पीवयता) |
| दी | दीवै (दोवय) | दीवैता (दीवयता) |
| धू | धूवै (धूवय) | धूवैता (धूवयता) |
| घे | घेवै (घेवय) | घेवैता (घेवयता) |
| बरै | बरैवै (बरैवय) | बरैवैता (बरैवयता) |
| उलै | उलैवै (उलैवय) | उलैवैता (उलैवयता) |
| आपै | आपैवै (आपैवय) | आपैवैता (आपैवयता) |
| कालै | कालैवै (कालैवय) | कालैवैता (कालैवयता) |
| दाकै (दाखै) | दाकैवै (दाकैवय) | दाकैवैता (दाकैवयता) |

वाद :

| | | |
|---|---|---|
| भी | भिसटाय (भिसराय) | भिसरायता |
| उठ | उठकराय | उठकरायता |
| धांव | धांवडाय | धांवडायता |
| घुंव | घुंवडाय | घुंवडायता |
| भोंव | भोंवडाय | भोंवडायता |

अ) उपर्युक्त प्रेरणार्थक क्रियारूपों से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिये :–

1. राम दर्जीकरान चोगो — .
2. आवय चेरडाक दूद — .
3. मास्टर विद्यार्थियांक कोंकणी — .
4. हांवें तागेल्या पुताकरान कोंकणी — .
5. घरकारानि मडवळाकरान आंगवालें — .
6. ताणें आज ताजेकरान खीर — .
7. तांणी चोरांक पोलीसाच्या हाथां थाकून — .
8. शारदान तिगेल्या भावाक बस्सार थाकून — .
9. ताणें चोराक पोलीसाकरान — .
10. तुमी कळकांत चेरडुवांक इत्याक — ?

आ) कोंकणी में अनुवाद कीजिये :–

1. यह चिट्ठी राम से पढवाइये ।
2. आप मुझे हिन्दी सिखाइये ।
3. सीता ने दरजी से कपडा सिलवाया ।
4. हमारे कपडे अच्छे धोबी से धुलवाओ ।
5. बच्चों को रात को जल्दी सुलाओ ।
6. बीमारों को दवा पिलाओ ।
7. वह नोकर को बुलवाता है ।
8. आज इस घोडे को न दौडाना चाहिये ।
9. राम का भाई मोटरकार चलाना जानता है ।
10. उसने चिट्ठियाँ किससे लिखवायी ?

---

## पाठ 30

# विशेषणों की तुलना

| | | |
|---|---|---|
| 1. | राम गोपालापासि (गोपालाचे पासि) वायटु. | राम गोपाल की अपेक्षा (से<br>बुरा (है) । |
| 2. | गीता सीतेपासि प्रायेन सान (सानि). | गीता सीता से उम्र में छो<br>(है) । |
| 3. | ह्या घराचेकूय (चेकय) तें घर चांग. | इस घर से वह घर अच्छा (है |
| 4. | हो ताजेकूय दीग (दीगु). | यह उससे लंबा (है) । |
| 5. | तो तुजेकय बुधवन्त. | वह तुम से बुद्धिमान (है) । |
| 6. | हांगा चेकूय थांगा चिन्ना. | यहाँ की अपेक्षा वहाँ अच्छा (है |
| 7. | कायळ्याचकय बुद्धि कायळ्या पिल्लाक. | कौए की अपेक्षा कौए का बच<br>बुद्धिमान (है) । |
| 8. | घरापासि चड जोगि. | घरों से ज़्यादा भिखमंगे । |
| 9. | नांकापासि व्हड मतीं. | नाक से बड़ा नत्थ (है) । |
| 10. | वेगळ्याल्या दांतापासि तांगतांगेलें मुडिब चांग. | दूसरों के दान्तों की अपेक्ष<br>अपना मसूडा ही अच्छा । |

जिस वस्तु के साथ तुलना की जाती है, उसके साथ पासि, क (कय), और चेकूय (चेकय) जोडकर तुलना प्रकट की जाती है । अव्यय संज्ञा, सर्वनाम और क्रिया विशेपण के साथ जोड दिये जाते है विशेपण के पूर्व 'चड' लगाकर तुलना की चरम अवस्था प्रकट की जाती है

अ) कोंकणींत भासांतर करा :-

1. तुम्हारा नौकर मेरे नौकर से बुरा है ।
2. दाना दुश्मन बेवकूफ़ दोस्त से अच्छा है ।
3. यह केला सबसे मींठा है ।
4. यह आम उस इमली से खट्टा है ।
5. मेरी बहन की सवसे छोटी लडकी तीसरे दर्जे में पढती है ।
6. अध्यापक ने उस विद्यार्थी को सबसे अधिक अंक दिये ।
7. सिमला ऊट्टी से ठंडी है ।
8. उसकी किताब मेरी किताब से छोटी है ।
9. कोचोन की अपेक्षा मद्रास अधिक गरम है ।
10. यह घोडा उस कुत्ते से तेज़ दौडता है ।

---

## पाठ 31

# भाववाचक कृदन्त

| | | |
|---|---|---|
| 1. | दिसपरतें सकाळिं ताणें ऊणे तीन मैंल <u>चमकप</u> आसा. | रोज़ सबेरे वह कम से कम तीन मील टहलने जाता है । |
| 2. | तांकां <u>शिकवप</u> मास्टरालें काम न्हय. | उनको सिखाना मास्टर का काम नहीं । |
| 3. | तागेलें <u>उलवप</u> आयकून आमी थांगा गेले. | उसका बोलना सुनकर हम वहाँ गये । |
| 4. | तागेलें <u>पडप</u> देखून माका भय जालें. | उसका लेटना देखकर मैं डर गया । |
| 5. | वाजप्यालें <u>वाजप</u> आयकून आमकां खुशी जाली. | बजवैये का बजाना सुनकर हमको खुशी हुई । |

ऊपर के वाक्यों के रेखांकित शब्द भाववाचक कृदन्त हैं। के साथ 'प' लगाकर कोंकणी में भाववाचक कृदन्त बनाया जाता है।

अ) निम्न-लिखित धातुओं के भाववाचक कृदन्त रूपों का प्रयोग क वाक्य बनाइये :–

खा, पी, भर, हाडि, बरै, घे, रांद, वाच.

आ) कोंकणींत भासान्तर करा :–

1. अपरिचितों के सामने हँसना अच्छा नहीं है।
2. क्या, रोज तुम स्नान करते हो?
3. राम रोज़ खेलता है।
4. उनका खाना पकाना ठीक नहीं हुआ।
5. क्या, तुम ने उनका गायन सुना है?
6. क्या, तुम कोंकणी बोलते हो?
7. वह रोज़ अपना काम करता है।
8. शराब पीना बुरी आदत है।
9. उसके घर में रोज़ रामायण का पारायण होता है।
10. दिन में सोना बुरा है।

---

## पाठ 32

# कर्तृवाचक कृदन्त

| | |
|---|---|
| 1. रान्दपी रान्दुक आयला. | बावर्ची खाना पकाने आया |
| 2. पोवंपो उदकांत पोवंता. | तैराक पानी में तैरता है। |
| 3. बरौपो (बरवपी) लेखन बरंता (बरयता). | लेखक लेख लिखता है। |

| | |
|---|---|
| खावपी निंदेक पात्र जाता. | पेटू निन्दा का पात्र बनता है। |
| पिवपी समाजाक कलंक हाडता. | पियकड समाज को कलंक लाता है। |

उपर्युक्त वाक्यों में रेखांकित शब्द कर्तृवाचक कृदन्त है। धातु के 'पी'* लगाकर कोंकणी में कर्तृवाचक कृदन्त के रूप बनाये जाते हैं। के द्वारा धातुज शब्द से कर्तृत्व का बोध होता है।

अ) निम्न-लिखित धापुओं के कर्तृवाचक कृदन्त रूपों का प्रयोग करके वाक्य बनाइये :–

खण, मार, सांग, दी, खेळ, कर, वाच, वाज, वाट, घे.

आ) कोंकणींत भासांतर करा :–

1. बावर्ची खाना पकाता है।
2. खोदनेवाला मिट्टी खोदता है।
3. लेखक पुस्तक रचता है।
4. शराबी शोर मचाता है।
5. गवैया गीत गाता है।
6. परोसनेवाला परोसता है।
7. पेटू खूब खाता है।
8. कहनेवाले ने कहा, सुननेवाले ने सुना।
9. देनेवाला देगा, लेनेवाला लेगा।
10. तैराक समुन्दर में दो मील तक तैर चुका।

---

*किसी किसी धातु के साथ 'गो', 'गी', 'पेली' उपसर्ग लगाकर भी ये रूप बनाये जाते हैं। जैसे :– खावगो, खाविगी, खावपेली – पेटू
पिवगो, पिवगी, पिवपेली – पियक्कड

पाठ 33

# शब्दों की पुनरुक्ति - I

| | | |
|---|---|---|
| 1. | तुमी चांग चांग पुस्तकां वाचा. | आप अच्छी अच्छी पु पढिये । |
| 2. | ही चींच आंबूस आंबूस आसा. | यह इमली ज़्यादा खट्टी है । |
| 3. | बाजारां थाकून गोड गोड आम्बे हाडका. | बाजार से मीठे मीठे आम ल चाहिये । |
| 4. | मुखार मुखार चमक. | आगे आगे चलो. |
| 5. | संत संत उलय. | आहिस्ते आहिस्ते बोलो । |
| 6. | व्हड व्हड शब्द करनाका. | ज़ोर से शोर मत मचाओ । |
| 7. | दन्देल्याक तीन तीन रुपया दी । | मजदूरों को तीन तीन रुपये |
| 8. | एक एक थेंब्यान कळसो भरता. | बूंद बूंद से घडा भरता है । |
| 9. | चार चार करून मय. | चार चार करके गिनो । |
| 10. | सं सं मासीं परीक्षा आसतली. | हर छे महीने परीक्षा होगी |

उपर्युक्त वाक्यों में रेखांकित शब्द या तो विशेपण है या विशेपण हैं। अर्थ पर ज़ोर देने के लिये इनकी आवृत्ति हुई है। संख्यावाचक विशेपण की आवृत्ति द्वारा प्रत्येक बोधक की सूचना दी जाती

अ) हिन्दींत भासान्तर करा :-

1. तो घरानघर भीख मागता.
2. ते केन्नाय सान सन कायरीं करतात.
3. खं : खंय हांव वतां, थंय थंय तेवय माजे लागी येतात.
4. जेन्ना जेन्ना तो गोयांत येता, तेन्ना तेन्ना तो मागे थंय रावता.
5. चमकून चमकून ताका पूरो जालें.

आ) कोंकणींत भासान्तर करा :-

1. समाज में बडे बड़े आदमियों का आदर होता है ।
2. नेताजी के पीछे पीछे चलो ।
3. थोडा थोडा पिओ ।
4. जोर जोर से मत बोलो ।
5. उनको दो दो रुपये दो ।
6. एक एक करके वे अन्दर आयेंगे ।
7. वे बाज़ार से मीठे मीठे फल लाते हैं ।
8. आज सबेरे यहाँ कौन कौन आये थे ?
9. मैं ने उनको पाँच पाँच पैसे दिये ।
10. खाना खाकर वे अपने अपने घर चले गये ।

---

## पाठ 34

# शब्दों की पुनरुक्ति - II

| | |
|---|---|
| 1. वाचून वाचून कितें करतलो ? | पढ पढकर क्या करेगा ? |
| 2. खावनु खावनु पोट भरलें. | खा खाकर पेट भर गया । |
| 3. बैसून बैसून ते कुरवंले. | बैठे बैठे वे ऊंघ गये । |

| | |
|---|---|
| 4. तो <u>धावंतां</u> <u>धावंतां</u> गरगडेवन पळ्ळो (पडलो). | दौडते दौडते वह गिर पडा । |
| 5. दूद <u>पितां</u> <u>पितां</u> चेरडूं निदलें (निदेलें). | दूध पीते पीते बच्चा सो गय |
| 6. तूं <u>वाचतां</u> <u>वाचतां</u> कित्याक कुरवन्ता ? | तुम पढते पढते क्यों ऊँघते ह |

वर्तमानकालिक कृदन्त के साथ 'आं' लगाकर कोंकणी में अ
क्रियाद्योतक कृदन्त का रूप बनाया जाता है। इसका प्रयोग अव्यय
समान है। ऊपर के वाक्यों में रेखांकित शब्द अपूर्ण क्रियाद्योतक कृदन्त
वाक्य में इसकी आवृत्ति से क्रिया के करते रहने का बोध होता है।
के वाक्यों में वाचून, खावनु और बैसून पूर्वकालिक कृदन्त हैं। इ
पुनरुक्ति से क्रिया के कई बार करने का बोध होता है।

अ) <u>हिन्दींत भासान्तर करा :–</u>

1. चमकून चमकून म्हाल्लो गोपरांत पावलो.
2. गडगडेवनु गडगडेवनु पंडित तळये मेटार पावलो.
3. खतां खातां ताका ढेंक आयलो.
4. शिकतां शिकतां तो कुरवंलो.
5. व्हडान उलौन उलौन ताजो ताळो भेतलो.
6. धावून धावून हो खरसेलो.

आ) <u>कोंकणींत भासांतर करा :–</u>

1. घर पहुँचते पहुँचते रात हो गयी।
2. खाते खाते शीला सो गयी।
3. देखते देखते दिन बीत जाता है।
4. शराब पी पीकर वह सब गवाँ बैठा।
5. रास्ते पर चलते चलते वे बात कर रहे थे।

6. दौडते दौडते हम पसीने से नहा गये ।
7. दूसरों को पैसा उधार दे देकर वह गरीब हो गया ।
8. मार मारकर तुम ने सांप को मार डाला ।
9. मतिमंद पढ पढकर मतिमान हो जाता है ।
10. वे खा खाकर मोटे हो गये ।

---

## पाठ 35

# पूर्वकालिक कृदन्त (संज्ञा के रूप में)

| | |
|---|---|
| तूं मास्टराक वाचून आयकय. | तुम मास्टर को पढकर सुनाओ । |
| तो आमकां नाचून दाखैता. | वह हमें नाच दिखाती है । |
| ते उदकांत पोवन शिकतात. | वे पानी में तैरना सीखते हैं । |
| तांगेलें खावन जालें. | वे खा चुके । |
| मागेलें शिकून जालें. | मैं सीख चुका । |

उपर्युक्त वाक्यों के रेखांकित शब्द पूर्वकालिक कृदन्त हैं । ये संज्ञा रूप में—क्रिया के कर्ता या कर्म के रूप में प्रयुक्त हुए हैं । तब ये पुंल्लिंग एकवचन में रहते हैं । इनके साथ प्रत्यय जोडे नही जाते ।

अ) हिन्दींत भासान्तर करा :–

1. हांव हें ओखद एक घोट्टान पीवन दाखैन.
2. तुगेलो हो बूक वाचून जालो ?
3. तो थोण्टो हांगा चमकून आयला.
4. तू एक गींत म्हणून (म्हणु) आयकय.
5. सान चेरडूं सन्त चमकून शिकता.

अ) <u>कोंकणींत भासांतर करा :-</u>

1. लडका हिन्दी लिखकर सीखता है ।
2. सीता गीत गाती आती है ।
3. वे मुस्कुराते बोले ।
4. मैं घूमता हुआ घर पहुँचा ।
5. तुम मास्टर को पाठ पढकर सुनाओ ।
6. वे पाठ लिखकर दिखाते हैं ।
7. क्या, तुम यह काम कर चुके हो ।
8. वे लेख लिख चुके हैं ।
9. सीता चित्र खींच चुकी है ।
10. क्या, आप कोंकणी सीख चुके हैं ?

---

## पाठ 36

# कालवाचक क्रियाविशेषण वाक्यांश

| | |
|---|---|
| 1. हांवें चीट बरैतासताना (बरेयताना, बरेयतना) तो आयलो. | मेरे चिट्ठी लिखते समय आया । |
| 2. चेली धावंतासताना (धावंताना, धावंतना) पळ्ळी (पडली). | दोडते समय लडकी गिर |
| 3. रामान वाचतासतना तूं ताका कित्याक उल्लो मारता (उलदीता) ? | राम के पढते समय, तुम क्यों बुलाते हो ? |

| | |
|---|---|
| पिकली खोल्ली पडतासताना हरवो खोल्ली हसता. | पीला पत्ता झडता है, हरा पत्ता हंसता है । |
| तूं वतर (वतरि) तो येतलो. | तुम्हारे जाने पर वह आयेगा । |
| तूं वतच तो येतलो. | तुम्हारे जाने पर वह आयेगा । |
| ताका देखतर सांग (ताका देखतच सांग). | उसको मिलने पर कहो । |
| दाय आसतना हात लासका कित्याक ? | चमच के रहते, हाथ क्यों जलाया जाय ? |
| धूरा आसतना डंगरु लानु (लान). | दूर रहते पहाड छोटा (दिखाई पडता है) । (दूर के ढोल सुहावने ।) |
| हावें खेळच्या वेळार तो आयलो. | मेरे खेलते समय वह आया । |

धातु के साथ 'अतना' (अताना) जोडकर और वर्तमानकालिक दन्त के साथ 'आसतना' (आसताना) जोडकर कालवाचक क्रियाविशेषण क्यांश की क्रिया बनायी जाती है । वर्तमानकालिक कृदन्त के साथ 'र' र 'च' जोडकर भी क्रियाविशेषण वाक्यांश की क्रिया का रूप बनाया ता है ।

अ) निम्नलिखित क्रियाविशेषण उपवाक्यों का क्रियाविशेषण वाक्यांश के रूप कोंकणी में लिखिये :–

1. जब तुम आ रहे थे, तब वह कहां जा रहा था ?
2. जब तुम उससे मिलोगे, तब यह चिट्ठी उसे दे दो ।
3. जब वह सीखता है, तब शोर मत करो ।
4. जब खाना खाते हो, तब पानी नहीं पिओ ।
5. जब दो आदमी बोलते हैं, तब उनके बीच (मत) न बोलो ।

आ) कोंकणींत भासांतर करा :-

1. जब तुम्हारे हाथ का पैसा खर्च होता है, तब तुम मुझसे मांगो ।
2. जब मनुष्य का पुण्य खतम होता है, तब वह फिर मनुष्य में जन्म लेता है ।
3. दौडते समय उसको खांसी आयी ।
4. क्या, आते समय तुम ने मेरे भाई को देखा ?
5. मेरे चिट्ठी लिखते समय वह कमरे में आया ।
6. स्याही खतम होने पर कलम में स्याही भरो ।
7. अपने घर पहुँचने पर तुम को एक पत्र लिखना चाहिये ।
8. खाना खाने से भूख मिटती है ।
9. उनके आने पर मुझे पता दो ।
10. बच्चे के सोने के बाद माँ ने जाकर खाना खाया ।

---

## पाठ 37

# धातुविशेषण

(वर्तमानकालिक व भूतकालिक कृदन्त और धातु–विशेषण के रूप

| | | |
|---|---|---|
| 1. | खेळतल्लो (खेळचो) चेलो रडून (रणु) गेलो. | खेलता लड़का रोकर गया । |
| 2. | धावंतल्लो (धांवचो) चेली गरगडेवन पळ्ळी (पडली). | दौड़ती लडकी गिर पडी । |
| 3. | तुवें बरवचें बरप तो वाचता. | तुम्हारे लिखते पत्र (जो तुम लिखते हो वह) वह पढता |

| | |
|---|---|
| तो वतलो (बचो) मनीश फाय हांगा येतलो. | वह जाता आदमी कल यहाँ आयेगा । |
| धावंतल्या गाडीर थाकून चेरडूं खाल पळ्ळें (पडलें). | चलता गाडी से बच्चा नीचे गिरा । |
| भोंकुचें सूणें चाबना. | भूंकता कुत्ता नहीं काटता है । |
| ती गोंत म्हणतल्लो बायल रामाची भयण. | वह गाता हुई (गानेवाली) औरत राम की बहन है । |
| रोडच्या बायलेकय हासच्या दादल्याकय पातेव न्हयें. | रोती औरत को और हंसते मर्द को पतियाना नहीं चाहिये । |
| तो मेल्लेलो चेडी रामाली धूव. | वह मरी लडकी राम की पुत्री (है) । |
| थू केल्लेलें हातार काडुंक नजो. | थूक को हाथ पर मत उठाओ । |

धातु के साथ 'त' और 'ल' लगाकर कोंकणी में क्रम से वर्तमान-लिक व भूतकालिक कृदन्त बनाते हैं। वर्तमानकालिक कृदन्त के साथ -ल्ली-ल्लें; ल्ले-ल्यो-ल्लीं जोडकर और भूतकालिक कृदन्त के लो-लो-लें; ले-ल्यो-लीं जोडकर और धातु के साथ चो-ची-चें; च्यो-चीं जोडकर कोंकणी में धातुविशेषण बनाये जाते हैं जो विशेषण विशेषण वाक्य के काम देते हैं। इनमें धातु के साथ 'चें' जोडकर रूप बनाया जाता है वह क्रियार्थक संज्ञा का भी काम देता है।

:– 1. ताका आज थांगा वचें आसा.
उसको आज वहाँ जाने को है।

2. तुवें थांगा वचें कितें जालें ?
तुम्हारा वहाँ जाना क्या हुआ ?

3. केन्नाय सत्य सांगचें आमकां चांग.
हमेशा सच बोलना हमारे लिये अच्छा (है)।

अ) उपर्युक्त क्रियाओं के धातुविशेषण रूपों से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिये :–

1. आम्बो — काल हांगा आयललों.
2. ती — बायल त्या चेरडाची आवसु.
3. हांगा वाचुक बरौंचाक — कोण कोण आसात ?
4. कोंकणी — तुमकां बरें.
5. — घरां थांकून तो भायर आयलो.
6. — रायाक — मंत्री.
7. ताणें — चापाती — खाली (खेली).
8. हाणें — पुस्तक तुवें कोणाक दिल्लें ?
9. — दीस परत येनात.
10. — खबर सांगुक नज.

आ) कोंकणींत भासांतर करा :–

1. सडी मछली को पकी इमली (चाहिये) ।
2. सोये को जगाया जाय (जा सकता है), मगर सोये से प...
   कौन जगा सकता है ?
3. बहते पानी में गंदगी कहाँ ?
4. चलती गाडी में न चढना ।
5. कल मरा आदमी मेरे दोस्त का नौकर था ।
6. भूँकते कुत्ते के मुँह में एकलव्य ने तीर चलाया ।
7. जो बहुत खाता है, उसे पेटू कहते हैं ।
8. जिसने यह काम किया, वह बडा होशियार होगा ।
9. जले पर नमक न छिडकाना ।
10. हाथी के दन्त खाने के और, दिखाने के और ।

## पाठ 38

# तात्कालिक कृदन्त

| | |
|---|---|
| उदक तोंडालागि व्हरुकच ताका ओंकारे येवंचाक लागले. | पानी मुंह के पास ले जाते ही कै होने लगी । |
| ताणें येवंचाकच हो चेडो पावलो. | उसके आते ही यह लडका पहुँचा । |
| जाप आयकुचाकच ताका कोप आयलो. | जवाब सुनते ही उसको क्रोध आया । |
| फालें जावंचाकच तो हांगा साकून गेलो. | सबेरा होते ही वह यहाँ से चला गया । |
| हांवें आसपतलांत पावंचाकच तो उट्टावनु बैसलो. | मेरे हस्पताल पहुँचते ही वह उठ बैठा । |
| पुलीसाक देखचाकच चोरु धावून गेलो. | पुलीस को देखते ही चोर दौड गया । |
| दूद पीवन जावंचाकच चेरडूं नीदलें (निद्देलें). | दूध पीते ही बच्चा सो गया । |
| नींद जावनु उट्टावंचाकच तो चाय पिल्लो. | नींद से जागतें ही उसने चाय पी । |

उपर्युक्त वाक्यों के रेखांकित शब्द क्रिया के तात्कालिक कृदन्त रूप क्रिया के इस रूप से वाक्य में मुख्य क्रिया के साथ होनेवाले व्यापार सी समय समाप्त होना पाया जाता है । क्रिया के साधारण रूप के

साथ 'च' जोडकर कोंकणी में तात्कालिक कृदन्त रूप बनाया जाता
इसका कर्ता हमेशा तृतीया विभक्ति में आता है।

अ) उपयुक्त किया के तात्कालिक कृदन्त रूप का प्रयोग करके
को मिलाकर लिखिये :–

1. पावस आयलो; तो घराक गेलो.
2. तो घराक आयलो; तो झगडें घालुक लागलो.
3. सूर्य उदेलो; तो भायर सरनु गेलो.
4. तो भांडीर साकून पळ्ळो; तागेलो पायु मोळ्ळो (मोडलो
5. धा वरांर तो निदेलो; ताका नीद पळ्ळी.
6. तो स वरार उट्टायता; कापी पिता.
7. राम हांगा आयलो; कदलार बैसलो.
8. ताणें बरप वाचलें; तागेलो भावु मेल्लो म्हण कळळें.
9. हांव घराक पावलों; माका ताप आयलो.
10. हांव कालेजान्त गेलों; धा वरां वाजलीं.

आ) कोंकणींत भासांतर करा :–

1. अंधेरा होते ही मैं जाकर उससे मिला।
2. पढाई खतम होते ही उसको नौकरी मिली।
3. अध्यापक के क्लास में आते ही विद्यार्थी उठ खडे हुए।
4. मेरे स्टेशन पहुँचते ही गाडी चली गयी।
5. घर से निकलते ही पानी बरसने लगा।
6. मद्रास से आते ही वे बीमार पडे।
7. कालेज में पहुँचते ही घंटी बजी।
8. गाडी में चढते ही ड्रायवर गाडी चलाने लगा।
9. हमारे शोर मचाते ही चोर भाग गये।
10. बंबई में जाते ही श्याम जाकर राम से मिला।

---

पाठ 39

# नामधातु व अनुकरणधातु

| संज्ञा | क्रिया | उदाहरण |
|---|---|---|
| ढुमको | ढुमकायता | राम ताका ढुमकायता. |
| मुक्का | मुक्का मारता है । | राम उसको मुक्का मारता है । |
| कोल्लो | कोल्लायता | तो माका कोल्लायता. |
| सियार | सियार मानता है । | वह मुझे सियार मानता है । |
| फातर | फातरायता | दामू सूण्याक फातरायता. |
| पत्थर | फत्थर मारता है । | दामू कुत्ते को फत्थर मारता है । |
| खीळो | खीळायता | गोपाळ पागार खीळायता. |
| कील | कील लगाता है । | गोपाल दीवार पर कील लगाता है । |

विशेषणों से या संज्ञाओं से जो धातु बनायी जाती है उसे नामधातु
हैं । ये सकर्मक और अकर्मक—दोनों हो सकती हैं ।

ऊपर के रेखांकित शब्द नामधातु के क्रिया रूप हैं । संज्ञाओं के
म स्वर को 'आ' करके उससे परे 'य' जोडकर नामधातु के सकर्मक रूप
ये जाते हैं ।

:— फातर — फातरा — फतराय
खीळो — खीळा — खीळाय

नामधातु अकर्मक भी होती है ।

:—

| संज्ञा | क्रिया | उदाहरण |
|---|---|---|
| धुंवर | धुंवरता | राकूड धुंवरता. |
| धुँआँ | धुँआँ निकलता है । | लकडी से धुँआँ निकलता है । |
| पालो | पालेता | रूकु पालेता. |
| पत्ता | पत्ता निकलता है । | पेड पल्लवित होता है । |

| | संज्ञा | क्रिया | उदाहरण |
|---|---|---|---|
| 3. | फूल | फूलेता | झाड फूलेता. |
| | फूल | फूलता है । | झाड पर फूल लगते हैं । |
| 4. | मूय | मूयेता | शींयान पायु मूयेता. |
| | चींटी | चींटी निकलती है । (ठिठुरता है) | ठंडी से पैर टिठुरता है । |

संज्ञाओं के अंतिम स्वर को 'ए' करके नामधातु के अकर्मक
बनाये जाते हैं ।

उदा :—

| संज्ञा | क्रिया |
|---|---|
| पालो | पालेता |
| फूल | फूलेता |
| मूय | मूयेता |

अनुकरणात्मक शब्दों से क्रियाओं के धातुरूप बनाये जाते
उनको अनुकरणधातु कहते हैं ।

कुछ अनुकरणात्मक शब्द और उनसे बनी हुई क्रियाओं के
नीचे दिये जाते हैं :—

| | शब्द | क्रिया | |
|---|---|---|---|
| | | अकर्मक | सकर्मक |
| 1. | खतखत | खतखतेता | खतखतायता |
| 2. | पचपच | पचपचेता | पचपचायता |
| 3. | चरचर | चरचरेता | चरचरायता |
| 4. | भरभर | भरभरेता | भरभरायता |
| 5. | भगभग | भगभगेता | भगभगायता |
| 6. | सणसण | सणसणेता | सणसणायता |
| 7. | कुटकुट | कुटकुटेता | कुटकुटायता |
| 8. | मुरमुर | मुरमुरेता | मुरमुरायता |

| शब्द | क्रिया | |
|---|---|---|
| | अकर्मक | सकर्मक |
| धुरधुर | धुरधुरेता | धुरधुरायता |
| सिरसिर | सिरसिरेता | सिरसिरायता |
| गुडगुड | गुडगुडेता | गुडगुडायता |
| खुरखुर | खुरखुरेता | खुरखुरायता |
| फडफड | फडफडेता | फडफडायता |
| चिनचिन | चिनचिनेता | चिनचिनायता |
| निडनिड | निडनिडेता | निडनिडायता |
| थड थड | थडथडेता | थडथडायता |

नामधातु के रूपों की तरह इनके भी अकर्मक व सकर्मक रूप बनाये हैं। ये धातुरूप सभी कालों में चलते हैं और नियमानुसार इसके हर के क्रिया रूप बनाये जा सकते हैं। निषेधार्थ रूप भी नियमानुसार हैं।

अ) हिन्दींत भासान्तर करा :–

1. उज्जो भगभगेता.
2. तो दीवो भगभायता.
3. दांत सणसणेतात.
4. शीला मुरमुरेताली.
5. विन्दूरु (उन्दीर) आयदन कुटकुटायता.
6. कवड कोण खटखटायतालें ?
7. पुलीस चोरांक थडथडायतात.
8. तो भयान थडथडेता.
9. पेज रानीर खतखतेता.
10. आयदनांत उदाक उण्डाळेता.

आ) कोंकणींत भासान्तर करा :–

1. सूजन के कारण दान्तों में दर्द होता है।
2. राम अपने दुश्मन को मुक्का मारता है।

3. हम उस लडके को सियार मानेंगे ।
4. लडकी कौए को पत्थर मारती है ।
5. सीता दरवाज़ा खटखटाती है ।
6. कुत्ता गुर्राता है ।
7. चोर पुलिस को देखकर थरथर कांप रहे हैं ।
8. कूडाकरकट से धुँआँ निकलता है ।
9. वसन्तकाल में झाडियों पर फूल खिलते हैं ।
10. जाडे के मौसम के बाद वृक्ष पल्लवित होते हैं ।

---

## पाठ 40

# संभाव्य भविष्यतकाल

| | | |
|---|---|---|
| 1. | हांव हें काम करुंवे ? | क्या, मैं यह काम करूँ ? |
| 2. | हांव भितर येवुंवे ? | क्या, मैं अन्दर आऊँ ? |
| 3. | आमी थांगा वचा. | हम वहाँ चलें । |
| 4. | आमी पुस्तक वाचया. | हम पुस्तक पढें । |
| 5. | तो हें काम करो. | वह यह काम करे । |
| 6. | तो खालाक पडो. | वह नीचे लेटे । |
| 7. | ते हांगा येवोत (येवोय). | वे यहाँ आयें । |
| 8. | ती पुस्तक वाचो. | वह पुस्तक पढे । |
| 9. | त्यो पुस्तक वाचोत (वाचोय). | वे पुस्तक पढें । |
| 10. | देवु बरें करो. | ईश्वर भला करे । (इच्छा,प्रा |
| 11. | ताणें हें काम करयेत. | वह यह काम करे । (अनुम |
| 12. | रामान पुस्तक वाचयेत. | राम पुस्तक पढे । ( ,, |
| 13. | तुमी हांगा येवयेत. | आप यहाँ आयें । ( ,, |

| | |
|---|---|
| आमी हें काम करूंया (करया). | हम यह काम करें। (स्वयं अपनी इच्छा से) |
| आमी कोंकणी शिकया. | हम कोंकणी सीखें। (स्वयं अपनी इच्छा से) |

अनुमति, प्रार्थना, इच्छा और आग्रह के भावों को प्रकट करने के संभाव्य भविष्यतकाल का प्रयोग होता है। धातु के साथ 'एत' जोडकर काल का अनुमति सूचक रूप बनाया जाता है। इस रूप में लिंग, और पुरुष का भेद नहीं रहता। कर्ता के साथ 'न' (एकवचन में) (बहुवचन में) का प्रयोग होता है।

:— हांवें करयेत* तुमी करयेत
आमी करयेत रामान करयेत
तुवें करयेत तांणी करयेत
तीणें करयेत जनानी करयेत

प्रार्थना, इच्छा या आग्रह प्रकट करने केलिये संभाव्य भविष्यतकाल क्रिया का निम्न-लिखित रूप प्रयुक्त होता है।

| एकवचन | | | बहुवचन | | |
|---|---|---|---|---|---|
| हांव | करूं<br>करुवे | मैं करूं | आमी | करूं<br>करूंया<br>करयावे | हम करें |
| (संस्कृत – करवै) | | | | | |
| तूं | कर<br>करि | तू कर<br>तुम करो | तुमी | करात<br>कराय<br>करा | आप करें |
| (संस्कृत – करुहि) | | | (संस्कृत – कुरुत) | | |

*सस्कृत के अनुज्ञायक (Optative) क्रियारूप से कोंकणी में यह क्रियारूप बना है। क्रियेत – करयेत
क्रिया का कर्मणिरूप होने के कारण कर्ता तृतीया विभक्ति में रहेगा।

| | एकवचन | | | बहुवचन | |
|---|---|---|---|---|---|
| अ. | तो<br>ती<br>तें | करो – वह करे | ते<br>त्यो<br>तीं | करोत<br>करोय | वे करें |

(संस्कृत – करोतु)

धातु के साथ चो–ची–चें; चे–च्यो–चीं—ये प्रत्यय जोडक
संभाव्य भविष्यतकाल रूप बनाया जाता है। क्रिया का यह रूप अधि
अनुमति, इच्छा या आग्रह प्रकट करने केलिये उपयुक्त होता है। स
क्रिया का यह रूप वाक्य में कर्म के लिंग, वचन, पुरुष के अनुसार बदल
और अकर्मक क्रिया का रूप सदा नपुंसकलिंग, एकवचन, अन्यपुरुष में
है। कर्ता के साथ एकवचन में 'न' और बहुवचन में 'नी' का प्र
होता है।

उदा :-

रामान हें फळ खावंचें — राम यह फल खाये। (इच्छा, अ
अनुमति

रामान आंबो खावंचो — राम आम खाये। ( ,,

तुवें आज थांगा वचें — तुम आज वहाँ जाओ। ( ,,

तांणी बांकार वैसचें — वे बेंच पर बैठें। ( ,,

धातु के साथ 'का' जोडकर भी क्रिया का यह रूप बनाया जात

उदा :- रामान फाय हांगा येवंका* — राम कल इधर आना।

अ) उपयुक्त क्रियाओं के संभाव्य भविष्यतकाल रूपों से खाली
की पूर्ति कीजिये :-

1. आज हांव तुगेल्या घराक — ?
2. तो हें पुस्तक — .
3. ती हे काम — .

---

*येवंक जाय > येवंकाय > येवंका

4. त्यो आज कोंकणी — .
5. देवु आमकां बरें — .
6. तांणी फाय मद्रासाक — .
7. हांव भितर — ?
8. आमी भजन — .
9. ते आज हिन्दी — .
10. बायलानी आज थांगा — ?

आ) कोंकणींत भासांतर करा :-

1. ईश्वर हमारा भला करे ।
2. क्या, हम अन्दर आयें ?
3. क्या, मैं यह काम करूँ ?
4. तुम सुखी रहो ।
5. मैं आपको यह किताब दूँ ?
6. शायद वे कल वहाँ जायें ।
7. वे अन्दर आकर बैठें ।
8. वह अब काफ़ी पिये ।
9. वे कोंकणी सीखें ।
10. राम मेरी चिट्ठी न पढे ।

---

पाठ 41

# संभाव्य वर्तमानकाळ

| | |
|---|---|
| राम कोंकणी शिकता जायत. | (शायद) राम कोंकणी सीखता हो । |
| लीला खेळता जायत. | लीला खेलती हो । |
| ते बरैतात जातीत. | वे लिखते हों । |

| | | |
|---|---|---|
| 4. | त्यो शरबत पितात जातीत. | वे शरबत पीती हों। |
| 5. | सीता गीत म्हणता जायत. | सीता गीत गाती हो। |

मुख्य क्रिया के वर्तमानकाल के रूपों के साथ 'जा' धातु के अनि
भविष्यतकाल के अन्यपुरुष के रूपों को जोडकर क्रिया के वर्तमानका
होने की संभावना प्रकट की जाती है। लिंग, वचन, पुरुष में कर्ता के
क्रिया अन्वित होती है।

मुख्य क्रिया के वर्तमानकाल के रूप के स्थान पर निश्चित भवि
काल रूप या अपूर्ण भूतकाल रूप का प्रयोग करके भी क्रिया का य
बनाया जाता है।

उदा :- राम हें काम करतलो जायत. – राम यह काम करता हो
शायद (मुमकिन है कि) राम यह काम क

राम हें काम करतालो जायत. – राम यह काम करता हो।
शायद (मुमकिन है कि) राम यह काम करता ह

अ) हिन्दींत भासान्तर करा :-

1. ते आज मद्रासा थाकून येतात जायत.
2. तो आतां जेवता जायत.
3. लीला तिगेलें पुस्तक वाचता जायत.
4. तागेलो भावु आतां खेळता जावना.
5. शाम आतां कूडांत मान्दूरेर थाकून उट्टायता जायत.

आ) कोंकणींत भासांतर करा :-

1. वह अब स्कूल से घर आता हो।
2. यह गाडी अब मद्रास जाती हो।
3. लडकियाँ अब मैदान में न खेलती हों।
4. राम और श्याम अब कोंकणी पुस्तकें पढते हों।
5. सीता अब अपनी पुत्री को एक पत्र लिखती हो।

पाठ 42

# संभाव्य भूतकाल

| | |
|---|---|
| राम काल थांगा गेलो (गेला, गेल्लो) जायत. | (शायद) राम कल वहाँ गया हो । |
| ती आतां घराक आयली (आयल्या,आयल्ल्या)जायत. | वह अब घर आयी हो । |
| लीलेन तें काम केलें (केलां, केल्लें) जायत. | लीला ने वह काम किया हो । |
| सीता शीत जेवली (जेवल्या, जेवल्ल्या) जायत. | सीता ने भात खाया हो । |
| चेरडूंवांनी कोंकणी शिकली (शिकल्या, शिकल्ल्या) जायत. | बालकों ने कोंकणी सीखी हो । |

मुख्य क्रिया के भूतकाल, आसन्न भूतकाल या पूर्ण भूतकाल के रूपों ाथ 'जा' धातु के अनिश्चित भविष्यतकाल के अन्य पुरुष के रूप जोडकर णी में क्रिया के भूतकाल की संभावना सूचित की जाती है ।

अ) हिन्दींत भासान्तर करा :–

1. ते आतां स्कूळांत गेल्ले जावना.
2. ती आतां आफीसां थाकून आयली जायत.
3. तिगेल्या बापान आतंय अरपळे काम केल्लां जायत.
4. तुमी गान्धीजी पसावत आयकिल्लें जायत.
5. हीं कायरीं ताणें तुमचेकडेन सांगलीं जायत.

आ) कोंकणींत भासांतर करा :-

1. मेरा भाई कल बंबई से वापस आय हो ।
2. उसने यह काम अब तक न किया हो ।

3. लडकों ने अपना पाठ अच्छी तरह न पढा हो ।
4. डाकिया अब तक चिट्ठी न लाया हो ।
5. राम ने उससे यह बात कही हो ।

---

## पाठ 43

# संदिग्ध वर्तमानकाल

| | |
|---|---|
| 1. तूं भायर सर, तो आतां येता जातलो. | तुम रवाना हो जाओ, वह आता होगा । |
| 2. जेन्ना आमी थंय वतलीं तेन्ना तीं पुस्तकां वाचतात जातलीं. | जब हम वहाँ जायंगे, त पुस्तकें पढते होंगे । |
| 3. राम आतां कोंकणी शिकता जातलो. | राम अब कोंकणी सीखता ह |
| 4. तो धुवर वासयीं थाकून येता जातलो. | वह धुंआँ रसोईघर से नि होगा । |
| 5. सीता भयणीक बरप बरैता जातली. | सीता छोटी बहन को ि लिखती होगी । |
| 6. ही गाडी मद्रासाक वता जातली. | यह गाडी मद्रास जाती ह |
| 7. मोहन आतां मैदानांत खेळता जातलो. | मोहन अब मैदान में होगा । |
| 8. तो आज गीत म्हणता जातलो. | वह आज गीत गाती हो |

| | |
|---|---|
| आवय चेरडाक दूद दिता जातली. | माँ बच्चे को दूध पिलाती होगी । |
| मास्टर चेल्यांकरान वाचैता जातलो. | मास्टर लड़कों से पढवाता होगा । |

मुख्य क्रिया के वर्तमानकाल के रूपों के साथ 'जा' धातु के निश्चित ष्यनकाल के रूपों का प्रयोग करके क्रिया के वर्तमानकाल में संदेह या श्चय प्रकट किया जाता है ।

'जा' धातु के भविष्यनकाल के रूप के या मुख्य क्रिया के वर्तमान- के रूप के निषेधार्थ रूप इस काल की क्रिया के निषेधार्थ रूप है ।

:- तो खेळना जातलो.<br>तो खेळता जावना. } वह नहीं खेलता होगा ।

मुख्य क्रिया के अपूर्ण भूतकाल रूप या निश्चित भविष्यतकाल रूप ाथ 'जा' धातु के निश्चित भविष्यतकाल के रूपों का प्रयोग कर के भी णी में यह काल वनाया जाता है ।

:- राम हें काम करतालो जातलो. (अपूर्ण भूतकाल)<br>राम हें काम करतलो जातलो. (निश्चित भविष्यतकाल)

लिंग वचन और पुरुष में संपूर्ण क्रिया का रूप कर्ता के अनुसार लता है ।

अ) उपयुक्त क्रिया के संदिग्ध वर्तमानकाल रूपों से खाली जगहों की पूर्ति कीजिये :-

1. राम आतां — — .
2. आमी आतां — — .
3. शारद वीणा — — .
4. त्यो बायलो गींत — — .

5. गोविंदु कोंकणी — — .
6. ते मैदानांत — — .
7. ती तें काम — — .
8. तें न्हयंत — — .
9. मास्टर कदलार बैसून — — .
10. मडवळु वस्त्रां — — .

आ) कोंकणींत भासांतर करा :–

1. डाकिया आज खत लाता होगा ।
2. रेल गाडी कल देर से आती होगी ।
3. रसोइया घर में चपात्तियाँ बनाता होगा ।
4. लडके रोज आठ बजे पाठशाला जाते होंगे ।
5. नौकर बाज़ार से लौटता होगा ।
6. पिताजी दफ़्तर में काम करते होंगे ।
7. कमला कपडा सीती होगी ।
8. गोपाल अब अपना पाठ पढता होगा ।
9. आजकल मद्रास में पानी ज़ोर से बरसता होगा ।
10. यह गाय रोज़ कम से कम दो लिटर दूध देती होगी ।

---

## पाठ 44

# संदिग्ध भूतकाल

1. चेरडूंवांनी कोंकणी भास शिकली जातली. — बच्चों ने कोंकणी भाषा स[illegible] होगी ।
2. राम थांगा गेलो जातलो. — राम वहाँ गया होगा ।
3. नारायणान चीट बरयली जातली. — नारायण ने चिट्ठी [illegible] होगी ।

| | |
|---|---|
| ताणें हें काम केलें जातलें. | उसने यह काम किया होगा। |
| सूण्यान मांस खालें जातलें. | कुत्ते ने मांस खाया होगा। |
| चेलेन ताका हें कायरें सागलें जातलें. | लडकी ने यह बात उससे कही होगी। |
| ते आज व्हरडीकेक गेले जातले. | वे आज बारात में गये होंगे। |
| तो ह्याजे पासून विसरलो जातलो. | वह इसके बारे में भूल गया होगा। |
| तो आतां थांगा पावलो जातलो. | वह अब वहाँ पहुँच गया होगा। |
| मास्टरान चेरडूंवांक शिकेलें जातलें. | मास्टर ने बच्चों को सिखाया होगा। |

भूतकाल में संदेह या अनिश्चय प्रकट करने के लिये मुख्य क्रिया के
न्य भूतकाल के रूपों के साथ 'जा' धातु के निश्चित भविष्यतकाल के
का प्रयोग किया जाता है।

मुख्य क्रिया के या 'जा' धातु के क्रियारूप के निषेधार्थ रूप का
ा करके इस काल का निषेधार्थ रूप बनाया जाता है।

.– गेलोना जातलो. / गेलो जावना. } गया नहीं होगा।

मुख्य क्रिया के आसन्न भूतकाल रूप या पूर्ण भूतकाल रूप के साथ
धातु के निश्चित भविष्यतकाल के रूपों का प्रयोग करके भी कोंकणी में
काल बनाया जाता है।

:- रामान हें काम केलां जातलें. (आसन्नभूतकाल)

रामान हें काम केल्लें जातलें. (पूर्णभूतकाल)

अ) उपयुक्त क्रियाओं के संदिग्ध भूतकाल रूपों का प्रयोग करके खा
स्थानों की पूर्ति कीजिये :–

1. ताणें ही काणी — — .
2. रामान हें पुस्तक — — .
3. ते आतां चाय — — .
4. राम घरकडे — — .
5. तागेली भयण मद्रासा थाकून — — .
6. सीतेन हें काम — — .
7. तिणें एक चीट — — .
8. ते आतां तुमगेल्या घरकडे — — .
9. तांणी तांकां हीं कायरीं — — .
10. दामदर परीक्षा पास — — .

आ) कोंकणींत भासान्तर करा :–

1. मालिक ने नौकर को वेतन दिया होगा ।
2. वह आज पाठ सीखने लगा होगा ।
3. उन्होंने प्यासे को पानी न दिया होगा ।
4. गोविन्द यह पुस्तक कहाँ से लाया होगा ?
5. माँ ने चपात्ती बनायी होगी ।
6. सीताने अपने दोस्त को एक चिट्ठी लिखी होगी ।
7. उन्होंने दस मीठे आम खाये होंगे ।
8. लडकों ने अब तक कोंकणी सीखी होगी ।
9. अब तक एक बज गया होगा ।
10. कल वह देर से सोया होगा ।

# पाठ 45

## हेतुहेतुमद् भूतकाल

| | |
|---|---|
| तूं गेला जाल्यार हांवंय वतलों आसलों. | तुम जाती तो मैं भी जाता । |
| काल पावस नासलो जाल्यार हांव तुगेथंय एतलों आसलों. | कल पानी न बरसता तो मैं तुम्हारे यहाँ आता । |
| तागेली बायल हांगा आसली जाल्यार तो तुका चपाती खावयतलो आसलो. | उसकी पत्नी यहाँ होती तो वह तुम को चपाती खिलाता । |
| चोराक धरलो जाल्यार फारलेली वस्तु मेळतली आसली. | चोर को पकडते तो चोरी का माल मिल जाता । |
| तुमी आमकां व्हेल्ले जाल्यार आमी वतले आसले (आशिल्ले). | तुम हम को ले चलते तो हम जाते । |
| तो शिकलो जाल्यार परीक्षेक पास जातलो आसलो. | वह सीखता तो परीक्षा में पास होता । |
| तो जेवलो जाल्यार तिजे पोट भरतलें आसलें. | वह भोजन करती तो उसका पेट भरता । |
| तूं आज हांगा आयलोना जाल्यार हांव तुका देखुक थांगा येतलों आसलों. | तुम यहाँ आज न आते तो मैं तुम से मिलने वहाँ आता । |

| | | |
|---|---|---|
| 9. | तुवें सांगलें जाल्यार ताणें अशशी करचीना आसलें. | तुम कहते तो वह ऐसा करता। |
| 10. | राम जाणं जाल्यार हें काम करतलो आसलो. | राम जानता तो यह का करता। |

उपर्युक्त वाक्यों में मुख्य वाक्य की क्रिया हेतुहेतुमद् भूतकाल है। इस काल की क्रिया से यह जाना जाता है कि कार्य भूतकाल होनेवाला था, किन्तु न हो सका। मुख्य क्रिया के निश्चित भविष्यतका के साथ 'आस' धातु के भूतकाल रूप जोडकर कोंकणी में इस काल की क्रिय का रूप बनाया जाता है।

यहाँ उपवाक्य की क्रिया सामान्य भूतकाल रूप से 'जाल्यार' जोड कर बनायी गयी है।

भूतकालिक कृदन्त से 'ल्यार' जोडकर भी उपवाक्य की क्रिया क रूप बनाया जाता है।

उदा :-

तो { येता / येतलो / आयलो } जाल्यार } तो आयल्ल्यार (आयल+ल्यार

हांव खातां / हांव खातलों / हांवें खालें (खेलें) } जाल्यार } हांवें खाल्ल्यार (खेल्ल्यार)
(खाल+ल्यार)
(खेल +ल्यार)

अ) हेतुहेतुमद् भूतकाल रूप का प्रयोग करके वाक्यों को मिलाक लिखिये :–

1. तो काल हांगा आयलोना; हांव थांगा गेलोना.
2. तो शिकलोना; परीक्षेक पास जालोना.
3. काल पावस पळ्ळो (पडलो); हांव तागेल्या घराक आयलोना
4. नौकरान काम केलेंना; सायबाक कोप आयलो.

5. तो खूब जेवलो; तागेलें पोट भरलें.
6. तो धारार गेलोना; काळेजांत तडव (तोडोव) जावनु पावलो.
7. तो धावलो; वाटेर गरगडेवनु पळ्ळो.
8. तुवें ओकद खेलेंना; रोग गेलोना.
9. ते चोरां मागल्यान धावलेना; तांणी चोरांक धरलेना.
10. तूं काल आयलोना; हांव सिनेमा गेलोना.

आ) कोंकणींत भासान्तर करा :–

1. अगर वह आता, तो मैं खेलने जाता ।
2. अगर उसको भूख लगती तो वह खाना खाता ।
3. अगर आप माँगते तो मैं वह किताब ला देता ।
4. आप न आते तो वह यह काम न करता ।
5. अगर मैं उसको पहचानता तो उससे ज़रूर बातचीत करता ।
6. अगर आप पैसा देंगे तो मैं कल मद्रास जाऊँगा ।
7. वह आये तो मुझे बताना ।
8. पानी न बरस जाय तो मैं तुम्हारे घर आऊँगा ।
9. आप हमें खिलायेंगे तो हम खायेंगे ।
10. खेल समय पर शुरू हुआ होता, तो वे न चले जाते ।

---

## पाठ 46

# वाच्य

| | कर्तृवाच्य | कर्मवाच्य |
|---|---|---|
| 1. | चेले कोंकणी बरैतात. | चेल्यां निमित्तान (निमित्तीं) कोंकणी बरैलली (बरैलेली, बरैल्ली) जाता. |
| | लडके कोंकणी लिखते हैं । | लडकों से कोकणी लिखी जाती है । |

| | कर्तृवाच्य | कर्मवाच्य |
|---|---|---|
| 2. | ती पुस्तक वाचता. | तिजे निमित्तान (निमित्तीं) पुस्त वाचललें (वाचलेलें, वाचल्लें) जात |
| | वह पुस्तक पढती है । | उससे पुस्तक पढी जाती है । |
| 3. | राम शीत जेवतलो. | राम निमित्तान शीत जेवल (जेवलेलें, जेविल्लें) जातलें. |
| | राम भात खायेगा । | रामा से भात खाया जायगा । |
| 4. | श्याम चपात्यो हाडतलो. | श्यामा निमित्तान चपात्यो हाळ्ळेल्य जातल्यो. |
| | श्याम चपातियाँ लायेगा । | श्याम से चपात्तियाँ लायी जायेंगी |
| 5. | रामान रावणांक मारलो. | रामा निमित्तान रावण मारलल जालो. |
| | राम ने रावण को मारा । | राम से रावण मारा गया । |
| 6. | रावणान सीतेक चोरली. | रावणा निमित्तान सीता चोरलल जाली. |
| | रावण ने सीता को चुराया । | रावण से सीता चुरायी गयी । |
| 7. | चेरडान आवयक उल्लो दिल्ला. | चेरडा निमित्तान आवय उल्ल दिल्लेली जाल्या. |
| | वच्चे ने माँ को बुलाया है । | बच्चे से माँ बुलायी गयी है । |
| 8. | हांवें ताका एक पेन दिल्लेलें. | माजे (म्हाजे) निमित्तान ताका एव पेन दिल्लेलें जाल्लें. |
| | मैं ने उसको एक कलम दी थी । | मुझसे उसको एक कलम दी गयी थी । |
| 9. | सीता हिन्दी शिकताली. | सीते निमित्तान हिन्दी शिकल्ल जाताली. |
| | सीता हिन्दी सीखती थी । | सीता से हिन्दी सीखी जाती थी । |
| 10. | तो फूडे चाय पिताली. | ताजे निमित्तान फूडे चाय पिल्लेल जाताली. |
| | वह पहले चाय पीता था । | उससे पहले चाय पी जाती थी । |

ऊपर के वाक्यों में क्रिया के कर्तृवाच्य और कर्मवाच्य के लिये दाहरण दिये गये हैं ।

कोंकणी में कर्मवाच्य का प्रयोग बहुत कम होता है ।

कर्तृवाच्य की क्रिया के पूर्ण भूतकाल रूप के साथ 'जा' धातु के युक्त क्रिया रूप को जोडकर कोंकणी में कर्मवाच्य की क्रिया बनायी जाती । कर्मवाच्य में कर्म की प्रधानता होती है और संपूर्ण क्रिया के लिंग, वन और पुरुष कर्म के अनुसार होते हैं ।

दा :–

1. गाय तण खाता. — (गायेन) गाये निमित्तान तण खेलेलें जाता.

   गाय घास खाती है । गाय से घास खायी जाती है ।

2. गाय तण खातली. — (गायेन) गाये निमित्तान तण खेलेंलें जातलें.

   गाय घास खायेगी । गाय से घास खायी जायगी ।

3. गायन तण खालें (खेलें). — (गायेन) गाये निमित्तान तण खेलेंलें जालें.

   गाय ने घास खायी । गाय से घास खायी गयी ।

कर्मवाच्य में कर्तृवाच्य की क्रिया के कर्ता तृतीया विभक्ति में आता या कर्ता के साथ 'निमित्तान' (निमित्तीं) (से) जोड दिया जाता है ।

कोंकणी में भाववाच्य का प्रयोग नहीं है ।

अ) निम्न-लिखित वाक्यों की क्रियाओं का वाच्य बदल कर लिखिये :–

1. माजरान विन्दराक दिंशी मारलो.
2. ताणें भयणीक एक चीट बरेंली.
3. आमचे निमित्तीं हिन्दी शिकिल्ली जाली.
4. तें कवड कोणें दिल्लें ?
5. हांगा थाकून चोरांनी जायतें धन फारलें.

आ) कोंकणींत भासांतर करा :-

1. अब विद्यालयों में हिन्दी पढायी जाती है ।
2. यहाँ बहुत घर बनवाये जाते हैं ।
3. उससे यह चाय पी नही जाती ।
4. तुम्हारे लिये एक नयी घडी लायी जायगी ।
5. वे सभी पत्र मद्रास भेजे गये ।

---

## पाठ 47

# प्रयोग

| | | |
|---|---|---|
| 1. | राम वनां गेलो. | राम वन गया । |
| 2. | हांव काम करतां. | मैं काम करता हूँ । |
| 3. | तो पुस्तक हाडता. | वह पुस्तक लाता है । |
| 4. | सीता फाल्या थांगा वतली. | सीता कल वहाँ जायेगी । |
| 5. | श्याम होडान उलैलो. | श्याम ज़ोर से बोला । |

उपर्युक्त वाक्यों में क्रिया के लिंग, वचन और पुरुष कर्ता अनुसार होते हैं ।

निम्न-लिखित वाक्यों में क्रिया के लिंग, वचन और पुरुष कर्म अनुसार होते हैं ।

1. रामान बाणु मारलो. — राम ने बाण मारा ।
2. कम्मारान रूक कातरलो. — लकडहारे ने पेड काटा ।
3. रावणान सीतेक चोरली (फारली). — रावण ने सीता को चुराया ।
4. गोयन्दान बूक वाचलो. — गोविन्द ने पुस्तक पढी ।
5. ताणें चीट बरैली. — उसने चिट्ठी लिखी ।

निम्न-लिखित वाक्यों में क्रिया नपुंसकलिंग, एकवचन और अन्य-
ष में होती है ।

. तागेलें पीवनु जालें. — वह पी चुका ।
. आमचें खावनु जालें. — हम खा चुके ।
. ताणें वाचून आयकैलें. — उसने पढकर सुनाया ।
. शारदान नाचून दाखैलें. — शारदा ने नाचकर दिखाया ।

इस तरह हिन्दी के समान कोंकणी में भी क्रिया के प्रयोग के तीन
हैं । जब वाक्य में क्रिया के लिंग, वचन और पुरुष कर्ता के अनुसार
ते हैं उसे कर्तरि प्रयोग कहते हैं । जब वाक्य में क्रिया के लिंग,
न और पुरुष कर्म के अनुसार होते हैं तब उसे कर्मणि प्रयोग कहते
। जब वाक्य में क्रिया के लिंग, वचन और पुरुष कर्ता या कर्म के
ुसार नहीं होते, अर्थात् क्रिया सदा अन्यपुरुष, एकवचन तथा नपुंसकलिंग
रहती है, उसे भावे प्रयोग कहते हैं ।

अ) निम्न-लिखित वाक्यों की क्रियाओं का प्रयोग बताइये :–

1. नीलीन रोण्टी खाली (खेल्ली).
2. राम मद्रासाक गेला.
3. तागेलो पूत काल हांगा आयलो.
4. तांणी काणि आयकली.
5. गाय आमकां दूद दिता.
6. दामून श्यामूक एक चीट बरैली.
7. ती शेळ शीत जेवली.
8. रामान सान्तां थाकून चार आंबे हाळ्ळे (हाडले).
9. आमकां आज थांगा वचें आसा.
10. तागेलें शेकून जालें.

# पाठ 48

# उपसर्ग, प्रत्यय और समास

शब्द के पूर्व जो शब्द लगते हैं उन्हें उपसर्ग कहते हैं। ऐसे श
शब्द के अर्थ में या कुछ विशेषता प्रकट करते हैं, या अर्थ को बदल देते है
जैसे कोंकणी में 'मान' शब्द का अर्थ है 'आदर'। पर अगर उसके आदि
'अप' जोड दिया जाय तो 'अपमान' का अर्थ होगा 'अनादर', जो मूल शब्द
अर्थ से सर्वथा विपरीत है। इसी तरह 'रुचि' शब्द के आदि में 'अभि' ज
दिया जाय तो 'अभिरुचि' का अर्थ होगा 'अत्यन्त रुचि' जो मूल शब्द के अ
में विशेषता उत्पन्न करता है।

अब यहाँ कोंकणी में प्रयुक्त कुछ उपसर्ग और अर्थ उदाहरण
साथ दिये जाते हैं।

| संस्कृत—उपसर्ग | अर्थ | उदाहरण |
|---|---|---|
| अति | अधिक | अतिप्रीति, अतिप्रसंग |
| अप | बुरा | अपमान, अपशकून, अपशब्द |
| अभि | बुरा | अभिमान |
| उप | पास | उपयोग, उपकार |
| अव | नीचे, हीन | अवगुण, अवतार, अवज्ञा |
| उत् | श्रेष्ठ | उत्कर्ष, उत्तम, उत्तेजन |
| दुर | बुरा | दुर्गुण, दुर्जन, दुर्बळ, दुश्कर्म |
| निर | निषेध | निरपराधी, निरर्थक |
| परा | पीछे, उल्टा | पराभव, पराक्रम, पराजय |
| प्रति | विरुद्ध, सामने, हरएक | प्रतिकूल, प्रतिनिधि, प्रतिदिन |

| कोंकणी—उपसर्ग | | |
|---|---|---|
| अ, अन् | अभाव, निषेध | अजीर्ण, अनवाळो |
| अड, आड | विरुद्ध, बुरा | अडवाट, अटचण, आडावण<br>आडनां |

प्रत्यय शष्दों के अन्त में जोडे जाते हैं। कारक प्रत्यय, क्रिया
यय आदि कुछ प्रत्ययों का प्रयोग पिछले पाठों में हो चुका है। उनके
तिरिक्त दो प्रकार के प्रत्यय और हैं — कृत् प्रत्यय और तद्धित प्रत्यय।

धातुओं के अन्त में जिन प्रत्ययों के लगने से क्रिया को छोडकर
न्य शब्द बनते हैं, उनको कृत् प्रत्यय कहते हैं। वे शब्द जो कृत् प्रत्यय
ोडने से बनते हैं, कृदन्त कहलाते हैं।

से :— बरौपी — लेखक
रांदपी — रसोईदार

धातुओं को छोडकर शेष शब्दों के अन्त में जिन प्रत्ययों के लगने से
ब्द बनते हैं उनको तद्धित प्रत्यय कहते हैं और जो शब्द इस प्रकार बनते
उनको तद्धितान्त कहते हैं।

से :— दीग — दिगाई (लंबाई)
व्हड — व्हडकाय (बडाई)

अब यहाँ कोंकणी के कुछ कृदन्तों और तद्धितान्तों के उदाहरण दिये
ाते हैं।

## कृदन्त

I क्रियाधातु स्वयं भाववाचक संज्ञा बनती है।

दा :— मार - मार; लूट – लूट; धांव – दौड, प्रवाह; झूझ – झूझ

II धातु के आगे :

1) 'ओ' प्रत्यय लगने पर भाववाचक संज्ञा बनती है।

दा :— कातर — कातरो (काट)
भुरक — भुरको (नोच)
खतखत — खतखतो (खौलना)
कडकड — कडकडो (कंपन)
फडफड — फडफडो (झुंझलाहट)

2) 'आय' प्रत्यय लगने पर स्त्रीलिंग शब्द बनते हैं।

दा :— लड — लडाय (लडाई)
चड — चडाय (चढाई)

3) 'ई' या 'की' प्रत्यय लगकर स्त्रीलिंग शब्द बनते हैं ।

उदा :— चोर — चोरी (चोरी)
बुड — बुडकी (डुबकी)
उड — उडकी (उडान)

4) 'ऊन', 'न' लगकर पूर्वकालिक कृदन्त (क्रियाविशेषण) बनते हैं

उदा :— वच — वचून (जाकर)
खा — खावन (खाकर)
म्हण — म्हणून (कह कर)

5) 'को', 'गो' प्रत्य लगकर विशेषण बनते हैं ।

उदा :— पोस — पोसको (दत्तक)
रड — रडगो (रोता हुआ)

6) 'ण', 'णें', 'णी', 'पेली' प्रत्यय लगकर संज्ञा और विशेषण बनते हैं

उदा :— सिज — सिजवण (सीझाव)
न्हेस — न्हेसवण (पहनाव)
दवर — दवरणें (रखाव)
ढांक, ढांप — ढांकणें, ढांपणे (ढकना)
कर — करणी (करनी)
घरभरो — घरभरोणी (गृह प्रवेश)
रांद — रांदपी (बावर्चि)
वाज — वाजपी (बजैया)
मार — मारपी, मारपेली (मारनेवाला)

7) 'ल्लो', 'ल्ली', 'ल्लें' लगकर विशेषण बनते हैं ।

उदा :— बैस — बैसल्लो (बैठा हुआ)
तळ — तळ्ळें (तला हुआ)
जेव — जेविल्लें (भोजन किया हुआ)
वाच — वाचिल्ली (पढी हुई)

8) 'ती' प्रत्यय लगकर संज्ञाएँ बनती हैं ।

दा :— लळ — लळ्ती (लोट)
भर — भरती (ज्वार)
सुक — सुकती (भाटा)

9) 'उंक', 'चाक', 'पाक' प्रत्यय लगकर क्रिया का साधारण रूप बनता है ।

दा :— जेव – जेवुंक, जेवंचाक, जेवंपाक (भोजन करना)
खा – खावुंक, खावचाक, खावपाक (खाना)
कर – करुंक, करचाक, करपाक (करना)

## तद्धितान्त या तद्धित

1) संज्ञा से क्रिया :

दा :— मूय – मुयेवप (सुन्न हो जाना)
फूल – फुल्लेवप (फूलना)
भय – भिसरावप (डराना)
पल्लो – पल्लेवप (पल्लवित होना)

2) विशेषण से क्रिया :

दा :— खंवट – खंवटेवप (उबसना, बू निकलना)
आम्बस – आम्बसेवप (खट्टा होना)

3) सर्वनाम से क्रिया :

दा :— आपुण – आपणावप (अपनाना)

4) संज्ञा से भाववाचक संज्ञा :

दा :— मनीस – मनीसपण (मनुष्यत्व)
चेरडूं – चेरडूपण (बच्चपन)
दादलो – दादुलपण (पुरुषत्व)

5) संज्ञा से विशेषण :

उदा :— पिशें – पिश्शो, पिस्सो (पागल)
जीब – जीबटु (बातूनी)
घातक – घातकी (घातक)
बूरो – बुरसो (मैला)

6) संज्ञा से क्रिया विशेषण :

उदा :— मुख – मुखार (सामने)
वेग – वेगीं (जल्दी)

7) विशेषण से संज्ञा :

उदा :— गोड – गोडसाण (मिठास)
खार – खारसाण (खारापन, पेशाब की बू)
हून – हूनसाण (गरमी)
रूंद – रून्दाय (चौडाई)
दाट – दाटाय (घनापन)
थोर – थोराय (मोटापन)
म्हन्तारो – म्हन्तारपण (बूढापा)
अपरूब – अपुरबाय (लालन)
लघु – लघुतकाय (लघुता, हल्कापन)

## समास

दो या दो से अधिक शब्द मिलकर जब कोई स्वतन्त्र शब्द बनत है, तो इस मेल को समास कहते हैं। और उस स्वतन्त्र शब्द को सामासि शब्द कहते हैं।

उदा :— रूकासालि – रूकाची सालि. (वृक्ष की खाल)
'रूकासालि' सामासिक पद में 'ची' विभक्ति प्रत्यय का लोप हुआ है
आवसु–बापूसु – आवसु आनी बापूसु. (माँ और वाप)
इस सामासिक पद में 'आनी' शब्द का लोप हुआ।

## समास के चार भेद हैं :

1) अव्ययीभाव समास :

दा :- यथाशक्ति – शक्ति के अनुसार

पोट भर - पेट भर

2) तत्पुरुष समास :

दा :– सोडवाट - छूट मार्ग

पंचपक्वां – पांच पक्वान

घरजावंय - घर जमाई

आशादुश्पण – लालच

आळसोखडो - आलसी

कोडुत्रिष - विष के समान कडुवा

तीखुवुज्जो – अग्नि के समान तीक्ष्ण

दुदियाफळ - कद्‍दूफल

पेराकंकाडो – अमरूद की फली

कुवळ्यातोरो – खीरे की फली

रक्त बंभाळ - रक्त का बह निकलना

3) द्वंद्व समास :

आयदन-पैदन – बर्तन-भाण्डा

देखवळखि – जान-पपचान

कायरें-कर्तव्य – काम-काज

रूक-रूकावळ – पेड-पौधा

खांकि-शींकि - खांस-छींक

चांग बल्लाव – भाला-बुरा

ताळमूळ – जड-पत्ते

हाथपाय – हाथ-पैर

4) बहुव्रीहि : संस्कृत के सामासिक शब्द ही कोंकणी में भी प्रयुक्त हैं।

वेंकटाचलपति – तिरुप्पति के मंदिर की मूर्ति
(वेंकटाचल का अधिपति जो है वह)

पाठ 49

# मुहावरे

सुन्दर और संक्षिप्त वाक्यांश या उक्ति को मुहावरे कहते है
कोंकणी में मुहावरों को 'वाकप्रचार' कहते हैं। मुहमरे किसी के बनाये
नहीं, वे अपने आप स्वाभाविक रूप से बनते हैं। वे प्रत्येक भाषा की
निधि है जिस पर भाषा जीवित रहती है। मुहावरों के प्रयोग से भाषा
स्वाभाविकता और मार्मिकता आती है। मुहावरों से भाषा की व्यंजकश
बढती है। इसलिये भाषा पर अधिकार प्राप्त करने केलिये मुहावरों
अधिकार प्राप्त करना आवश्यक है।

1. दनपार जावंचाक ताका पोटां पिल्लां रडतात.
   दो पहर होने पर उसके पेट में चूहे दौडते हैं।
2. ताणें रामालें पेन फूंक मारलें.
   उसने राम की कलम चुराई।
3. चांग उपदेश कान दीवनु आयका.
   अच्छे उपदेश कान देकर सुनिये।
4. तूं पोन्दा कुळ्ळयान्त इत्याक हात घालता ?
   तुम क्यों गडे मुरदे उखाडते हो ?
5. स्वाम्याजें प्रवचन आयकून देवळान्त जायते जनां आयलें. ती
   उडकावंचाक स्थाय ना.
   स्वामीजी का प्रवचन सुनने के लिये मंदिर में बहुत लोग आये
   तिल धरने की भी जगह नहीं थी।
6. व्हारडीक जाली, आनी तोण्ड गोड करया.
   विवाह हुआ, अब मुँह मीठा करें।
7. ताका आर्पीसान्त धंद उबस आसा. सास सोडुक वेळ ना.
   उसको दफ़्तर में काम ज़्यादा है। दम मारने की भी फ़ुरसत नहीं

3. ते मागेले शत्रु जाल्यार कितें ? मागेली रोम सरि बावगौवंचाक जावना.
वे मेरे शत्रु बने तो क्या ? मेरा बाल भी बाँका न कर सकेंगे ।

ऊपर के वाक्यों में कोंकणी के कुछ मुहावरों का प्रयोग हुआ है। मानार्थक हिन्दी के मुहावरे भी दिये गये हैं।

कोंकणी के कुछ मुहावरे* नीचे दिये गये हैं और उनका अर्थ हिन्दी दिया गया है। जहाँ तक हो सके समानार्थक हिन्दी के मुहावरे देने का म कियां गया है।

| | |
|---|---|
| ाड्यां भितर बड्डो. | टाँग अडाना; दाल भात में मूसर चंद। |
| मति कळस्यार उदक रकवप. | व्यर्थ काम करना। |
| ोयरान्तलें माणिक. | गुदडी का लाल। |
| रटें काडप. | भीख मांगना। |
| रट्यां नांक बुडौन मरप. | चुल्लू भर पानी में डूब मरना। |
| ा जावप. | मर जाना। |
| ोबोर उब्बवप. | गुड गोबर कर देना। |
| ोंवटेर पेसकाति दवरप. | गरदन पर छुरी चलाना। |
| ोंवटो गेल्ललो माडो. | बेफ़ायदे की चीज़। |
| ाण्ट लागप. | पागल होना। |
| ाणि परमळ कळप. | अच्छे बुरे की पहचान। |
| ाणि घालप. | बदनाम करना। |
| ायां भीट भरप. | घाव पर नमक छिडकना। |
| चाकि काडून चोवप. | गौर से जांचना। |
| जीव दीवप. | जी जान से श्रम करना। |
| तुस्सु काण्डून हातांफोड. | व्यर्थ श्रम। |
| दोळ्यां पियां येवप. | ईर्ष्या होना, जलना। |
| दोळे धांपप. | आँखें मूँदना, मर जाना। |

*लेखक के अप्रकाशित 'कोंकणी मुहावरा कोष' से।

| | |
|---|---|
| दान्त किरडप. | नाराज़ होना, दान्त पीसना, द किट किटाना । |
| दोन मोंचवांर पाय दवरप. | दो नावों पर पैर रखना । |
| नाडि दवरप. | धोखा देना । |
| नांक दाखौन भोंवप. | नाक रखना, मान रखना । |
| नांका चुन्नो लावप. | नाक काटना, अपमानित करना । |
| नांकान बरो काडवप, नांक झरवप. | नाक रगडना, परेशन करना । |
| नांकूटां खावनु अवलक्षण. | ओच्छापन, ओस चाटे प्यास न बुझती । |
| पाकां दवरप. | गर्व से फूलना । |
| परण्या गेरश्शेक सेण काडप. | तत्काल उपचार । |
| पिन्नो तिनपंतरे वचप. | मूर्खतापूर्ण कार्य करना । |
| प्राण खावप. | जान खाना, सताना । |
| पोट व्हरनु कांटियेर घालप. | खाने के संबन्ध में निर्लज होना । |
| पोटा कट्टु घालप. | भूख सहना (मान रखने केलिये) |
| पोटार पाय हाडप. | जीविका नष्ट करना । |
| फोण्डां दवरप. | गाड देना । |
| फोण्डां घालप. | धोखा देना । |
| फोण्डां पाय दवरप. | कब्र में पैर लटकाये बैठना, मौ करीब आना । |
| बण्णा सूळ. | जान को खतरे में डालने वाला । |
| बायपे वचून बोड करप. | मूर्खता पूर्ण काम करना । |
| बोडार सितडो रकवप. | निकाल बाहर करना । |
| मांकडा हातां माळा. | बन्दर के हाथों में आइना; छंछूंद के सिर में चमेली का तेल । |
| मंगळां म्हणप. | समाप्त करना । |
| मडवळाली मोट. | कभी समाप्त न होनेवाले श्रम लगा रहना । |

| | |
|---|---|
| रणां घालप. | झगडा करना । |
| ातें पुण्ण करप. | सिर खपाना । |
| सां मारप. | झख मारना, हाथ पर हाथ धरे बैठना । |
| ोट मान्दप. | हारना, फ़ेल हो जाना । |
| ोड्यार बैसून वोडे खावप. | निर्लज्ज निन्द्य स्वार्थ । |
| ासल्या उंचार तेल रकवप. | जले पर नमक छिडकाना, जले फफोले फोडना । |
| ोणियान्तलो आगोळ, तळ्यान्तली ांत्रावळ. | निर्लिप्त रहना, पद्मपत्रमिवांभसा । |
| शक्यार दवरप. | ताक पर रखना । |
| ोण्डि हातां येवप. | चोटी हाथ में होना । |
| ारि मारि किन्नरि. | तहस नहस कर डालना । |
| ादीर घालप. | निराधार छोड देना । |
| ात पाय खोल्ले करप. | हाथ पाँव मारना । |
| ून उदका घोट. | सोने की हँसिया, न निगलते बनती, न उगलते । |
| ुम पुसून दुड्डू करप. | पसीना बहाकर पैसा कमाना, कठिन प्रयत्न करके धन कमाना । |

## पाठ 50

# कहावतें या लोकोक्तियाँ

जन साधारण द्वारा अपनी बात की पुष्टि के लिये जिस उक्ति का प्रयोग किया जाय, उसे लोकोक्ति कहते हैं। भाषा में सजीवता लाने केलिये मुहावरों के अतिरिक्त लोकोक्तियों का भी प्रयोग होता है। लोकोक्ति शब्द दो शब्दों के योग से बना है—लोक और उक्ति। लोकोक्तियों का निर्माण

जनता तो करती ही है, साहित्य में प्राप्त होनेवाली सूक्तियाँ भी जब बहुत अधिक प्रचलित हो जाती हैं, तब लोकोक्तियों का रूप धारण कर लेती हैं। हिन्दी में कबीर, सूर, तुलसी, प्रेमचन्द आदि की रचनाओं में प्राप्त अनेक सूक्तियाँ आज लोकोक्तियों के रूप में प्रचलित हैं।

लोकोक्ति कल्पना द्वारा नहीं बनायी जाती। इसके पीछे अनुभव का दृढ आधार है। लोकोक्ति का अर्थ अपने आप में स्पष्ट रहता है इसलिये मुहावरों की अपेक्षा उसे समझना पाठकों के लिये कहीं अधिक सरल होता है। लोकोक्ति वाक्यांश न होकर पूर्ण वाक्य होती है और उसमें जीवन का सत्य निहित रहता है। मुहावरों की तरह लोकोक्ति को एक वाक्य में प्रयुक्त करना प्रायः संभव नहीं हो पाता।

लोकोक्ति का आधार बोलचाल की भाषा है। उसके प्रयोग से भाषा में व्यावहारिकता अथवा सुबोधता का समावेश होता है। इसलिये लोकोक्तियों को सभी भाषाओं में महत्वपूर्ण निधि माना जाता है।

मुहावरों की तरह लोकोक्तियाँ भी अनन्त हैं। कोंकणी में लोकोक्तियाँ 'ओपारी', 'म्हण्णि', 'गादे' के नाम से जानी जाती हैं। यहाँ कोंकणी भाषा की कुछ लोकोक्तियाँ* हिन्दी की समानार्थक लोकोक्तियों के साथ दी गयी हैं।

| | |
|---|---|
| आवय चोयता पोट, बायल चोयता मोट. | माता का प्यार स्वार्थ रहित, पत्नी का प्यार स्वार्थ पूर्ण। |
| आवो नाकात नातूरां, पोणज्याक जाय कित्याक शेणतूरां ? | जब अपना ही आदमी उदासीन है तो पराये की बात ही क्या ? |
| आक उडत म्हण पाक उड्ल्यार ? | ऊँट ताँ कुद्दे पर बोरे भी कुद्दे। |
| आपे खावंका कि खाणां मोवंका ? | आम खाने से मतलब कि पेड गिनने से? |
| आसा जाल्यार गोकळाष्टमि, ना जाल्यार विनाचवति. | आयी तो रोज़ी, नहीं तो रोज़ा; आगयी तो ईदबरात, न आयी तो जुम्मेरात। |

*लेखक के 'कोंकणी कहावत संग्रह' की पाण्डु लिपि से।

| | |
|---|---|
| द्दार पडून (पणु) थू केल्यार हरद्यार. | आसमान का थूका मुह पर आता है। |
| चावेलें काडूयका, खाख्यांतले डूकय नज. | उडते को पकडना और बगल में रखे को छोडना भी नहीं। |
| र्म तकीत फल. | कर्म के अनुसार फल; जैसी करनी वैसी भरनी। |
| पला बरो, पुमल्यार वचना. | कर्मगति टाले न टले।; होनी होकर ही रहती है, टलती नहीं। |
| पलां नातिल्याक कोंकून घाल्यार ोंकून वता. | कर्महीन खेती करे, मरे बैल, या सूखा पडे। |
| ांटि केळीर पळ्ळ्यारीय केळि ांटियेर पळ्ळ्यारीय, नाश केळीक. | छुरी खरबूज़े पर गिरे, तो खरवूज़े का ज़रर; खरबूज़ा छुरी पर गिरे, तो खरबूज़े का ज़रर। |
| ोल्याक दराक्षि अबूंस. | सियार को अंगूर खट्टा। |
| ुरड्यांत काणसो राय. | अंधों में काना राजा। |
| ुरड्या हातां माणीक. | अंधे के हाथ में हीरा। |
| ुंकडा खेलेल्या मात्यार पाक. | चोर की दाडी में तिनका। |
| ब्रान्दार बैसून कान खाता. | गोद में बैठकर आँख में उँगली। |
| बालटाकडे उदक धावंता. | नीचे की ओर पानी बहता है। |
| गाडवा घासून घोडो करुक जावना. | गधा धोने से बछडा नहीं होता। |
| गोड आसले कडे मूय आसा, म्होव आसले कडे मूस आसा. | जहाँ गुड होगा, वहीं मक्खियाँ होंगी। |
| गोडा भरण्यांत हात घाल्यार लेवनातिल्लो कोण ? | संपर्क के असर से कौन बचा है? |
| गरुडाल गावांत नागर पंचमि. | चील के घोंसले में मांस। |
| घर पासि जोगी चड. | एक अनार, सौ बीमार। |
| घरच्या मोगरेक परमळ ना. | घर की मुरगी साग(दाल) बराबर।; घर के जोगी जोगडा, बाहर के जोगी सिद्ध। |
| घरा सर जालेलें व्हर (व्होर). | जस दुल्हा, तस बनी बराता। |

| | |
|---|---|
| घरां भीक, मिशियां तूप. | छानी पर फूस नहीं, डयोढी पर नाच ।; ऊँची दूकान फ़ीकी पकवान । |
| चानियेक रुकार चडूक शिकौकां नाका. | मछली के बच्चे को तैरना कौन सिखावे ? |
| चेडी म्हन्तार जावंचाक पतिव्रता जाली. | नौ सौ चूहे खाय के, बिल्ली चली हज को ।; वृद्धा, वेश्या तपस्विनी । |
| चोरा ह्यातांत चावि. | चोट्टी कुतिया, जलेबियों की रखवाली । |
| ताकाक ना वाट धयांक चीट कश्शी ? | "चहिय अमिय, जग जुरइ न छाछी ।"; छाछ तो जुडती नही, परन्तु इच्छा अमृत के पानी की । |
| दाय आसतना हात लासका कित्याक? | चमचे के रहते हात क्यों जलावे ? |
| धर्मागायचे दान्त चोवप न. | दान की बछिया के दान्त नहीं देखे जाते । |
| धूर आसतना डंगर लान. | दूर के ढोल सुहावने । |
| नाच कळना जाल्यार आंगण वांकडे. | नाच न जाने आंगन टेढा । |
| निंबाचो रूक अमृतान शिंपल्यारीय गोड जायना. | नीम का वृक्ष अमृत से सींचे फिर भी कड्आ ही कड्आ । |
| नेणतल्याक भूत, जाणतल्याक सूत. | अज्ञानी को भूत, ज्ञानी को सूत । |
| पिकल्ली खोल्ती पडतासतना हरवी खोल्ली हासता. | पीला पत्ता झरता है; हरा पत्ता हँसता है । |
| पूतु मेल्यारीय सूनेन राण्ड जावंका. | अपनी नाक कटे तो कटे दूसरे का सगुन तो बिगडे । |
| फपळ जाल्यार व्हण्टींत दवरयेत, माढी जाल्यार ? | सुपारी का फल तो अण्टी में रहे, मगर पेड भया तो ? |
| बेट्टो आचारी गोयण्डो तासता (तासीता). | खाली बनिया क्या करे, इस खोटी का दान उस खोटी में धरे । |
| बैसून पाय नीट करका. | बैठकर पांव पसारा जाय । |

तकीत भात ·

त काण्डुक नाग्गू
र खावंचाक जग्गू.
ललो कळसो चाकुन्दुळेवना.
तां थाय आसल्यार
वां थाय आसा.
शी फाटण्यार पावसु.
ड्याकय माडियेकय
ाड्डु एक कर न्हयें.
जराक खेळ विन्दराक जीव.

ाजरा भाग्यान शिक्या पडु तुण्टलो.
ज्जे गेल्यार पेजेक मुट्टु.
ासल्या घरा ताळ्ळेल कळक्कल.
ान्नान्त पळ्ळ्यार काण्डणा पेट घेंवका.

हकल जालीना जाल्यारीय व्हळी
ालेली आसा.
हून उदकान्त पळ्ळेलें माजर शेळ
उदक दिखिल्यार भिता.
म्हण्टी आसा चेडो, सोद्दून भोवंता
वाडो.
व्हकल मरो, व्हरेत मरो, भटाल घडि
तट्टान्त पडो.
सटियेर बरेयलेलें कोण काडीत ?

सूण्याचें पोटान्त तूप रावना.

जैसा बीज वैसी फ़सल ।;
यथा वीजम तथा अंकुरं ।
करे कल्लू, भरे लल्लू ।

अधजल गगरी छलकत जाय ।

मन चंगा तो कठौती में गंगा ।
चिकने घडे पर पानी नहीं ठहरता ।
एक लकडी से सब न
हाँका जाय ।
चूहे की मौत बिल्ली का खेल ।;
चिडिया की मौत, गंवार की हँसी ।
बिल्ली के भागों छीकां टूटा ।
मान न मान मैं तेरा मेहमान ।
भागते भूत की लंगोटी ही सही ।
ओखली में सिर दिया तो मूसलों का
क्या डर ?
ब्याह न किया तो क्या, बरात तो
गये हैं ।
दूध का जला छाछ भी फूँक कर
पीता है ।
गोद में लडका, शहर में ढिंढोरा ।

कोई मरे कोई जिये,
सुसरा घोल बतासा पीवे ।।
किस्मत का लिखा (भाग्य की रेखा)
कोई न मेट सकता ।; होनी होके
ही रहती है, टलती नही ।
कुत्ते को घी हजम नहीं होता ।

सूण्याचें बाल नळियान्त घाल्यारीय वांकडे वरता (उरता).

कुत्ते की दुम बारह वर्ष नल में रख
तो भी टेढी की टेढी ।

सग्ग पाल्लक्यां बैसल्यार व्हावंचाक कोण ?

तू भी राणी, मैं भी राणी कौन भर
कुएँ का पानी ?

सैबाल माण्टवांत सुब्बाले येस.

खूंटे के बल बछडा कूदे ।

हस्तीचे दांत खावंचे वेगळे दाखौंचे वेगळे.

हाथी के दान्त खाने के और, दिखान
के और ।

हस्ती लकून वता, मुंबरा लेक करता.

अशर्फियाँ लुटे और कोयलों प
मुहर ।

हातां थाकून पळ्ळ्यार काडयेत, तोण्डां थाकून पळ्ळ्यार काडुक जावना.

तलवार का घाव भरता है,
बात का घाव नहीं भरता ।

हागेगेलो दुड्डु कूडो जाल्यार अंगडकाराक उलौंका कित्याक ?

अपना पैसा खोटा तो परखय्या का
क्या दोष ?

---

## पाठ 51

# पहेलियाँ

पहेली मनोरंजन की विधा है। पहेली ऐसी उक्ति हैं जिस में किसी वस्तु का लक्षण घुमा फिरा कर अथवा किसी भ्रामक रूप में दिया गया हो और उसी लक्षण के सहारे उसे बूझने अथवा उसका नाम बताने का प्रस्ताव होता हो। पहेली में मार्मिक ढंग से किसी वस्तु की एकाध प्रमुख विशेषताओं की ओर लाक्षणिक रूप से संकेत होता है। कोंकणी में पहेलियों को 'हुमाणां' या 'आळीं' कहते हैं।

पहेलियों के विषयों की एक मूल भूत विशेषता यह है कि ये या तो सर्वसाधारण है अथवा लोगों के दैनिक और पारिवारिक जीवन से संवद्ध है। आकाश, तारे, खेत इत्यादि विषयों पर प्राय: सभी भाषाओं में समान प्रकार

पहेलियां पायी जाती है। उसी प्रकार परिवार के जीवन से संबन्धित
ा, नारियल, खाद्यपदार्थ, रसोई से संबद्ध औज़ार, खेती से संबद्ध वस्तुएँ
ादि के संबन्ध में भी पहेलियां उपलब्ध हैं। उदाहरण के लिये कोंकणी
र हिन्दी में प्राप्त कुछ समानार्थक पहेलियाँ नीचे दी जाती हैं।

गारां पागर, पागरां शंखु
वां तीर्थ, तीर्थां निर्मल.

—नारलु

ता कोंबो वता कोंबो,
म्बया गोयण्डो शेळूच.

—मोन्चूत्र

रती आयल्यार जीव येता,
कती आयल्यार मरता.

—दीव्यावाति

ायाचान न्हेसुकय जायना,
डवळाचान उंबळुकय जायना.

—मळब

हरदें लासता, आंग कडता·

—जळची मेणावाति.

अत्थर पर पत्थर, पत्थर पर जंजाल।
मोर कहानी कोई न जाने,
जाने भइया लाल।

—नारियल

जल जल चलता बसता गाँव
बसती में न वाका थाँव
खुसरो ने दिया वाका नाम
बूझो अर्थ नहि छोडो गाँव। —नाव

एक नार ने अचरज किया
साँप मारि पिंजडे में दिया
जों जों साँप ताल को खाये
सूखे ताल साँप मर जाए।;

—दियाबत्ती

एक राजा की अनोखी रानी
नीचे से वह पीवे पानी।

—बत्ती चिराग

एक थाल मोतिन से भरा
सब के ऊपर औंधा धरा
चारों ओर थाल वह फिरै
मोती उससे एक न गिरै।

—आकाश

एक नारी के सर पर नार
पीकी लगन में खडी लाचार
सीस धुने और चले न जोर
रो रोकर वह करे हाय भोर।

—शमा (Candle stick)

इस प्रकरण का उद्देश्य केवल पाठकों को कोंकणी पहेलियों परिचित कराना मात्र होने के कारण उनकी समानार्थक हिन्दी पहेलियों व प्रस्तुत करने का प्रयत्न यहाँ नहीं किया जाता। अब यहाँ कोंकणी भाष की कुछ पहेलियाँ उसके बुझाव के साथ दी गयी हैं।

अडकळ्यांतल्या सूण्याक बाल मुखार.

—आडवि

आडायेन कातरल्यार चक्र,
दिगायेन कातरल्यार शंख.

—पिया

आर आराचें, पाक मोराचें,
जट्टा जोगणोची, फोडें नागाचे.

—आव

एक आम्माक जालेलीं
जालेलीं चेरडूवां
भस्म पुसून बैसल्यांत.

—कुवाळ

काळ्या परार धवें मूळ.

—हस्ती-सूळ

कवड दीवून म्हन्तारी कूदता.

—पेज खतखतेता

घूवंता म्हण दान्तें न्हय
काळो म्हण कायळो न्हय
कांटो आसा म्हण पंगीरो (पंगरो) न्हय.

—भंवरु

जग जग पुत्तळे,
रवे रवे दान्त,
हें हुमाण सांगल्यार,
काडेयन तुझे दान्त.

—धाळीब

तांबडी बायलेक
काळो तीळो. —गुंजी

दोन बांयांक एक संकवु. —नांक

देण्टु नातिल्लें वाडकूळें पान. —हापळु

नागराया बायलेन न्हेसवण
निसरायल्यार निंसरायल्यार निसरना. —केळि

पाडो पळ्ळा, हांजो चरता. —दुद्दीण

भूंय फुट्टून जोगी आयला
हातां सातें खाख्यां कमण्डळु. —पापाय

मेल्लोल दीवड बट्टी काळ्यार धावंता. —मंचूव

म्हन्तारेल्या अंगाक भरनु दळो. —अनवास

रुकार आसा, म्हण पक्षी न्हय,
तीन दळे आसात, म्हण म्हादेव न्हय,
उदक आसा, म्हण कळसो न्हय. —नारलु

वतासताना चौगूले
एतासताना एकलोच. —फडचाना तांबळ

व्हळ्ळें एक बाटळ, वरसाक एक फांतां घासप. —तळें

व्हळ्ळी एक हस्ती
वरसाक एक पसार (वेळे) खाण. —घर सीवंप

शेंभर ब्राह्मणांक एक जानूवें. —सारणी खुण्टो

सासु दळ्याचान न्हयंत
उडकी मारली. —बल्लें

सुक्के रुकाक ओल्लीं पानां. —माड्या पिड्डे

---

# अभ्यास

हिन्दींत भासान्तर करा :

I 1) हांगा यो. 2) बांकार बैस. 3) हें उदक पी. 4) तुम
थांगा रावा. 5) तुमी हें काम करनाकात. 6) घराक वच आन
तें पुस्तक हांगा हाड. 7) तुमी हें पुस्तक वाचा. 8) एक बर
बरया. 9) फाय परतून येया. 10) कोंकणी भास शिका.

II 1) राम हें काम करता. 2) आमी पुस्तक वाचतात. 3)
हांगा येनात. 4) सीता पेनान बरयता. 5) तुमी कि
सांगतात ? 6) ताणें कोंकणी शिकचीना. 7) तो फाल्या हांग
येतलो व्हय ? 8) हांव फाय थांगा वचन. 9) सीता हें पुस्त
वाचतली. 10) ते आज रात हांगा पांवतले.

III 1) सीता काल खंय आसली (आशिल्ली) ? 2) आमी घरक
नाशिल्ले. 3) राम काल मद्रासा थाकून पावलो. 4) तो पंयि
कोची गेल्ललो. 5) काल देकलोलो चेडो आज मेलो. 6) तुम
बरयतल्लें पेन कोणालें ? 7) तो म्हजे लागी कोंकणी शिकतालो
8) ती चेली खंय गेली ? 9) सीता हांगा बैसून एक बरप बरयताली
10) तीणें एक चीट बरयल्या.

IV 1) आमी फाय थांगा वतलीं. 2) तो तें काम करतलो. 3) त
चेरडूवां परां थांगा आसतलीं. 4) ते एक मासाक तांगेथंय रावतले
5) रामान फाय हांगा येवंचीना. 6) आमी थांगा वचून तांका
देकतले ? 7) तांणी कितें केलें ? 8) ते कितें करतले ?
9) देवान तांकां बरें केलें. 10) तांकां आज हांगा येवंचाक सांग

V 1) रामान आंबे खाले. 2) तो शीत जेवलो. 3) सीता उदक
पिल्ली. 4) ताणें हें पुस्तक माका दिलां. 5) तुवें ताका कित्याक
आपैला ? 6) रावणान सीतेक चोरली. 7) हांवें ताका एक
चीट बरयल्या. 8) तुवें मद्रास देकलांवे ? 9) सीता हांवे
सांगिल्लें आयकना. 10) तुमी तें पुस्तक खंय दवरल्यां ?

VI हीं तागेलीं सान कदेलां. 2) ते व्हड मनीश. 3) आज हून वारें मारता. 4) त्या दीग बायलेक तुमी वळकतातवे ? 5) तागेल्या भयणीलें नांव कितें ? 6) ती तागेल्या भावाली बायल. 7) हीं गोड फळां तुमी काडा. 8) तीं पाचवीं केळीं म्हारग न्हय. 9) तें घर व्हड न्हय, सान. 10) बापा पाशी बुधवंत पूत.

VII 1) ताका बीस मरान मोवंचाक जाता. 2) आमचान धारार चमकुक जायना. 3) फाय तांकां हांगा गींत म्हणुंक येवंचाक जातलेंवे ? 4) माका तुमगेथंय येवचांक जालेना. 5) आमगेलें हें काम करनु जालें. 6) तागेली कोंकणी शिकून जाली. 7) तागेलें बरप वरवनु जालें. 8) तुगेलें काम करनु जालेंवे ? 9) आमगेलें खाण खावनु जालें. 10) रामालें कागद दीवनु जालें.

VIII 1) आमी न्हावनु देवळांत वतात. 2) ते खाण खावनु निदेवंचाक गेले. 3) सांजे हात-पाय धुवनु 'राम-राम' म्हणा. 4) आमी सगटानीय हिन्दी शिकका. 5) आमी कोंकणी उलौंका. 6) तुमकां कितें जाय ? 7) आमकां कांय नाका. 8) तुमकां थांगा वचुंक जाय. 9) ताका हांगा येवुंक जाय. 10) तांणी हें पाठ शिकका.

IX 1) तो हांगा तुमकां देकुंक आयला. 2) हांव थांगा हिन्दी शिकुंक वतां. 3) ते कोंकणी वाचुंक आनी बरौंचाक शिकतात. 4) ते तुमगेले दोस्त म्हण आमकां कळना. 5) जेन्ना हांव घरकडे पावलों तेन्ना पावस पडुंक प्रारंभ जालो. 7) तुमी काल देकल्लो मनीश आज आमगेथंय आयलो. 8) ताणें पयरि बरयलेलें बरप आज माका मेळ्ळें. 9) तुमी वाचचो बूक चांगवे ? 10) आमी तुमगेथंय केन्ना येवंका ?

X 1) ताणें दंदेल्याकरान एक मेज करयलें. 2) आवस चेरडाक दूद पीवयता. 3) भयणि भावाक खेळयता. 4) अध्यापक आमकां हिन्दी शिकैता. 5) मास्टर शिष्याकरान आमकां कोंकणी शिकैवेता. 6) बापा पुताक आंगडींत पेटयता (धाडता). 7) राम तागेल्या पुताकरान पुस्तक हाडयता. 8) तो मडवळाकरान चोगो धुवैता

(धुवयता). 9) आवय चेड्याक म्हाणयता. 10) श्रीरा
हनमन्ताकरान सीतेक सोदैता.

XI "मनशांनू, आमकां तरेकतरेन वळवळावन आनी आमचे हाल-उपा
करून आमचो जीव घेतात तेन्ना आमी ज्यो हुयेली मारतात आनी
स्राप दितात ते तुमकां एकाद्रे आयकूंक येनासतले. आमगेली भा
तुमकां एकाद्री समजनासतली. परंत तितले खातीर, आमकां तों
ना; आमकां उलौंक येना; आमी मोने; अशें तुमी समजुं नाकात
तुमकां मनशांक तरी एकामेकांल्यो भासो खें समजतात ? बंगाल्यां
तेलंगी खें समजता ? कानड्यांक गुजराथी खें येता ? म्हणून तुम
एकामेकांक मोने म्हळ्यार जाता व्हय ? मागीर आमगेली भा
तुमकां समजना म्हणून तुमी आमकां मोने म्हळ्यार कशें जायत
ती तुमकां समजना हो तुमचोच अन्यांव. त्या खातीर तुमच्या
आमकां दुशण लांव नज. तुमी मनीश दिमानदीस पिशे–अबगं
जावंक लागल्यात. तुमगेले ते वेदांचे मुस्तींतले जाण्टेले कितले शाण
आनी शिटूक बुद्दिचे आसले तर ! ते आमगेली रुखांली भास भो
बरी जाण आसले."

(गोमन्तोपनिषत्, पैलें खंड, 'शणै गोंयबाब')

XII एक फावट एक मनीस एक साधू कडेन गेलो आनी ताणें ताक
विचाल्लें, 'मोक्षाखातीर कितें घर सोडचेंच (पडता) पट्टा ?' साधून
म्हळें, 'कोण सांगता ? जनकासारकेल्यांनी राजवाड्यांत रावन
(राबून) मोक्ष जोडलो. मागीर तुकाच घर सोडचेली कितें गरज ?
मागीर दुसरो एक मनीस आयलो आनी ताणें साधूक विचाल्लें,
महाराज, घर सोडल्याबगर मोक्षु मेळ्ळा हो ?' साधून म्हळें, 'कोण
म्हण्टा ? घरांत रावन सुखासुखी मोक्ष मेळटो जाल्यार ज्या शुकासार
केल्यांनी गृहत्याग केलो ते कितें पिशे आशिल्ले ?' फुडें हे दोगय
एकामेकांक मेळ्ळे आनी तांचें झगडें पेटलें. एक म्हण, साधून घर
सोडूंक सांगलां. दुसरो म्हण, घर सोडचेली गरज ना असें सांगलां.
दोगय साधूकडेन आयले. साधून म्हळें, दोनय गजाली बरोबर.
ज्याची जशी वृत्ति तसो ताजो मार्ग आनी ज्यागेलो जसो प्रश्न तशी

ताका जाय. घर सोडचेली गरजना, हेंय खरें आनी घर सोडचेली गरज आसा हेंय खरें.'

(गीता-प्रवचनां, विनोबा–अणवादपी–'बाकी बोरकार')

XIII इंगलीश ही संवसारांतली एक व्हड आनी गिरेस्त भास हांतूंत दुबावूच ना. आयज आमी अमेरिका, कनडा, इंग्लंड आनी कामनवेल्थांतल्या हेर देशांकडेन राजनितीक आनी व्यापारी संबंद दवरूंक पावल्यात ते तिचोच आधार घेतिल्यान. आमकां हे संबंद वाडोवपाचे आसात, घट करपाचे आसात. हेच भाशेक लागून आमी संवसाराक वळखूंक पावल्यात. संवसाराक आमचीय वळख हेच भाशेन करून दिल्या. तिका आमी जें संवसाराकडेन पळोवपाचें एक जनेल म्हळां तें, हे नदरेन, खरें.

पुणून आमी एक गजाल विसरूंक फावना; शाणो मनीस आपल्या घराक एकूच जनेल केन्ना दवरिना. तो एका परस अदीक कितलीं–शींच जनेलां फोडता, देखुनूच चोंय दिकांचे वारें ताच्या घरांत घोळूंक पावतात. अदीक जनेलांक लागुनूच तो चोंय वटेनचो संवसार पळोवंक पावता आनी स्वतंत्र रितीन संवसाराक वळखूंक पावता. आयज आमचें तशें जायना. आमी एकाच जनेलांतल्यान संवसाराक पळेतात जाल्ल्यान आमकां संवसाराचें एक अंगी रुपूच दिश्टी पडलां. जेन्ना आमी आमच्या घराक अदीक जनेला फोडटले तेन्नाच संवसाराचें पुराय रूप आमकां दिश्टी पडूंक पावतलें.

(भौ-भाशीक भारतांत भाशेचें समाजशास्त्र—'रवींद्रकेळेकर')

XIV भारत एक व्हड देश. उत्तरेक हिमालय पर्वत आसा. दक्षिणेक पैस गेल्यार थंय रामेश्वर आसा. ह्या लांबरूंद देसांत साबार राज्यां आसात. हांगा कोटयांनी लोक रावतात. तांचे धर्म वेगवेगळे. खूबशे हिन्दु, पुण हिन्दू मदीं साबार जाती. ते भायर हांगा मुसलमान आसात, किरिस्तांव आसात. शीख, पारसी, बौद्ध, जैनबी सगळया धर्माचे लोक आसात. आमच्या लोकाचे हे धर्म जाल्ल्यान ते आमच्या देसाचे धर्म जाले. ह्या सगळया धर्मांक मोगान एकठांय रावक जाय. जण एकलो आपआपलो धर्म पाळूं. पुण देसाच्या कामांत सगळे एक. देखून आमकां मोगान रावंक जाय. तशें रावप चड गरजेचें.

(आमचीभास—पांचवें पुस्तक)

**कोंकणीत भासान्तर करा :–**

I इधर आ। उधर जा। किताब लाओ। झूठ मत बोलो। ठंडा पानी पिओ। रोज़ सबेरे छे बजे उठिये। हम मद्रास में रहते हैं। मैं नौ बजे दफ़्तर जाती हूँ। लडके पाठशाला जा रहे हैं। वह दरवाज़ा खोल रहा है। सीता गीत गाती है। बालक पाठ पढ रहा है। वे दिन में काम करते हैं और रात को सोते हैं। वह देर से दफ़्तर आता है। तुम कहाँ जाते हो ?

II राम आज सिनेमा जायगा। गोपाल कल एक पत्र लिखेगा। तुम उसको क्यों मारोगे ? मैं कोंकणी सीखूंगा। आप कब घर जायेंगे ? आज पाँच बजे वहाँ एक सभा होगी। राम मद्रास से कल यहाँ पहुँचेगा। सीता यह खत नही लिखेगी। गान्धीजी आज की सभा में बोलेंगे। वह गरम दूध पीयेगी।

III तुम कल शाम को कहाँ थे ? मैं घर पर था। हम कल की सभा में बोले। वे कुरसी पर बैठे। मैं घर गया। वे उस घर में सोये। तुम अब क्यों आये हो ? वे वहाँ अब तक नहीं गये हैं। राम वहाँ क्यों खडा है ? घोडा तेज दौड़ा था। वह कल घर में नहीं आयी थी। वह आदमी चार बजे तक यहाँ नहीं पहुँचा है। राम का भाई कल शाम को यहाँ आया था। वह यह किताब ले गया था।

IV मैं ने पानी पिया। उसने खत लिखा। उन्होंने चोरों को पकडा है। नारायण ने दस आम खाये हैं। मेरी किताब किसने फाडी है ? लडकी ने रेडियो पर गीत गाया था। आपने क्या कहा था ? रामने तुम को बुलाया था। वह एक चिट्ठी लिख रहा था। लोगों ने बाघ को मार डाला था। वह मैदान में गेंद खेल रहा था। दरजी ने कपडे नहीं सिये थे। कल मैं ने उसको देखा था।

V गोपाल का छोटा भाई। राम की लंबी छडी। गाय का मीठा दूध। बच्चों की अच्छी किताबें। स्कूल की नयी कुरसियाँ। घर की छोटी लडकियाँ। पेड की खट्टी इमलियाँ। राम की काली कम्बल। राजू के बेटे का नाम गोपाल है। सीता की बहन का पति मद्रास में रहता है।

VI मेरा देश। हमारी माता। तुम्हारा बेटा। तेरा भाई। उसका बेटा। आप की टोपी। किसकी लडकी। तुम्हारे कमरे के बाहर कौन खडा है? यह किताब मेज़ से नीचे रखो। आप के बाद यहाँ कौन आयगा? घर के सामने एक पेड है। राम के साथ कौन बाज़ार जायगा? हम हमेशा आगे चलेंगे। तुम हमारे पीछे आओ। आप कोंकणी क्यों नहीं बोलते? चिडियाँ ऊपर उड रही है।

VII क्या, आप कोंकणी लिख-पढ सकते हैं? वह दस तक गिन सकता है। मैं कल उससे मिल सकूँगा। मैं वहाँ नहीं जा सका। हम तुम को खत नहीं लिख सके। राम रात को आठ बजे तक खाना खा चुकेगा। वह रोज सबेरे पाँच बजे के पहले हाथ-मुँह धो चुकता है। तुम यह पत्र कव लिख चुके? वह घर से निकल चुका है। मैं उस से कह चुकी हूँ।

VIII हम हाथ मुँह धोकर खाना खाते हैं। वे आकर मेरे कमरे में सो रहे हैं। आप पढकर क्या करेंगे? हम वहाँ जाकर उनसे मिलेंगे। वह गाडी से गिरकर मर गया। राम कोंकणी सीखने लगता है। वे यह किताब पढने लगेंगे। लडके वहाँ जाकर रोने लगे। हम कोंकणी में बोलने लगे हैं। चोर को देख कर कुत्ता भूँकने लगा।

IX हम सब को राष्ट्रभाषा हिन्दी सीखनी चाहिये। तुम को रोना नहीं चाहिये। आप को क्या चाहिये? हम को कल वहाँ जाना होगा। हमको खूब काम करना पडेगा। उनको अंग्रेज़ी सीखनी पडी। वह यहां भाषण देने आया है। मैं स्नान करने जाता हूँ। वह नदी में तैरने जाता है। क्या, तुमको हिन्दी वोलना मालूम है? मैं उसको अच्छी तरह जानता हूँ। मैं नहीं जानता कि वह एक चोर है। हम नहीं जानते कि वे आप के दोस्त हैं। राम ने कहाँ कि वह आज से कोंकणी में बोलने लगेगा। कहा जाता है कि वह एक चोर है।

X जब गाडी निकल चुकी, तव मैं स्टेषन पहुँचा। जब गान्धीजी मद्रास आये तब वे कहाँ रहे। जब मैं सीता के घर गया, तब वह बाहर

गयी थी। जब मैं घर पहुँचा तब पानी बरसने लगा। जो देख
नहीं सकता, उसे अंधा कहते हैं और जो सुन नहीं सकता उसे बहरा
कहते हैं। जिसने यह काम किया है, वह बडा बुद्धिमान होगा
जो अच्छी तरह नही सीखते वे परीक्षा में पास नहीं होते। जो कुत्ते
भूँकते हैं, वे नहीं काटते। जो विषय तुम नहीं जानते, उस प
मत बोलो।

XI यह चिट्ठी राम से टायप कराओ। तुम ने यह कोट किससे
सिलवाया? शाहजहाँ ने ताजमहल बनवाया। मैं ने उससे यह का
करवाया। हमारे कपडे किसी धोबी से धुलवाओ। छोटे बच्च
को रात को सुलाओ। हम आप को उससे इनाम दिलवायेंगे। ज
वह आयगा, तब उसे कुरसी पर बिठाना। वह अपनी चिट्ठिय
किससे लिखवाते हैं? माँ बच्चे को दूध पिलाती है।

XII एक बार गान्धीजी से जब किसी ने इस खिलौने के बारे में पूछा त
वे बोले—"ये तीनों बन्दर मेरे गुरु हैं।" साथ ही उन्होंने यह भ
बताया कि कोई चीनी लाया था, या जापानी—यह मुझे याद न
पडता है, पर जहाँ तक मुझे याद है कोई चीनी सेवाग्राम में महादेव
भाई को यह दे गया था। महादेव ने मुझे दिया। चीनी की पुरा
संस्कृति में आज भी अनेकानेक सुन्दर और उपयोगी वस्तुएँ जिन
है, उन्हीं में का यह एक नमूना है। यह साधारण खिलौना हमा
रोज़ाना ज़िन्दगी के लिये हमें बडी उपयोगी सीख देता है।

पहला बन्दर जिसने अपने हाथ से अपना मुँह-बन्द कर रखा है, ह
सीख दे रहा है कि हम किसी की बुराई के लिये मुँह न खोलें, क
असत्य बोलने में मुँह का उपयोग न करें।

दूसरा बन्दर हाथों से अपनी आँखें मूँद कर हमें सिखा रहा है
हम कभी किसी बुरी वस्तु को देखने के लिये आँखें न खोलें।

तीसरा बन्दर हाथों से अपने कान बन्द कर हमें बता रहा है
हम कभी किसी की बुराई न सुनें।

---



